Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(सूरः अह्ज़ाब : 57)

अनुवाद :निसंदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं, हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 27-28

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

07-14 ज़ुल्हज्जा 1443 हिज्री कमरी, 07-14 वफ़ा 1401 हिज्री शम्सी, 07-14 जुलाई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

विशेषांक सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना होकर इस बात की कुछ भी पर्वा नहीं की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सिर पर क्या-क्या विपत्ति आएगी तथा मुशरिकों के हाथ से क्या कुछ दुख और दर्द उठाना होगा। अपितु समस्त कठिनाइयों, कठोरताओं तथा विपत्तियों को अपने ऊपर लेकर अपने स्वामी (ख़ुदा) की आज्ञा का पालन किया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

वाक़ियात हज़रत खातमुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालने से यह बात अत्यंत स्पष्ट, प्रत्यक्ष और प्रकाशमान है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उच्चतम श्रेणी के एक वर्ण, निश्चल, ख़ुदा के लिए उत्साही और जान पर खेलने वाले प्रजा की उम्मीद और आशा से बिल्कुल विमुख तथा ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे, जिन्होंने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना होकर इस बात की कुछ भी पर्वा नहीं की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सिर पर क्या-क्या विपत्ति आएगी तथा मुशरिकों के हाथ से क्या कुछ दुख और दर्द उठाना होगा। अपितु समस्त कठिनाइयों, कठोरताओं तथा विपत्तियों को अपने ऊपर लेकर अपने स्वामी (ख़ुदा) की आज्ञा का पालन किया। तथा जो-जो शर्त तपस्या, उपदेश और नसीहत की होती है वे सब पूरी कीं और किसी डराने वाले को कुछ महत्त्व नहीं दिया। हम सच-सच कहते हैं कि समस्त नबियों की घटनाओं में ऐसे भयंकर स्थान और अवसर और फिर ख़ुदा पर ऐसा भरोसा करके शिर्क और सृष्टि पूजा से प्रत्यक्ष और स्पष्ट तौर पर मना करने वाला, इतना प्रकाशमान, और फिर कोई ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी एक भी सिद्ध नहीं अतः थोड़ा इमानदारी से विचार करना चाहिए कि ये समस्त परिस्थितियाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आन्तरिक सच्चाई को सिद्ध कर रही है। सिवाए इसके कि जब बुद्धिमान व्यक्ति इन परिस्थतियों पर और भी विचार करे कि वह युग कि जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवतरित हुए वास्तव में ऐसा युग था कि जिसकी वर्तमान स्थिति एक बुज़ुर्ग और अत्यंत महत्वपूर्ण खुदाई सुधारक और आकाशिय पथ प्रदर्शक की नितान्त मुहताज थी। तथा जो-जो शिक्षा दी गई वह भी वास्तव में सच्ची और ऐसी थी कि जिसकी अत्यन्त आवश्यकता थी। और उन समस्त मामलों की संग्रहीता थी कि जिससे युग की समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण होती थीं। और फिर उस शिक्षा ने प्रभाव भी ऐसा कर दिखाया कि लाखों हृदयों को सत्य और ईमानदारी की ओर खींच लाए और लाखों सीनों पर ला-इलाहा इल्ला इल्लल्लाह का निशान अंकित कर दिया और नुबुव्वत का मूल उद्देश्य होता है अर्थात् मुक्ति के सिद्धांतों की शिक्षा को ऐसे कमाल तक पहुंचाया जो किसी दूसरे नबी के हाथ से किसी युग में नहीं हुआ। इन घटनाओं पर नज़र डालने से सहसा यह साक्ष्य जोश के साथ निकलेगी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अवश्य ख़ुदा की ओर से सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं। जो व्यक्ति द्वेष और हठधर्मी से इंकारी हो उसका रोग तो असाध्य है चाहे वह ख़ुदा का भी इन्कारी हो जाए, अन्यथा ये समस्त सच्चाई के लक्षण जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पूर्ण तौर पर संग्रहीत हैं किसी अन्य नबी में कोई एक तो सिद्ध करके दिखलाए ताकि हमें भी ज्ञात हो।

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग-2, पृष्ठ 111 उर्दू, पृष्ठ 115-117 हिंदी)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर सीरतुन्नबी स.अ.व. विशेषांक

दुरूद शरीफ़ में हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का नाम दाख़िल करने की हिक्मत

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

मैं नहीं कह सकता कि इस का कारण क्या है परन्तु यह एक सच्चाई है कि मुझे बचपन से ही समस्त पिछले नबियों में अबुल अम्बिया हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के साथ सबसे ज़्यादा मुहब्बत रही है। परन्तु चूँकि (मैं आप पर कुर्बान हूँ) समस्त संसार के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत सब दूसरी मोहब्बतों पर ग़ालिब है और न केवल ग़ालिब है बल्कि उतनी ग़ालिब है कि किसी दूसरे नबी की मुहब्बत को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से कोई निसबत ही नहीं। इस लिए हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की ख़ास मुहब्बत के बावजूद मुझे बचपन से दुरूद का यह फ़िक़रा कि كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ (अर्थात् हे ख़ुदा तू आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इस तरह बरकतें नाज़िल कर जिस तरह तू ने हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल कीं) खटका करता था और मैं ख़्याल किया करता था कि बज़ाहिर इन शब्दों से हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की अफ़ज़लीयत साबित होती है क्योंकि इस दुआ में हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल का हवाला देना यही ज़ाहिर करता है कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम को कोई ऐसी ख़ास बरकत हासिल है जो अभी तक हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हासिल नहीं और इस ख़्याल की वजह से मैं अक्सर दुरूद पढ़ते हुए बेचैन हो जाया करता था कि ख़ुदाया यह क्या बात है कि हमारा नबी अफ़ज़लुल रसूल और सय्यद वुल्दे आदम है और फिर भी दुरूद में ये शब्द दाख़िल किए गए हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उसी तरह बरकतें नाज़िल हों जिस तरह हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुईं।

आख़िर मैं ने सोच कर तशरीह का यह रास्ता निकाला कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल देने में बरकतों के दर्जा की तरफ़ इशारा करना उद्देश्य नहीं बल्कि सिर्फ़ उनकी नौईयत की तरफ़ इशारा करना मक़सूद है। और चूँकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नसल की कसरत का ग़ैरमामूली इमतेयाज़ हासिल हुआ है और उनकी नसल को यह विशेषता भी हासिल हुई है कि इस में कसीर संख्या में नबी पैदा हुए, इस लिए मैं ख़्याल करता था कि शायद इसी वजह से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल वर्णन करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए दुरूद वाली दुआ की जाती है परन्तु फिर भी मेरा दिल पूरी तरह तसल्ली नहीं पाता था और दुरूद के इन शब्दों पर पहुंच कर कि كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ मुझे हमेशा एक अंदरूनी झटका लगा करता था और मेरी रूह एक किस्म की ठोकर महसूस करती थी। लेकिन साथ ही मेरा दिल इस यक़ीन से भी पुर था कि यह ख़ुदा की सिखाई हुई दुआ है और ज़रूर इस में कोई ख़ास हिक्मत मद्द-ए-नज़र होगी जो सम्भव है कई लोगों पर ज़ाहिर भी हो और इं शा अल्लाह मुझ पर भी किसी दिन ज़ाहिर हो जाएगी। आख़िर कुछ समय हुआ ख़ुदा ने मुझे भी इस की हिक्मत पर अवगत फ़र्मा दिया और अब मुझे ख़ुदा के फ़ज़ल से इस तशरीह पर जो मेरे ज़हन में आई है पूरी तसल्ली है। मेरा यह अर्थ कदापि नहीं कि दुरूद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम शामिल करने में केवल वही हिक्मत मद्द-ए-नज़र है जो मेरे ख़्याल में आई है। ख़ुदा बल्कि रसूल के कलाम में भी बड़ी वुसअत होती है और बसा-औक़ात एक ही वक़्त में कई-कई अर्थ दृष्टिगत होते हैं और सम्भव है कि जो तशरीह मेरे ज़हन में आई है, इस से भी बढ़ कर कोई और हिक्मत दुरूद में मख़फ़ी हो परन्तु अब कम से कम मुझे अपनी जगह यह तसल्ली ज़रूर है कि जो माने मेरे ख़्याल में आए हैं वह ख़ुदा के फ़ज़ल से न केवल दरुस्त हैं बल्कि मेरे ज़ौक़ के अनुसार सुंदर भी हैं। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب۔ मैं ये माने दोस्तों की इत्तिला के लिए निचे लिखता हूँ।

दोस्तों को यह तो इलम ही है और दरअसल यह बात इस्लामी तारीख़ की एक मशहूर और प्रसिद्ध घटना है जिसे मुस्लमानों का बच्चा-बच्चा जानता कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नसल से हैं जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़रीया अरब में आबाद हुई और यह कि काबा

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश	1
2	दुरूद शरीफ़ में हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का नाम दाख़िल करने की हिक्मत	2
3	क़ुरआन और हदीस	3
4	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के उपदेश	4
5	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 03 जून 2022 ई.	5
6	राष्ट्राध्यक्ष के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आचरण	11
7	माली क़ुर्बानी का महत्त्व जीवनी साहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में	15
8	सीरत सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम प्रथम दौर में से हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और अंतिम दौर में से कमरुल अम्बिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु	19

का निर्माण हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथों से ही हुआ था जिसका एक-एक पत्थर उन मुक़द्दस बाप बेटों की हज़ारों दाओं के साथ रखा गया और उन्होंने इस अवसर पर यह दुआ भी की कि उनकी नसल से हमेशा ख़ुदा के पाक बंदे पैदा होते रहें जिनकी तवज्जा ख़ुदा के दीन के लिए वक़्फ़ हो। इस अवसर पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने वे विशेष दुआ भी की जिसके नतीजा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद ज़हूर में आया। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ इस तारीख़ी दुआ को इन ज़ोरदार शब्द में वर्णन फ़रमाता है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

अर्थात् हे हमारे रब तू हमारी इस नसल में जो अब इस मुल्क में फैलेगी और तेरे इस मुक़द्दस घर के इर्द-गिर्द आबाद होगी, एक आलीशान रसूल इन्ही में से मबऊस फ़र्मा जो उन्हें तेरी मुबारक आयात पढ़ कर सुनाए और उन्हें तेरी किताब की तालीम दे और फिर इस किताब के अहकाम की हिक्मत भी सिखा दे और उन्हें अपने पाक नमूना की बरकत से एक तरक़्क़ी याफताह ज़िंदगी अता कर। निसंदेह तू बड़ी शान वाला और बड़ी हिक्मत वाला ख़ुदा है।

इस दुआ के शब्द बड़े भारी फ़ज़ायल पर आधारित हैं। परन्तु मुझे इस जगह इस दुआ की तफ़सीर और तशरीह में जाना मद्द-ए-नज़र नहीं बल्कि केवल यह बताना उद्देश्य है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने काबा के निर्माण के वक़्त मक्का वालों में एक ऐसे ख़ास नबी के आने की दुआ की थी जो अपने रुहानी और इलमी और तर्बीयती प्रोग्राम के साथ बेमिसल इमतियाज़ का मालिक बनने वाला था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हदीस में फ़रमाते हैं कि मेरा आना इसी दुआ का नतीजा है। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शब्द ये हैं।

اَنَا دَعْوَةُ اِبْرَاهِيْمَ

"अर्थात् मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का फल हूँ।"

अब गोया तीन बातें हमारे हाथ में हैं।

प्रथम यह कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नसल से हैं।

द्वितीय यह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा के निर्माण के वक़्त मक्का

शेष पृष्ठ 24 पर

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर रहमत भेजते हैं
हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब-ख़ूब सलाम भेजो

अल्लाह और फ़रिश्तों का आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजना
मोमेनीन को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजने का हुक्म

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अहज़ाब : 57)

अनुवाद : निसंदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत-ए-करीमा के बारे में फ़रमाते हैं :

"इस आयत से ज़ाहिर होता है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आमाल ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उन की तारीफ़ या विशेषताओं को सीमाबद्ध करने लिए कोई विशेष शब्द नहीं फ़रमाया। शब्द तो मिल सकते थे लेकिन ख़ुद इस्तिमाल नहीं किए अर्थात् आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आमाल-ए-सालेहा की तारीफ़, सीमाबद्ध करने से बाहर थी। इस किस्म की आयत किसी और नबी की शान में इस्तिमाल नहीं की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह में वे सच्चाई थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आमाल ख़ुदा की निगाह में इस क़दर पसंदीदा थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह हुक्म दिया कि आइन्दा लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर दरूद भेजें।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 32 मुद्रित 2018 क़ादियान)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त जहानों के लिए रहमत

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ○

(अम्बिया :108)

अनुवाद और हमने तुझे नहीं भेजा परन्तु समस्त जहानों के लिए रहमत के तौर पर

समस्त जहान के लिए नबी

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○

(सबह : 29)

अनुवाद : और हमने तुझे नहीं भेजा परन्तु समस्त लोगों के लिए बशीर और नज़ीर बनाकर परन्तु अक्सर लोग नहीं जानते।

पूरब और पश्चिम के एक रसूल

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ○

(नूर : 36)

अनुवाद : अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। इस के नूर की मिसाल एक ताक़ की सी है जिसमें एक चिराग़ हो। वे चिराग़ शीशे की मोमबत्ती में हो। वह शीशा ऐसा हो गोया कि चमकता हुआ रोशन सितारा है। वह (चिराग़) ज़ैतून के ऐसे मुबारक दरख़्त से रोशन किया गया हो जो न पूरब का हो और ना पश्चिम का। इस (दरख़्त) का तेल ऐसा है कि क़रीब है कि वह अज़ ख़ुद भड़क कर रोशन हो जाएगी ख़ाह उसे आग का शोला न भी छुवा हो। यह नूर अला नूर है। अल्लाह अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहता है हिदायत देता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें वर्णन करता है और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का दाइमी इलम

शेष पृष्ठ 23 पर

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोब वाले और सुंदर तेज वाले शक्ल-ओ-सूरत के थे
रंग खिलता हुआ सफ़ैद, माथा चौड़ा, चेहरा मुबारक यूं चमकता था मानों चौधवीं का चांद

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने अपने मामूं हिंद बिन अबी हाला से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुल्या पूछा। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुल्या वर्णन करने में बड़े माहिर थे और मैं चाहता था कि यह मेरे पास ऐसी बातें वर्णन करें जिन्हें में गाँठ बांध लूं। इसलिए हिंद ने बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोब वाले और सुंदर तेज वाले शक्ल-ओ-सूरत के थे। चेहरा मुबारक यूं चमकता था गोया चौधवीं का चांद। मध्य वर्गीय क़द अर्थात् छोटे कद से ज़्यादा और लम्बे कद से किसी क़दर छोटा। सिर बड़ा। बाल घुंघराले और घने जो कानों की लो तक पहुंचते थे। मांग नुमायां। रंग खिलता हुआ सफ़ैद। चौड़ा माथा। भवें लम्बी बारीक और भरे हुए जो आपस मिले हुए नहीं थे बल्कि मध्य में सफ़ैद सी जगह नज़र आती थी जो ग़ुस्सा के वक़्त नुमायां हो जाती थी नाक बारीक जिस पर नूर झलकता था जो सरसरी देखने वाले को उठी हुई नज़र आती थी। मूछ दाढ़ी मुबारक घनी। बाल नरम और हमवार। मुख चौड़ा। दाँत रेखदार और चमकीले। आँखों के भवें बारीक। गर्दन सुराही-दार चांदी की तरह शफ़्फ़ाफ़ जिस पर सुर्ख़ी झलकती थी। मनमोहक आचरण। बदन कुछ सेहतमंद लेकिन बहुत उचित। पेट और सीना बराबर। छाती चौड़ी और फ़राख़। जोड़ मज़बूत और भरे हुए। त्वचा चमकती हुई नाज़ुक और मुलायम। छाती और पेट बालों से बिल्कुल साफ़ सिवाए एक बारीक सी धारी के जो सीने से नाभि तक चली गई थी। कोहनियों तक दोनों हाथों और कंधों पर कुछ-कुछ बाल। पहुंचे लंबे। हथेलियाँ चौड़ी और गोश्त से भरी हुई। उंगलियां लंबी और सुडौल। पांव के तलवे काफ़ी भरे हुए। क़दम नरम और चिकने कि पानी भी उन पर से फिसल जाए। जब क़दम उठाते तो पूरी तरह उठाते। रफ़्तार बा-वक़ार लेकिन किसी क़दर तेज़ जैसे बुलंदी से उतर रहे हों। जब किसी की तरफ़ रुख फेरते तो पूरा रुख फेरते। नज़र हमेशा नीची रहती। यूं लगता जैसे फ़िज़ा की निसबत ज़मीन पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नज़र ज़्यादा पड़ती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अधिकतर थोड़ी सी आँख खोल कर देखते। अपने साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के पीछे-पीछे चलते और उनका ख़्याल रखते। प्रत्येक मिलने वाले को सलाम में पहल फ़रमाते। (शुमायल तिरमेज़ी, बाब फ़ी ख़लक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बहवाला हदीकतुस सालेहीन, हदीस नंबर : 22)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी ज़ात के लिए कभी गुस्से नहीं होते और न इसके लिए बदला लेते।

शुक्रगुज़ारी का रंग नुमायां था, न किसी की मज़म्मत और अपमान करते न तौहीन और कटाक्ष।

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो ही का वर्णन है कि मैंने अपने मामूं हिंद बिन अबी हाला से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात चीत के अंदाज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा यूं लगते जैसे किसी मुसलसल और गहरी सोच में हैं और किसी ख़्याल की वजह से कुछ बे आरामी सी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अधिकतर चुप रहते। व्यर्थ में बात नहीं करते। जब बात करते तो पूरी वज़ाहत से करते। आपकी बात चीत मुख़्तसर लेकिन फ़सीहओ- बलीग़ हिकमत से परिपूर्ण और संक्षिप्त विषय पर मुश्तमिल और ज़ायद बातों से ख़ाली होती। लेकिन इस में कोई कमी या संदेह नहीं होता था। न किसी की मज़म्मत और अपमान करते न तौहीन-

शेष पृष्ठ 23 पर

हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा सुधार का काम बहुत व्यापक और समस्त लोगों एवं समस्त सम्प्रदायों पर प्रमाणित है यह मर्तबा इस्लाह का किसी पहले के नबी को प्राप्त नहीं हुआ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

वह एक अल्लाह में लीन और उसी में खोए हुए की अंधेरी रातों की दुआएँ ही थीं, जिन्होंने दुनिया में शोर मचा दिया और वह आश्चर्य जनक कार्य किए जो उस निरक्षर (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) असहाय और साधनहीन व्यक्ति से असम्भव दिखाई देते थे

"वह जो अरब के मरूस्थलीय देश में एक आश्चर्य जनक घटना हुई कि लाखों मुर्दे थोड़े ही दिनों में जीवित हो गए और पीढ़ियों के बिगड़े ईलाही-रंग पकड़ गए तथा आँखों के अन्धे सुजाखे हो गए, मूकों की वाणी से ईश्वरीय तत्व-ज्ञान की चर्चा होने लगी और संसार में देखते ही देखते एक ऐसी क्रान्ति उत्पन्न हुई कि न पहले उससे किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी। कुछ जानते हो वह क्या था? वह एक अल्लाह में लीन और उसी में खोए हुए की अंधेरी रातों की दुआएँ ही थीं, जिन्होंने दुनि या में शोर मचा दि या और वह आश्चर्य जनक कार्य किए जो उस निरक्षर (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) असहाय और साधनहीन व्यक्ति से असम्भव दिखाई देते थे:-

اَللّٰھم صل وسلم وبارك علیه وآله بعدد همه وغمه وحزنه لهذه الامة وانزل علیه انوار رحمتك الی الابد۔

अर्थात् हे मेरे अल्लाह! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके समस्त अनुयायियों पर रहमत और सलामती और बरकत नाज़िल फ़र्मा जिस ने इस उम्मत मुस्लिमा (इस्लाम) के लिए कष्ट उठाए और यातनाएँ सहीं और आप पर अपनी रहमत की वर्षा सदैव बरसा। तथास्तु।"

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6, बरकातुद्दुआ, पृष्ठ 7)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बेनज़ीर सब्र-ओ-इस्तिक़लाल

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहिव सल्लम ने अपने ज़माने में खुद पहल करके कभी तलवार नहीं उठाई। बल्कि एक लम्बे समय तक काफ़िरों (अधर्मियों) के हाथ से दु:ख उठाया और इतना सब्र किया जो हर एक इन्सान का काम नहीं और इसी तरह आपके सहाबा भी इसी महान सिद्धान्त का अनुपालन करते रहे और जिस तरह उनको आदेश दिया गया था कि दु:ख उठाओ और सब्र करो उसी तरह उन्होंने निश्छलता और सब्र दिखाया। वे पैरों के नीचे कुचले गये परन्तु उन्होंने आह तक न की। उनके बच्चे उनके सामने टुकड़े-टुकड़े किए गये। वे आग और पानी के द्वारा अज़ाब (दण्ड) दिए गये, परन्तु वे दुष्टता और उपद्रव का सामना करने से ऐसे दूर रहे कि मानो वे दूध पीते बच्चे हैं। कौन साबित कर सकता है कि दुनिया में समस्त नबियों के अनुयायियों में से किसी एक ने भी प्रतिशोध की सामर्थ्य होने के बावजूद भी ख़ुदा का आदेश सुनकर इस तरह अपने आपको कमज़ोर समझ कर सामना करने से अलग कर लिया हो जैसा कि उन्होंने किया? किसके पास इस बात का प्रमाण है कि दुनिया में कोई दूसरा भी ऐसा गिरोह हुआ है जो बहादुरी, जत्था और बाहुबली और मुक़ाबले की ताक़त और हिम्मत एवं शूरवीरता की समस्त विशेषताओं के होने के बावजूद फिर भी ख़ूँख़्वार दुश्मन की ओर से यातना और हानि पहुँचाने पर तेरह वर्ष तक लगातार सब्र करता रहा? हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा का यह सब्र किसी मजबूरी से नहीं था, बल्कि उस सब्र के ज़माने में भी आपके जाँनिसार सहाबा के वही हाथ और बाज़ू थे जो जिहाद के आदेश के बाद उन्होंने दिखाए और कभी-कभी एक हज़ार जवानों ने मुक़ाबले में शत्रु के एक-एक लाख युद्धकुशल सिपाहियों को पराजित कर दिया और यह इसलिए हुआ कि लोगों को ज्ञात हो कि जो मक्का में दुश्मनों के रक्तपातों पर सब्र किया गया था उसका कारण कोई कायरता या कमज़ोरी नहीं थी, बल्कि ख़ुदा का आदेश सुनकर उन्होंने हथियार डाल दिए थे और बकरियों और भेड़ों की तरह ज़िबह होने को तैयार हो गये थे। नि:सन्देह ऐसा सब्र इन्सानी बर्दाश्त से बाहर है यद्यपि हम सारी दुनिया और सारे नबियों का इतिहास पढ़कर छान मारें तब भी हम किसी उम्मत में और किसी नबी के अनुयायियों में ये नैतिक शिष्टाचार और व्यवहार नहीं पाते और यदि पहलों में से किसी के सब्र का क़िस्सा भी हम सुनते हैं तो तुरन्त दिल में यह बात पैदा होती है कि अनुमान इस बात को सम्भव समझते हैं कि उस सब्र का कारण मूलत: बुज़दिली और प्रतिशोध की शक्ति का न पाया जाना हो। परन्तु यह बात कि एक गिरोह जो मूलत: सैन्य कुशलता अपने अन्दर रखता हो और शूरवीर एवं निडर हो और फिर वह सताया जाय और उसके बच्चे क़त्ल किए जाएँ और उसको बर्छियों से घायल किया जाय परन्तु फिर भी वह दुष्टता का सामना न करे, यह वह साहसपूर्ण विशेषता है जो व्यापक तौर पर तेरह वर्ष तक लगातार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा ने दिखलाई। इस प्रकार का सब्र, जिसमें हर समय सख़्त मुसीबतों का सामना था, जिसका सिलसिला तेरह वर्ष की लम्बी अवधि तक फैला हुआ था, वास्तव में बेमिसाल है। यदि किसी को इस में सन्देह हो तो हमें बतलावे कि पूर्व के सदाचारियों में इस प्रकार के सब्र की मिसाल कहाँ है?

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 17 गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद पृष्ठ 10-11)

प्रत्येक बुरी आस्था को खत्म कर दिया। शराब को जो हर एक बुराई की जड़ है दूर किया। जुआ खेलने की रस्म को खत्म किया। कन्या वध का अन्त किया

हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा सुधार का काम बहुत व्यापक और समस्त लोगों एवं समस्त सम्प्रदायों पर प्रमाणित है और सुधार का यह स्थान किसी पूर्व नबी को नहीं मिला। अगर कोई अरब का इतिहास पढ़कर देखे तो उसे ज्ञात होगा कि उस समय के मूर्तिपूजक और ईसाई और यहूदी कितनी ईर्ष्या रखते थे और किस तरह उनके सुधार की सैकडों वर्षों से नाउम्मीदी हो चुकी थी। फिर दृष्टि दौड़ा कर देखिए कि क़ुरआन की शिक्षा ने जो उनके बिल्कुल विपरीत थी कितने स्पष्ट प्रभाव दिखलाए और कैसे हर एक बुरी आस्था और हर एक व्यभिचार को खत्म कर दिया। शराब को जो हर एक बुराई की जड़ है दूर किया। जुआ खेलने की रस्म को खत्म किया। कन्या वध का अन्त किया और जो इन्सानी दया और न्याय और पवित्रता के विपरीत आदतें थीं उन सब को दूर किया। हाँ अपराधियों ने अपने अपराधों के दण्ड भी पाए जिनके पाने के वे पात्र थे। अत: सुधार का विषय ऐसा विषय नहीं है जिससे कोई इन्कार कर सके।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-9, नूरुल क़ुरआन न.-1, पृष्ठ-28 हाशिया)

श्रेष्ठतम एवं पवित्र और सारगर्भित (पुरहिकमत) शिक्षा देने वाले

"मुझे बतलाया गया है कि समस्त धर्मों में से इस्लाम धर्म ही सच्चा है मुझे फ़रमाया गया है कि समस्त हिदायतों में से केवल क़ुरआन-ए-करीम की हिदयात ही सेहत के कामिल स्थान पर और इंसानी मिलावटों से पवित्र हैं। मुझे समझाया गया है कि सब रसूलों में से कामिल तालीम (पूर्ण शिक्षा) देने वाले और श्रेष्ठतम एवं पवित्र और सारगर्भित (पुरहिकमत) शिक्षा देने वाले और सर्वोच्च मानवीय योग्यताओं का अपने जीवन में क्रियात्मक आदर्श उपस्थित करने वाले हमारे स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-17, अरबईन न.-1, पृष्ठ-345)

ख़ुत्बः जुमअः

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस मार्के में अत्यधिक सब्र-ओ-इस्तिक़ामत का ऐसा सबूत दिया

जिसकी मिसाल नहीं मिलती और बराबर दुश्मन की तरफ़ बढ़ते रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने दुश्मनों के ख़िलाफ़ फ़तह अता फ़रमाई और कुफ़्फ़ार पीठ फेर कर भाग गए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

जंग-ए-यमामा के हालात-ओ-वाक़ियात का तफ़सीली वर्णन

मुसैलमा कज़्ज़ाब के क़तल के वाक़िया का वर्णन

मुखालिफ़ हालात के कारण पाकिस्तान, अल-जज़ायर और अफ़ग़ानिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 03 जून 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्नण चल रहा था। इस विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहांत के फ़ौरी बाद मुनाफ़ेक़ीन से, मुख़ालेफ़ीन से जो लड़ाईयां हुईं उनका वर्णन हो रहा था और इस सिलसिले में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ जंग का वर्णन हुआ था। इस विषय में मुस्लमानों के मुख़्तलिफ़ गिरोहों के लीडरों की बहादुरी का वर्णन हो रहा है। जैसा कि वर्णन हुआ कि अंसार का झंडा हज़रत साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था और मुहाजेरीन का झंडा हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से कहा। लोगो! मज़बूती के साथ क़ायम हो जाओ, दुश्मन पर टूट पड़ो और आगे क़दम बढ़ाओ। फिर फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं उस वक़्त तक बात नहीं करूँगा यहां तक कि अल्लाह उन्हें शिकस्त दे देगा या मैं अल्लाह से जा मिलूँगा और दलील के साथ उस से बात करूँगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद हो गए।

(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 320 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के सौतेले भाई थे। क़दीमुल इस्लाम हैं। शुरू में इस्लाम लाने वालों में से हैं। बदर और इस के बाद के ग़ज़वात में शरीक रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिज्रत के बाद आप और माअन बिन अदी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाईचारा कराया था और दोनों ही यमामा की जंग में शहीद हो गए। जंग-ए-यमामा में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब लश्कर को तर्तीब दिया तो एक हिस्से का सिपहसालार हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया और इसी तरह इस जंग में मुहाजेरीन का पर्चम भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर्चम लिए आगे बढ़ते रहे और बड़ी बेजिगरी से लड़े यहां तक कि शहीद हो गए तो पर्चम गिर गया। सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पर्चम थाम लिया। इस युद्ध में ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसैलमा के साथी और एक बहादुर शहसवार जिसका नाम रज्जाल बिन अन्फूवः था, उस को क़तल किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को जिसने शहीद किया उसको अबू मर्यम हनफ़ी कहते हैं। इस के बाद वह मुस्लमान हो गया और एक मर्तबा जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे कहा कि तुमने मेरे भाई को क़तल किया था तो उसने कहा हे अमीरुल मोमेनीन अल्लाह तआला ने मेरे हाथों ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को शरफ़ बख़्शा और उनके हाथों मुझे ज़लील नहीं किया। अर्थात वह शहादत की मौत पा गए और अगर उस वक़्त उनके हाथों में मारा जाता तो अपमान की मौत मरता। अब मुझे इस्लाम की तौफ़ीक़ मिल गई है।

हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी जंग-ए-यमामा में शामिल हुए थे। वे जब वापस मदीना आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने इस शहीद होने वाले भाई के ग़म में उनको कहा कि जब तुम्हारे चचा ज़ैद शहीद हो गए तो तुम वापस क्यों आ गए और क्यों अपना चेहरा मुझसे छुपा न लिया? जब ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल की ख़बर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु दो नेकियों में मुझसे आगे निकल गया था। यह वर्णन पहले भी एक दफ़ा वर्णन हो चुका है कि मुझसे पहले इस्लाम क़बूल किया और मुझसे पहले शहीद हो गए। मालिक बिन नुवैरह को जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़तल कर दिया तो उसके भाई मुतम्मिम बिन नुवैरह ने अपने भाई मालिक के क़तल पर कविता कहीं। इस को अपने भाई से बहुत मुहब्बत थी और वे अक्सर उनकी जुदाई में रोता रहता और कविता कहता था। एक मर्तबा जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इस की मुलाक़ात हुई और उसने भाई का मर्सिया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को सुनाया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा कि अगर मैं कविता कहना जानता तो तुम्हारी तरह में भी अपने भाई ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए कविता कहता। इस पर मुतम्मिम ने अर्ज़ किया अगर मेरे भाई की मौत ऐसी होती जैसी मौत आप रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई की हुई है अर्थात शहादत की मौत तो मैं कभी भी अपने भाई पर ग़मगीं न होता। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जिस ख़ूबसूरत अंदाज़ में मेरे भाई की ताज़ियत तुमने की है और किसी ने नहीं की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब बाद-ए-सबा चलती है तो ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की याद ताज़ा हो जाती है।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत कारनामे पृष्ठ 362-363 अज़ अली मुहम्मद सलाबी फ़ुकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान) (तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 280 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.) (अल् इक्तेफ़ा पृष्ठ 111 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1420 हिज्री)

बहरहाल जंग का वर्णन हो रहा है। मुसैलमा कज़्ज़ाब अभी तक साबित-क़दम था और काफ़िरों की जंग का मर्कज़ बना हुआ था। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह तजज़िया किया कि जब तक मुसैलमा को क़तल न किया जाएगा जंग ख़त्म नहीं होगी क्योंकि अगर कोई बनू हनीफा से क़तल होता है तो उसका उन पर अर्थात मुसैलमा के साथियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु अकेले उनके सामने आए और एक-एक को इन्फेरादी जंग की आवाज़ लगाई और अपनी कविता का नारा लगाया। मुस्लमानों का गौरव हे मोहम्मदह्! था। अतः जो भी मुक़ाबले के लिए निकला हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको क़तल कर दिया। फिर मुस्लमानों ने बड़े जोश से जंग की। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु

ने मुसैलमा को मुक़ाबले के लिए आवाज़ दी। उसने क़बूल कर ली तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर इस की इच्छा के अनुसार चंद चीज़ें पेश कीं। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु उस पर हमला-आवर हुए तो वह भाग गया और इस के साथी भी भाग गए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को, मुस्लमानों को पुकार कर कहा ख़बरदार! अब कोताही नहीं करनी। आगे बढ़ो और किसी को बच कर जाने न दो। इस पर मुस्लमान उन पर चढ़ दौड़े।

(अल् कामिल फ़िल तारीख़ ले इब्ने असीर वर्णन मुसैलमा और अहले यमामा भाग 2 पृष्ठ 221 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस मार्के में अत्यधिक सब्र-ओ-इस्तिक़ामत का ऐसा सबूत दिया जिसकी मिसाल नहीं मिलती और बराबर दुश्मन की तरफ़ बढ़ते रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने दुश्मनों के ख़िलाफ़ फ़तह अता फ़रमाई और कुफ़्फ़ार पीठ फेर कर भाग खड़े हुए। मुस्लमानों ने उनका पीछा किया, उन्हें क़तल करते रहे और तलवारें उनकी गर्दनों पर चलाते रहे यहां तक कि उन्हें एक बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। बनू हनीफा के एक सरदार महकम बिन तुफ़ैल ने भागते हुए लोगों से कहा कि हे लोगो इस बाग़ में दाख़िल हो जाओ। यह बहुत वसीअ बाग़ था जिसके निकट दीवारें थीं। महकम बिन तुफ़ैल ने बनू हनीफा का पीछा करने वाले मुस्लमानों का मुक़ाबला करना शुरू कर दिया। यह बाग़ मैदान-ए-जंग के क़रीब ही था और मुसैलमा की मिल्कियत था। इस बाग़ को हदीकतुल रहमान कहा जाता था, जिस तरह मुसैलमा को रहमान अल् यमामा कहा जाता था लेकिन इस जंग के दौरान इस बाग़ में कसरत से दुश्मनों के मारे जाने की वजह से इस बाग़ को हदीकतुल मौत अर्थात मौत का बाग़ कहा जाने लगा। मुसैलमा कज़्ज़ाब भी अपने साथियों के साथ इस बाग़ में चला गया। हज़रत अबदुर्र रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि बनू हनीफा का एक सरदार प्रभावी भाषण दे रहा है। उन्होंने इस पर तीर चला कर उस को क़तल कर दिया। बनू हनीफा ने बाग़ का दरवाज़ा बंद कर दिया और सहाबा ने चारों तरफ़ से इस बाग़ का घेराव कर लिया। मुस्लमान कोई जगह तलाश करने लगे कि किसी तरह इस बाग़ के अंदर जाया जा सके लेकिन यह क़िला नुमा बाग़ था। बावजूद तलाश के इस के अंदर जाने की कोई जगह नहीं मिल सकी। आख़िर हज़रत ब्रा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु जो हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ज़व-ए-अहद और ख़ंदक़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिस्सा लिया था। बहुत बहादुर थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मुसलमानो! अब सिर्फ एक तरीक़ा है कि तुम मुझे उठा कर बाग़ में फेंक दो, में अंदर जा कर दरवाज़ा खोल दूँगा परन्तु मुस्लमान यह गवारा नहीं कर सकते थे कि इन का एक आली मर्तबा साथी हज़ारों दुश्मनों के दरमयान अपनी जान गंवा दे। उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया लेकिन हज़रत बरा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसरार करना शुरू किया और कहा मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ कि मुझे बाग़ में दीवार के अंदर की तरफ़ फेंक दो। आख़िर मजबूर हो कर मुस्लमानों ने उन्हें बाग़ की दीवार पर चढ़ा दिया। दीवार पर चढ़ कर जब हज़रत बरा बिन मालिक ने दुश्मन की बड़ी तादाद को देखा तो एक लम्हे के लिए रुके लेकिन फिर अल्लाह का नाम लेकर बाग़ के दरवाज़े के सामने कूद पड़े और दुश्मनों से लड़ते और क़तल करते दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने लगे। आख़िर कार आप दरवाज़े तक पहुंचने में कामयाब हो गए और बाग़ का दरवाज़ा खोल दिया। मुस्लमान बाहर दरवाज़ा खुलने ही के मुंतज़िर थे। जूंही दरवाज़ा खुला वे बाग़ में दाख़िल हो गए और दुश्मनों को क़तल करने लगे। बनू हनीफा मुस्लमानों के सामने से भागने लगे लेकिन वे बाग़ से बाहर नहीं निकल सकते थे। नतीजा यह हुआ कि हज़ारों आदमी मुस्लमानों के हाथों क़तल हो गए। एक रिवायत यह भी है कि सिर्फ हज़रत बरा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने नहीं बल्कि और भी कई मुस्लमानों ने दीवार फलाँग कर दरवाज़े का रुख किया था।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन पृष्ठ 200-201)(अल् बिदाया वन्नहाया भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 321 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(अल् बिदाया वन्नहाया भाग 7 पृष्ठ 256 दारुल हिज्र1998 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान भाग 2 पृष्ठ 268 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(ओसोदुल ग़ाबा भाग प्रथम पृष्ठ 363-364 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.)

मुस्लमान मुर्तद होने वालों से क़िताल करते हुए मुसैलमा कज़्ज़ाब तक पहुंच गए। वे एक दीवार के शिगाफ़ में खड़ा हुआ था जैसे ख़ाकसतरी रंग का ऊंट हो। वे बचाओ के लिए इस दीवार पर चढ़ना चाहता था और ग़ुस्सा से पागल हो चुका था। वहशी बिन हर्ब जिन्हों ने ग़ज़व-ए-अहद में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया था मुसैलमा की तरफ़ बढ़े और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना वही बरछा जिससे हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया था मुसैलमा की तरफ़ फेंका और वे उसे जा लगा और दूसरी तरफ़ से पार हो गया। फिर जल्दी से अबू दुज्जान सीमाक बिन खर्षा उस की तरफ़ बढ़े। इस पर तलवार चलाई और वे ज़मीन पर ढेर हो गया। क़िला से एक औरत ने आवाज़ दी। हाय हसीनों के अमीर को एक काले फ़ाम ग़ुलाम ने क़तल कर दिया।

(अल् बिदाया वन्हाया 3 भाग 6 प्रष्ठ 321दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(अल् सीर्तुन नबविय्या लेइब्ने हिशाम पृष्ठ 528 दारुल क़ुतुब इल्मिया : 2001 ई.)

मुसैलमा कज़्ज़ाब को किस ने जहन्नुम रसीद किया? बलाज़री का बयान है कि क़बीला बनू आमिर का कहना है कि उनके क़बीले के एक फ़र्द ख़िदाश बिन बशीर ने क़तल किया। एक रिवायत है कि अंसार के क़बीला ख़ज़रज के अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने क़तल किया। बाज़ ने कहा कि हज़रत अबू दुज्जना रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़तल किया। मुआवीया बिन अबूसुफ़ियान का कहना था कि उन्होंने उस को क़तल किया था। कुछ के नज़दीक हो सकता है कि सब उस के क़तल में शरीक हों। कुछ कुतुब में जिसमें तिब्री भी है इस से यह मालूम होता है कि मुसैलमा को एक अंसारी और वहशी ने मुशतर्का तौर पर क़तल किया था।

(अल् सिद्दीक,परोफ़ेसर अली मुहसिन सिद्दीक़ी, पृष्ठ 102-103)

वहशी बिन हरब को क़तल करने का वाक़िया ख़ुद वर्णन करते हुए कहते हैं कि ग़ज़व-ए-अहद में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद करने के बाद जब लोग लौटे तो मैं भी उनके साथ लौटा और मैं मक्का में ठहरा रहा यहां तक कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का फ़तह किया और इस में इस्लाम फैला तो मैं तायफ की तरफ़ भाग गया। लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ दूत भेजे और मुझसे कहा गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूत से झगड़ा नहीं करते। उन्होंने अर्थात उन्होंने कहा कि मैं भी उनके साथ निकला यहां तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मुझे देखा तो फ़रमाया क्या तुम वहशी हो? मैं ने कहा जी हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ और मुझे तफ़सील से बताओ कि तुमने हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को कैसे क़तल किया था। तो मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तफ़सील से आगाह किया। जब मैं ने बात ख़त्म की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हारे लिए मुम्किन है कि तुम मेरे सामने न आओ ? वह कहते हैं कि मैं वहां से निकल गया। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हुए और मुसैलमा कज़्ज़ाब ने बग़ावत की तो मैं ने कहा : मैं मुसैलमा की तरफ़ ज़रूर निकलूँगा ताकि मैं उसे क़तल करूँ ता कि इस के ज़रीया से हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल करने का कफ़्फ़ारा अदा कर सकूँ। बहरहाल यह कहते हैं कि मैं भी लोगों के साथ इस जंग में निकला। फिर उस का हाल हुआ जो हुआ। आगे वर्णन करते हैं कि मैं ने देखा कि एक शख़्स दीवार के

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

शिगाफ़ में खड़ा है ऐसा मालूम होता था कि जैसे गंदुमी रंग का ऊंट है। सिर के बाल परागंदा हैं। मैं ने उस को अपना बरछा मारा और उसे उसकी छातीयों के दरमयान मारा यहां तक कि वे उस के दोनों कंधों के दरमयान से निकल गया। बहरहाल यह बयान करते हैं कि इस के बाद अंसार में से एक शख़्स उस की तरफ़ लपका और उस की खोपड़ी पर तलवार की मार लगाई। रावी सुलेमान बिन यसअर ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना। वे कहते थे कि जब मुसैलमा मारा गया तो एक लड़की जो इस घर की छत पर थी बोली। अमीरुल मोमनीन अर्थात मुसैलमा को काले ग़ुलाम ने मार डाला है। यह बुख़ारी की रिवायत है।

वह कहते हैं कि अल्लाह बेहतर जानता है कि हम दोनों अर्थात अंसारी सहाबी और हज़रत वहशी में से किस ने मुसैलमा को क़तल किया लेकिन अगर मैं ने ही उसे मारा है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे बेहतरीन शख़्स अर्थात हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल का इर्तिकाब भी मैं ने किया था और सबसे बदतरीन शख़्स को भी मैं ने ही मारा।

(सरीतुन नब्विय्या लेइब्ने हिशाम पृष्ठ 528 تحریض ھندوالنسوۃ معھا، दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(सही अल् बुख़ारी किताब अलमग़ाज़ी बाब क़तल हमज़ बिन अब्दुल मुतलिब रिवायत नंबर : 4072)

सही बुख़ारी की रिवायत में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहशी को जो यह फ़रमाया था कि "क्या तुम्हारे लिए मुम्किन है कि तुम मेरे सामने न आओ?" इस की व्याख्या में हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि "वह जो तबदीली पैदा हुई वे उनके इख़लास पर दलालत करती है। उनकी ख़ाहिश थी कि वह किसी तरह अपनी ग़लती का कफ़्फ़ारा दें। इसलिए यमामा की भयावह जंग में अपनी यह ख़ाहिश और नज़र पूरी कर के सुर्ख़रु हुए।" शाह साहिब लिखते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्द فَهَلْ تَسْتَطِيعُ اَنْ تُغَيِّبَ وَجْهَكَ عَنِّيْ क्या तुम्हारे लिए मुम्किन है कि तुम मेरे सामने न आओ? "बहुत बुलंद अख़लाक़ के आईना दार हैं" ये अलफ़ाज़। "वह ख़ाहिश का इज़हार किया कि अगर तुझसे हो सके तो मेरे सामने न आया करो। यह व्यवहार बहादुरी वाला नहीं बल्कि विनम्रता निवेदन का व्यवहार है और इस से इस मुहब्बत इज़्ज़त का पता चलता है जो हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में थी। एक मुंतक़िम मिज़ाज इंतिक़ाम लेकर दिल ठंडा कर सकता था परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माफ़ी से काम लिया। सिर्फ इतना चाहा कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने न आए ता हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की दर्द-नाक शहादत की याद से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल को ठेस पहुंचे।"

(सही बुख़ारी अनुवादक ज़ैनुल आबेदीन साहब भाग 8 पृष्ठ 198-199)

इसी जंग यमामा की तफ़सील एक और जगह वर्णन हुई है जिसमें मुस्लमानों की तरफ़ से जुर्रत और दिलेरी का वर्णन इस तरह बयान हुआ है कि दोनों गिरोहों के मध्य शदीद लड़ाई हुई यहां तक कि दोनों गिरोहों के बहुत से लोग क़तल और ज़ख़मी हो गए। मुस्लमानों में से सबसे पहले मालिक बिन ओस शहीद हुए। मुस्लमानों में से हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन भी कसरत से शहीद हो गए। दोनों लश्करों में घमसान का युद्ध पड़ा यहां तक कि मुस्लमान मुसैलमा के लश्कर में और मुसैलमा का लश्कर मुस्लमानों के लश्कर से जा मिला। जब मुस्लमान हटते तो वे लोग आगे बढ़तेता कि मुज्जाआ तक पहुंच सकें। सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा ने अपनी आधी पिंडुलियों तक गढ़ा खोदा। उनके पास मुहाजेरीन का झंडा था और साबित ने भी इसी तरह का गढ़ा अपने लिए खोदा। फिर इन दोनों ने अपने झंडों को अपने साथ चिमटा लिया और लोग हर तरफ़ परागंदा हो गए थे। अर्थात गढ़ा खोद के इस में ख़ुद खड़े हो गए और झंडे अपने साथ लगा लिए जबकि सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु और साबित रज़ियल्लाहु अन्हु अपने झंडों के साथ क़ायम रहे यहां तक कि सालिम शहीद हो गए और अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद हो गए। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु के क़दमों में था और सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर हज़रत अबू हज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़दमों में था। जब सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए तो झंडा कुछ देर इसी तरह पड़ा रहा। किसी ने उसे उठाया नहीं। फिर यज़ीद बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो बदरी सहाबी थे वह आगे बढ़े और उन्होंने इस झंडे को उठा लिया यहां तक कि वह भी शहीद हो गए। फिर हुक्म बिन सईद बिन आस ने इस झंडे को उठाया और इस की हिफ़ाज़त में सारा दिन लड़ते रहे। फिर वे भी शहीद हो गए। वहशी कहते हैं कि शदीद लड़ाई हुई। तीन मर्तबा मुस्लमानों के क़दम उखड़े। चौथी मर्तबा मुस्लमानों ने पलट कर हमला किया और उनके क़दम जम गए और वे तलवारों के सामने डट गए। बनू हनीफा और उनकी तलवारें एक दूसरे पर पड़ने लगीं यहां तक कि मैं ने आग की चिंगारियां उनमें से निकलती हुई देखीं और उनकी घंटी की तरह की आवाज़ें सुनी। अल्लाह तआला ने हम पर अपनी मदद नाज़िल की और बनू हनीफा को अल्लाह तआला ने शिकस्त दी और अल्लाह ने मुसैलमा को क़तल कर दिया। वे कहते हैं कि मैंने उस रोज़ अपनी तलवार ख़ूब चलाई यहां तक कि वे तलवार मेरे हाथ में दस्ते तक ख़ून से भर गई। हज़रत इब्न-ए-उमर कहते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को एक चट्टान पर चढ़े हुए देखा, वह पुकार रहे थे कि हे मुस्लमानों के गिरोह! क्या तुम जन्नत से भाग रहे हो? मैं अम्मार बिन यासर हूँ मेरी तरफ़ आओ। रावी कहते हैं कि मैं देख रहा था कि उनका कान कट कर लटक रहा था। अबू ख़ैमसा नज्जारी कहते हैं जब मुस्लमान जंग-ए-यमामा के दिन परागंदा हो गए तो मैं एक तरफ़ हट गया और मेरी आँखों के सामने यह दृश्य है कि मैं इस दिन हज़रत अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु को देख रहा था। उनका नाम सिमाक बिन ख़रशा था और अबू दुजाना की कुनिय्यत से प्रसिद्ध थे। यह वह मशहूर सहाबी हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ समस्त ग़ज़वात में शरीक हुए और ग़ज़व-ए-अहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तलवार हाथ में लेकर कहा इस का हक़ कौन अदा करता है? अबू दुज्जाना बोले मैं अदा करूँगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको वह तलवार इनायत फ़रमाई और कुछ रिवायतों में है कि उन्होंने दरयाफ़्त किया कि इस का हक़ किया है? फ़रमाया यह कि मुस्लमान को नहीं मारना और काफ़िर से न भागना। हज़रत अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने हसब-ए-मामूल सिर पर सुर्ख़ पट्टी बाँधी और फ़ख़्रिया अंदाज़ से अकड़ते हुए सफ़ों के दरमयान आकर खड़े हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह चाल जबकि ख़ुदा को नापसंद है लेकिन ऐसे अवसरों पर कुछ हर्ज नहीं। मार्क कार-ज़ार में निहायत बहादुरी से मुक़ाबला किया और बहुत से काफ़िर क़तल किए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में बहुत से ज़ख़म खाए लेकिन मैदान से नहीं हटे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने की यह पिछली घटना वर्णन हो रही है। बहरहाल जंग-ए-यमामा के वाक़िया में वर्णन है कि इस में अबू दुज्जाना पर बनू हनीफा के एक गिरोह ने हमला किया। अब यमामा में क्या हुआ। उनके बारे में लिखा है उन पर एक गिरोह ने हमला किया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपने सामने भी तलवार चलाते, अपने दाएं भी तलवार चलते और अपने बाएं भी तलवार चलाते। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स पर हमला किया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कोई बात नहीं कर रहे थे यहां तक कि वे गिरोह आपसे दूर हो गया और वापस चला गया और मुस्लमान क़रीब आ गए। बनू हनीफा शिकस्त खा कर बाग़ की तरफ़ भागे। मुस्लमान उनके पीछे भागे और उन्हें बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। इन लोगों ने बाग़ के दरवाज़े बंद कर लिए तो हज़रत अबू दुज्जाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मुझे ढाल में डाल कर फेंक दो ताकि मैं अंदर जा कर बाग़ का दरवाज़ा खोल सकूँ। इसलिए मुस्लमानों ने ऐसा ही किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु बाग़ में पहुंच गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कह रहे थे तुम्हारा भागना तुम्हें हमसे बचा नहीं सकता। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके साथ सख़्त जंग की यहां तक कि दरवाज़ा खोल दिया। रावी कहते हैं कि हम आपके पास बाग़ में उस वक़्त दाख़िल हुए जब आप शहीद हो चुके थे। एक और रिवायत के मुताबिक़ बरा बिन मालिक को बाग़ में फेंका गया था लेकिन पहली रिवायत जो बरा बिन मालिक वाली है वह ज़्यादा दरुस्त मालूम होती है।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2, पृष्ठ 121 से 126 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1420) (सही मुस्लिम किताब फ़ज़ायल सहाबा बाब मिन फ़ज़ायल अबी दुज्जना हदीस 6353)(कंज़ुल उम्माल भाग 4, पृष्ठ 339 हदीस 10792 मोअस्सा अल् रिसाल बेरूत 1985 ई.)

इसकी तफ़सील भी है। बहरहाल बाक़ी इंशा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

इस वक़्त में पाकिस्तान के लिए दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ। अहमदियों के लिए खासतौर पर दुआ करें। पाकिस्तान के हालात उमूमी तौर पर जो बिगड़ रहे हैं वह तो हैं। ऐसे हालात में फिर अहमदियों की तरफ़ भी उनकी तवज्जा हो जाती है। मुख़ालेफ़त बढ़ रही है। पुरानी क़ब्रें उखेड़ने की तरफ़ से भी उन्होंने गुरेज़ नहीं किया। अत्यधिक बुरे किस्म के लोग हैं। अल्लाह तआला उनकी पकड़ करे। इसी तरह अल्-जज़ायर के अहमदियों के लिए भी दुआ करें वे भी आजकल मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। अफ़ग़ानिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला सब पर अपना फ़ज़ल नाज़िल फ़रमाए।

इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ और इसके बाद फिर उनकी नमाज़ जनाज़ा भी नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा। इस में पहला वर्णन श्रीमान नसीम महदी

साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला का है जो श्रीमान मौलाना अहमद ख़ान नसीम साहिब के बेटे थे। पिछले दिनों उनकी उनहत्तर वर्ष की उम्र में वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह मूसी भी थे। उनकी दो शादियां थीं। पहली बीवी वफ़ात पा गई थीं। पीछे रहने वालों में अब उनकी दूसरी पत्नी और दोनों पत्नियों से दो-दो बेटे और एक-एक बेटी शामिल हैं। यह 1976 ई. में जामिआ अहमदिया रब्वाह से फ़ारिग़ हुए थे। फिर इस्लाह-ओ-इरशाद मुक़ामी में उनको ख़िदमत का अवसर मिला। फिर 77 ई. में उनको बतौर मुबल्लिग़ स्विटज़रलैंड भिजवाया गया। वहां उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 84 ई. में उनको नायब वकील अल् तिबशीर् निर्धारित किया गया। कुछ माह यह बतौर क़ायम मुक़ाम वकील अल् तिबशीर् के तौर पर भी काम करते रहे। 1984 ई. में दिसंबर में यह यहां लंदन आए तो यहां पर प्राईवेट सैक्रेटरी लंदन के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर चंद महीने बाद यह 85 ई. में लंदन से ही कैनेडा रवाना हो गए। 85 ई. से 2008 ई. तक बतौर मुबल्लिग़ और इसके बाद मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इस अरसा में यह कैनेडा के अमीर भी रहे। 2009 ई. से 16 ई. तक मुबल्लिग़ इंचार्ज अमरीका ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर यह बीमार हो गए थे। उनका तक़र्रुर फिर दुबारा स्विटज़रलैंड में हुआ लेकिन उन्होंने लिखा कि डाक्टर ने मुझे सेहत की ख़राबी की वजह से कहा है कि मैं मज़ीद ज़्यादा बोझ वाला काम नहीं कर सकता तो उन्होंने ग़ैर निर्धारित मुद्दत की रुख़स्त ले ली। बहरहाल उनको फिर मैं ने लिखा था कि अगर ऐसी हालत है और डाक्टर कहता है तो अपनी सेहत का ख़्याल रखें। जब ठीक हो जाएं तो बता दें, इंशा-ए-अल्लाह तआला फिर आप से ख़िदमत ली जाएगी लेकिन बहरहाल बीमारी उनकी बढ़ती रही।

जैसा कि मैं ने कहा 1985 ई. में यह कैनेडा गए थे। 1986 ई. में मिशन हाऊस बैतुल इस्लाम के लिए 24 एकड़ ज़मीन ख़रीदी गई और इस को फिर वहां आबाद भी किया गया। उनके वक़्त में बहुत से अहमदी कैनेडा में आकर आबाद हुए और उन्होंने उन लोगों की बड़ी मदद की। बहुत से दूसरे लोग भी उनके ममनून-ए-एहसान हैं। चंदा और तजनीद के सिस्टम को उन्हों ने कंप्यूटराईज़ड करवाया। टोरांटो और कैलगरी में दो बड़ी मसाजिद की तामीर की गई और अन्य जमाअतों में भी सैंटर क़ायम किए गए। मेरा ख़्याल है शायद वेनकोवर की मस्जिद भी उनके ज़माने में बनी थी। बहरहाल ये दो बड़ी मसाजिद हैं। 2003 ई. में उनके वक़्त में ही अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जामिआ अहमदिया कैनेडा का क़ियाम हुआ। एम. टी. ए. नॉर्थ अमरीका स्टेशन के क़ायम करने में भी आपने बड़ा काम किया है। अल्लाह तआला उनके ये सब काम क़बूल फ़रमाए।

उनकी पत्नी अम्तुल नसीर साहिबा लिखती हैं कि नसीम महदी साहिब को अज़दवाजी ज़िंदगी के 26 वर्ष में जो मैं ने देखा कि हर दुख-दर्द में उनको अपना साथी पाया। बड़े प्यार करने वाले, इज़्ज़त करने वाले शौहर थे। शफ़ीक़ बाप थे। जांनिसार भाई थे। इन्सानियत का दर्द रखने वाले थे। ख़िलाफ़त के आज्ञाकारी और फ़रमांबर्दार थे। अल्लाह तआला पर मुकम्मल तवक्कुल रखने वाले थे। नेक इन्सान थे। उनकी पत्नी ने फिर मज़ीद यही वर्णन किया है कि लोगों की बड़ी बेलौस ख़िदमत करने वाले थे और दूसरों से मुहब्बत के साथ पेश आना और जमाअत के ख़िलाफ़ न कोई बात सुनते थे न किसी को करने देते थे और न उनके सामने करने की जुर्रत होती थी। और बहुत ज़्यादा मेहमान-नवाज़ी थी। दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरफ़ बहुत तवज्जा रहती थी। कहती हैं जब उमरे पर गए तो मैं ने पूछा कि क्या दुआएं कीं। तो उन्होंने कहा कि मैं ने तो वहां केवल दुरूद शरीफ़ पढ़ा है।

उनकी बेटी सादिया महदी कहती हैं कि मेरे पिता बहुत दुआ-गो शख़्सियत के मालिक थे। कहती हैं जब मैं कभी दुआ के लिए कहती तो मुझे कहते कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो। जब भी किसी मुआमले में दुआ के लिए कहा तो हमेशा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरफ़ तवज्जा दिलाई। मैं ने एक दिन उनसे पूछा कि आप हर बात पर यही कहते हैं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो तो कहते कि दुरूद शरीफ़ पढ़ो और समझाते कि सबसे बड़ी दुआ दुरूद शरीफ़ ही है। अगर यह क़बूल हो गई तो सब दुआएं पूरी हो जाएँगी।

फिर इस्मत शरीफ़ साहिबा हैं, कहती हैं कि महदी साहिब मेरे बहनोई थे। उनको बाईस साल बहुत क़रीब से देखा। बेहद शफ़ीक़, बेहद ख़्याल रखने वाले, बहुत मुहब्बत से पेश आने वाले। ख़लीफ़-ए-वक़्त से भी बे-इंतिहा अक़ीदत रखने वाले इन्सान थे। उनकी बहन कहती हैं कि जब आप स्विटज़रलैंड में मुरब्बी सिलसिला थे तो उस वक़्त एक स्विस लड़की जो अहमदी हो गई थी वह जलसा सालाना पर रब्वाह आई और रब्वाह में हमारे घर आई कि मैं ने नसीम महदी साहिब की माता से मिलना है और कहती हैं मेरी ख़ाहिश है कि में उस माँ से मिलूं जिसका बेटा इतना ज़हीन है, जिसने इतने थोड़े अरसा में इतनी भाषाओँ पर प्रतिभा हासिल कर ली और बग़ैर किसी झिझक के वह तब्लीग़ के कामों में मसरूफ़ है और बड़ी रवानी से हर विषय पर बात कर लेते हैं।

उनकी बहू कहती हैं कि हमेशा हमें दुरूद शरीफ़ की एहमीयत और इस के सहारे से दुआओं की क़बूलीयत की एहमीयत के बारे में बताते। उन्होंने एक दफ़ा बताया कि मैं एयरपोर्ट की लाईन में खड़ा हुआ और ख़्याल हुआ कि उनके पासपोर्ट की मुद्दत ख़त्म हो चुकी है तो फ़ौरन ही दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दिया और लाईन में इसी तरह लगे रहे। काउंटर में मौजूद शख़्स ने पासपोर्ट को देखा भी नहीं और इसी तरह आगे गुज़ार दिया।

उनके दामाद लिखते हैं कि जब से मेरी शादी हुई आप बहुत ही प्यार और शफ़क़त का सुलूक करते थे। अपने हाथ से चाय बना कर देते। फ़ज्र की नमाज़ के बाद मेरे साथ बैठ जाते और क़ुरआन-ए-करीम की कोई आयत या वाक़िया सुनाते। फिर उस की तफ़सीर पेश करते और यूं बड़े लतीफ़ अंदाज़ में हमारी तर्बीयत करते।

उनकी बेटी नवाल महदी कहती हैं कि मैंने हमेशा देखा कि आपको क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ बहुत तवज्जा और शौक़ था। क़ुरआन के बड़े सच्चे आशिक़ थे और हमें भी कहते थे कि ग़ौर से मुताला किया करो। इसके अर्थों और मुतालिब को समझने की कोशिश करो तो फिर तुम्हें अल्लाह तआला की क़ुदरत के नज़्ज़ारे नज़र आएँगे और क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने का आनंद भी मिलना शुरू हो जाएगा। कहती हैं बड़ी बाक़ायदगी से तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने वाले थे। क़ियाम और रूकू और सजदा तवील होता था। उनकी नमाज़ों में बड़ी रक्त और गुदाज़ होती थी। रमज़ानुल मुबारक में क़ुरआन-ए-करीम के दरस देने का एहतिमाम किया करते थे। बड़ी मेहनत से दरस तैयार करते थे। यह और लोगों ने भी लिखा है। क़ुरआन-ए-करीम के मुश्किल शब्दों के अर्थ और मुतालिब वर्णन करते थे और इस से मिलते-जुलते अलफ़ाज़ का वर्णन करते जिससे लोगों को आसानी से समझ आ जाती।

अमीर जमाअत कैनेडा लाल ख़ान साहब कहते हैं कि साबिक़ अमीर और मिशनरी इंचार्ज कैनेडा के साथ मैं ने 1987 ई. से ले कर एक लंबा अरसा काम किया है। अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े औसाफ़ से नवाज़ा था और वे जो विशेषताएँ थीं उनको जमाअत की ख़िदमत में उन्होंने इस्तिमाल किया। उन्हें दोस्त बनाने और दोस्ती निभाने और उन रवाबित को जमाअत के मुफ़ाद में इस्तिमाल करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई। कैनेडीयन सोसाइटी के असंख्य विभागों के अफसरों से उन्होंने ज़ाती ताल्लुक़ पैदा किए और उनको जमाअत से परिचित करवाया। माशा अल्लाह यह मलिका भी उनमें ख़ूब था और जिनसे भी ताल्लुक़ क़ायम किया बड़ा अच्छा और गहरा ताल्लुक़ था और दूसरों ने भी इस ताल्लुक़ को निभाया। उनकी वफ़ात पर भी इसी तरह ग़ैरों ने बहुत ज़्यादा ताज़ियत की है। फिर यह लाल ख़ान साहब लिखते हैं कि पाकिस्तान और दूसरे देशों से आने वाले अफ़राद और ख़ानदानों की राहनुमाई और माली सहायता की ज़िम्मेदारी की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ने उन्हें अता फ़रमाई। फिर कहते हैं कि मजलिस आमला के अराकीन से उनका राबिता दोस्तों की तरह रहता था। कहते हैं कि मुझे उनकी इमारत में तक़रीबन बीस वर्ष ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस दौरान में मुझे उन्होंने यह एहसास नहीं होने दिया कि उनके अमीर होने के बायस में उनका अधीन हूँ बल्कि उनका रवैय्या मुझसे एक दोस्त वाला रहा है।

फिर डाक्टर असलम दाऊद साहिब कहते हैं कि नसीम महदी साहिब को आर्डर आफ़ ऊंटारयू तमग़ा 2009 ई. में मिला जो कि राज्य का सबसे सम्मानित अवार्ड है जो किसी शहरी को दिया जा सकता है। यह ऐवार्ड किसी भी फ़ील्ड में कामयाबी और आला ख़िदमात बजा लाने पर दिया जाता है। कहते हैं जब उनकी तक़र्रुरी अमरीका में हुई तो एक दफ़ा जलसा सालाना पर मेरी उनसे मुलाक़ात हुई। उस वक़्त उन्होंने मुझे नसीहत की कि तुम जिस पोज़ीशन में अब हो तुम जितनी ज़्यादा लोगों की ख़िदमत कर सकते हो करो। जब भी कोई फ़र्द जमाअत तुम्हारे पास आए तो उस की मदद करो और कभी न धुतकारना। जो कुछ उनके लिए कर सकते हो करो और यह भी बताया कि लोग बाज़ दफ़ा सही तरह बात नहीं करते तो पोशीदा तौर पर भी उनका पता कर के उनकी मदद करनी चाहिए। कहते हैं मैं ने उन्हें हमेशा ज़रूरतमंदों की मदद करते हुए देखा है और हमेशा ऐसे रंग में पर्दा-दारी करते हुए मदद करते थे कि ज़रूरतमंद किसी तरह भी शर्मिंदा न हो।

शकूर साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं, वह कहते हैं कि उनकी बहुत सारी बातों में से एक नसीहत जो मेरे ज़हन नशीन हो गई वह यह है कि कहते हैं मैं जामिआ के इबतिदाई सालों में शायद दर्जा सानिया में था। एक दफ़ा अस्र की नमाज़ पर चप्पल पहन के मस्जिद में आ गया तो उन्होंने मुझे कहा कि वाकफ़ीन-ए-सिलसिला को समस्त हालात के लिए तैयारी कर के घर से निकलना चाहिए ताकि अगर कभी कोई

हुक्म मिल जाए तो फ़ौरी तौर पर वहीं से उस को बजा लाने के लिए तुम लोग तैयार हो के चले जाओ। यह न हो कि कहो में घर जा के तैयार हो के आता हूँ। ज़हनी के इलावा जिस्मानी तौर पर भी हमेशा तैयार रहना चाहिए।

इसी तरह फ़िरासत उमर मुरब्बी सिलसिला अमरीका हैं, वह कहते हैं कि जब मेरा जामिआ का इंटरव्यू हुआ तो मह्दी साहिब ने एक सवाल पूछा कि अगर बतौर मिशनरी अफ़्रीक़ा भेजा जाए और वहां मुख़ालेफ़त हो जाए मुक़ामी लोगों की तरफ़ से तो किस से पहले राबिता करोगे अपनी माता से या ख़लीफ़तुल मसीह से? तो कहते हैं मैं ने सोचने के बाद कहा ख़लीफ़तुल मसीह से। इस पर मह्दी साहिब ने कहा कि इसी बुनियाद पर मैं तुम्हारी सिफ़ारिश कर रहा हूँ कि तुम्हें दाख़िला दिया जाए और यही सही जवाब है।

कर्नल दिलदार साहिब सैक्रेटरी मिशन हाऊस हैं। कहते हैं कि नसीम मह्दी साहिब में खलिफ़ा की इताअत का जज़बा नुमायां पाया जाता था। उनके कारनामों में एक "पीस विलेज" का क़ियाम है। यह इस तरह वजूद में आया कि जिस ज़माने में कैनेडा का जलसा सालाना मस्जिद बैतुल इस्लाम के साथ मैदान में होता था, उस वक़्त साथ वाले ज़मीन की मालिका जलसा के अवसर पर हर साल शिकायत करती कि उनके जलसा के शोर से मुझे घबराहट होती है और उनके लंगर की बू मेरे लिए नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त है। बहरहाल कुछ अरसा बाद जब हुकूमत ने इस ज़मीन की ज़ोनिंग (zoning) की और इस को रिहायशी ज़ोन में तबदील कर दिया तो फिर नसीम मह्दी साहिब को फ़िक्र हुई कि यह एक मालिका हमें परेशान कर रही थी अब तो कई मालिक बन जाऐंगे, कई घरों के आ जाऐंगे तो बड़ा मुश्किल हो जाएगा। इस पर उन्होंने ईद के अवसर पर अहबाब जमाअत में स्कीम पेश की कि क्यों न यहां सारे अहमदी घर बना लें और यह जगह अहमदी लोग ख़रीद लें। इसलिए अहबाब जमाअत ने इस तहरीक पर लब्बैक कहा और अल्लाह के फ़ज़ल से फिर पीस विलेज का क़ियाम अमल में आया।

ज़ीशान गौराईआ साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। कहते हैं बेशुमार नौजवानों ने उनसे तर्बीयत हासिल की और आज इस तर्बीयत के नतीजा में हम लोग दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में बतौर मुरब्बी सिलसिला जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। आपकी तर्बीयत की वजह से हमने ख़िलाफ़त से मुहब्बत करना सीखा और इताअत की रूह को अपने अंदर नशओ-नुमा पाते देखा।

इसी तरह आसिफ़ ख़ान साहब कैनेडा के सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा हैं, कहते हैं मैं तेराह साल की आयु में (vaughan) में आया था। इस वक़्त मिशन हाऊस के आस-पास कुछ दर्जन भर अहमदी थे। मेरा उस वक़्त जमाअती इलम बहुत कम था। मह्दी साहिब ने मुझसे अपने बेटे की तरह सुलूक किया, मेरे उस्ताद बन गए। बस्किट बाल खेलते और हमें जमाअती तालीम देते। मैंने होश संभाली तो मुझे मुख़्तलिफ़ सियासतदानों से राबिता करने के लिए जमाअती काम देते। और इसी तरह आज भी अल्लाह के फ़ज़ल से यह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। कहते हैं मैं ने सब तर्बीयत उनसे हासिल की।

मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर जमाअत अमरीका कहते हैं कि 2016 ई. में बतौर मिशनरी इंचार्ज और नायब अमीर जमाअत अमरीका उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और अमरीका में उन्होंने बड़ा अच्छा काम किया। दौराजात किए। मुख़्तलिफ़ स्टेटस में दौराजात पर गए, तब्लीग़ के काम को प्रभावी तौर पर शुरू करने की कोशिश की। इस दौरान मरहूम को मीडीया और मुख़्तलिफ़ कंपेनज़ (campaigns) के ज़रीया इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम अमरीका में फैलाने की तौफ़ीक़ मिलती रही। फिर मैक्सीको में जमाअत के क़ियाम के बारे में मर्कज़ की हिदायत की रोशनी में वहां मिशन हाऊस क़ायम करने के सिलसिला में उनको तौफ़ीक़ मिली। सैक्रेटरी तब्लीग़ अमरीका वसीम सय्यद साहिब कहते हैं कि हर एक के साथ प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक़ क़ायम करने वाले थे। इस में पहल करते थे और ख़िदमत-ए-इस्लाम में हर एक को साथ लगाने का तरीक़ आता था। अमरीका आने के बाद मरहूम ने 11 सितंबर की मुनासबत से हर साल मुनाक़िद होने वाली तक़रीबात को इस्लाम की तालीमात फैलाने का प्रभवि ज़रीया बनाया और muslims for life और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के बारे में muhammad, messenger of peace मुहिम शुरू की। अमरीका की छप्पन यूनीवर्सिटीज़ में इस विषय पर लैक्चर हुए। "लाईफ़ आफ़ मुहम्मद" किताब वसीअ तौर पर उनके लैक्चर में शामिल होने वाले अफ़राद को भेंट दी गई। muslims for loyalty की मुहिम भी उन्होंने शुरू की। मुख़्तलिफ़ यूनीवर्सिटीज़ में लैक्चर दिए। मुक़ामी हुकूमती हलक़ों के साथ मीटिंगज़ कीं और इस्लाम की तालीम को उजागर किया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सालिस ने जलसा सालाना के अवसर पर एक दफ़ा अपनी तक़रीर में स्विटज़रलैंड के मिशन की मसाई में जमाअत के तआरुफ़ी फोल्डर की स्कीम पर मह्दी साहिब के मुस्तइद्दी से काम का वर्णन करते हुए फ़रमाया था कि स्विटज़रलैंड की पहाड़ीयों पर जो लोग रहते हैं, ये जानवर पालने वाले तीन क़बीले हैं। तीनों की ज़बान भी मुख़्तलिफ़ है। अट्ठाईस हज़ार की संख्या में हैं। इस से भी कम है उनकी तादाद, तो बहरहाल कहते हैं इत्तिफ़ाक़न अट्ठाईस हज़ार बोलने वालों का फोल्डर शाय कर दिया नसीम मह्दी साहिब ने (अल्लाह तआला उन्हें जज़ा दे) मुझसे मश्वरा करने के बाद और आठ हज़ार फोल्डर हर घर में पहुंचा दिया इस इलाक़े के। वहां इस इलाक़े के हर घर में पहुंचा दिया वहां तो शोर मच गया। दो अख़बारों ने बड़ी सख़्त तन्क़ीद लिखी है। (उद्धरित सबीलुर रिशाद 2 पृष्ठ 426-427)

तो मैं ने कहा अच्छी दुआ उनके हक़ में हो गई है कई लाख फोल्डर तक़सीम हुआ।

(माख़ूज़ अज़ ख़ुतबाते नासिर भाग 2 पृष्ठ 543-544)

बहरहाल यह मुख़्तसर सी रिपोर्ट थी जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने वहां पेश की जलसे पर। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। अपने प्यारों के क़दमों में उनको जगह दे। उनके बच्चों और बीवी को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जिस तरह उन्होंने वफ़ा से ज़िंदगी गुज़ारी है उनकी औलाद भी इसी तरह वफ़ा से ज़िंदगी गुज़ारने वाली हो।

अगला ज़िक्र है अज़ीज़म मुहम्मद अहमद शारिम रब्वाह का। यह बच्चा सोला साल की उम्र में बक़ज़ाए इलाही फ़ौत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ख़िलाफ़त का फ़िदाई, एक हँसमुख और हर दिल अज़ीज़ बचा था। माली तहरीकात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता था। जमाअती और तंज़ीमी प्रोग्रामों में बाक़ायदा शामिल होता था। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी था। इस उम्र में उसने वसीयत कर ली थी। पीछे रहने वालों में माता पिता के इलावा दो बहनें शामिल हैं। अल्लाह तआला सब को सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

तीसरा वर्णन श्रीमाना सलीमा क़मर साहिबा पत्नी रशीद अहमद साहिब मरहूम का है। 16 मई को उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पिता चौधरी मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब के नाना हज़रत मौलवी वज़ीरुद्दीन साहिब आफ़ मुकेरियां के द्वारा हुआ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के सहाबी थे और कांगड़ा में हेडमास्टर थे। उनके पिता चौधरी मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब मौलवी फ़ाज़िल जो थे वे जमाअत की बुज़ुर्ग शख़्सियत थे। लंबा अरसा उनको इंचार्ज ख़िलाफ़त लाइब्रेरी के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बतौर सदर उमूमी रब्वाह भी उनको लंबा अरसा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मौलवी-साहब को, सलीमा क़मर साहिबा के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

पिता को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की हिदायत पर क़ियाम रब्वाह के अवसर पर ख़ेमा लगाने और पहली रात रब्वाह में बसर करने का एज़ाज़ भी नसीब हुआ। मरहूमा ने अपनी इबतिदाई तालीम रब्वाह में हासिल की और तालीमुल इस्लाम कॉलेज से एम.ए. अरबी की डिग्री हासिल की। लंबा अरसा तक मुख़्तलिफ़ विभागों में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। लजना इमाल्लाह में 1972 ई.से 82 ई. बतौर जनरल सैक्रेटरी ख़िदमत का अवसर मिला। 82 ई. से 87 ई. अम्तुल हई लाइब्रेरी में बतौर लाइब्रेरियन काम किया। 87 ई. से 18 ई. इकत्तीस साल बतौर सम्पादक रिसाला मिसबाह ख़िदमत का अवसर मिला और इस दौरान उन्होंने बावजूद कठिन हालात के मिसबाह को बड़ी अच्छी तरह चलाया। मरहूमा निहायत नेक सीरत, इबादतगुज़ार, दुआ-गो और सादा तबीयत की मालिक थीं। बाक़ायदगी से नमाज़ तहज्जुद के साथ अन्य नफ़्ली नमाज़ें चाशत और इशराक़ पाबंदी से अदा करती थीं। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से बहुत इख़लास और वफ़ा का ताल्लुक़ था। आपकी ज़िंदगी के हर पहलू में दुआ का रंग नुमायां होता था। एक फ़िरिश्ता सिफ़त महिला थीं। हर एक से निहायत प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक़ था। कभी किसी से नाराज़ नहीं होती थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद करे और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 22 का शेष

भी यही कहते हैं हाँ वहीं नस्लें जिनके सिरों पर बादशाही के ताज रखे जाएंगे कि जब ख़ुदा तुम्हें दुनिया में ताक़त दे और तुम अपने दुश्मनों का सिर कुचलने का अवसर पाओ और तुम्हारे हाथ को कोई इन्सानी ताक़त रोकने वाली न हो तो तुम अपने गुज़रे हुए दुश्मनों के ज़ुल्मों को याद करके अपनी ख़ूनों में जोश न पैदा होने देना और हमारी कमज़ोरी के ज़माना की लाज रखना ता लोग यह न कहें कि जब यह कमज़ोर थे तो दुश्मन के सामने दब कर रहे और जब ताक़त पाई तो इंतेक़ाम के हाथ को लंबा कर दिया बल्कि तुम उस वक़्त भी सब्र से काम लेना और अपने इंतेक़ाम को ख़ुदा पर छोड़ना और हे आसमान गवाह रह कि हमने अपने आने वाली नसलों को ख़ुदा के सच्चे मसीह की रहमत और अफ़्व का पैग़ाम दिया।''

हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब तहरीर फ़रमाते हैं : विनीत उसी पर किफ़ायत करता है कि हज़रत साहिबज़ादा साहिब की एक अत्यन्त अहम ख़िदमत की तरफ़ मुख़्तसर-सा इशारा कर दे। यूं तो साहिबज़ादा साहिब की समस्त ज़िंदगी ही बनीनौ इन्सान "इस्लाम" और सिलसिले की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ रही और अलग अलग रंग में आपको इस ख़िदमत के अवसर अल्लाह के फ़ज़ल से प्राप्त होते रहे जिससे आपने पूरा फ़ायदा उठाते हुए अत्यन्त दिली और जाँ-फ़ेशानी से इस्लाम और सिलसिला अहमदिया के इस्तेहकाम के लिए कारहाए नुमायां सरअंजाम दिए जिनका तालीमी। तर्बीयती और अख़लाक़ी फ़ैज़ हमेशा जारी रहेगा और यही आपकी हक़ीक़ी यादगार होगा। लेकिन इन सबसे मुमताज़ और अहम वह ख़िदमत और वह क़ुर्बानी है जो आपने हज़रत अमीरुल मोमेनीन अल् मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी के अरसा के प्रत्येक क्षण ने तलब की और जिसे आपने हद दर्जा से पूरा किया और सरअंजाम दिया। यह अरसा समस्त जमाअत के लिए और दर्जा बदरजा ख़ुद्दाम मुख़्लैसीन के लिए लेकिन सबसे कहीं बढ़कर और कई गुना ज़्यादा हज़रत साहिबज़ादा साहिब के लिए सब्र-आज़्मा और दर्द-नाक तौर पर ख़ुदा के राज़ी करने वाली रही है। इस समस्त अरसा में जिस तौर पर आपने अपना जिस्म और अपनी रूह, अपनी शक्तियों और अपनी इस्तिदादें, अपने वसायल और अपना वक़्त अपनी उमंगें और अपने इरादे, अपनी सेहत और अपनी ज़िंदगी मर्ज़ी मौला के सपुर्द और हवाले रखी वह आप का ही हिस्सा था और किसी और से सम्भव नहीं होता। हज़रत अमीरुल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बीमारी और तकलीफ़ का एहसास और उसका दर्द और बैचेनी एक तरफ़, जमाअत के ग़म और परेशानी में प्रत्येक के दर्द का एहसास और प्रत्येक की दिलजोई और ग़मख़ारी और हौसला-अफ़ज़ाई दूसरी तरफ़ सिलसिले की बहबूदी और तरक़्क़ी और उसके मुख़्तलिफ़ विभागों की कार-गुज़ारी के विषय में मश्वरों और नसाएह की ज़िम्मेदारी। तीसरी तरफ़ नाज़ुक ख़्यालात और नाज़ुक एहसासात की पासदारी। चौथी तरफ़ ग़रज़। दिल दिमाग़ फ़िक्र रूह सब कारे यार हावी था कार-ए-ख़्वेश की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही थी सच्च तो यह है कार-ए-यार ही कार-ए-ख़्वेश बन चुका था। सिर और जान इसी के लिए वक़्फ़ हो चुके थे और इसी में डूबे थे। दिल भर आता था। आँसू बह पड़ते थे जिगर ख़ून हो कर रह जाता था لکن لانقول الا ما یَرْضی بِہٖ ربنا वाली कैफ़ीयत थी। अपने मुक़द्दस पिता अलैहिस्सलाम का फ़रमान प्रत्येक लहज़ा पेश-ए-नज़र था।

اندریں راہ درد سر بسیار نیست
جاں بخواہد دادنش بسیار نیست

मियां बशीर अहमद साहिब ने उसे अपने अमल और किरदार से एक हकीक़त साबित करके दिखा दिया प्रत्येक क्षण जान दी और मुस्कुरा दिए और जान देते चले गए, देते चले गए, देते चले गए यहां तक يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ○ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ○ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ○ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ○ کا مژدہ سنتے ھی لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ. لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ के साथ आख़िरी बार उसी का अतीया उसके सपुर्द करके समस्त ज़िम्मेदारियों से सम्मान के साथ अलग हो गए।

(पेश-ए-लफ्ज़ "हयाते-बशीर" पृष्ठ 6 - 7)

★ ★ ★

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें
(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है।

(सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की प्रत्येक सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

★ ★ ★

राष्ट्राध्यक्षों के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आचरण

(मुहम्मद इनाम ग़ौरी, नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

भाषण जल्सा सालाना क़ादियान 2021 ई.

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا

(सूरः अल् निसा : आयत : 59)

अनुवाद : निसंदेह अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अमानतें उनके हक़दारों के सपुर्द किया करो और जब तुम लोगों के मध्य हुकूमत करो तो इन्साफ़ के साथ हुकूमत करो। निसंदेह बहुत ही उम्दा है जो अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है। निसंदेह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहिरी नज़र रखने वाला है।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ

(सूरः अल् हज आयत : 42)

अनुवाद : ये वे लोग हैं कि अगर हम उनको दुनिया में ताक़त बख़्शें तो वे नमाज़ों को क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और नैक बातों का हुक्म देंगे और बुरी बातों से रोकेंगें और सब कामों का अंजाम ख़ुदा के हाथ में है।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ○ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ○

(सूरः ताहा आयत 119 से 120)

अनुवाद : तेरे लिए निर्धारित है कि न तू इस में भूखा रहे और न नंगा। और यह भी कि न तो इस में प्यासा रहे और न धूप में जले।

इन तीन आयात में जिनकी विनीत ने तिलावत की और अनुवाद पेश किया है उनमें किसी भी रियासत के अवाम और हुक्काम ख़ाह वे किसी तर्ज़-ए-हुकूमत से ताल्लुक़ रखने वाले हों, दोनों के लिए स्पष्ट पैग़ाम और लाहे अमल दिया गया है।

अवाम के लिए यह नसीहत फ़रमाई गई है कि इंतेख़ाबात का जमहूरी अमल पुर्णतः दियानतदारी पर आधारित होना चाहिए। ऐसे हाकिम चुनना या नामकरण करने की दयानत दारी वाली कोशिश होनी चाहिए जो न केवल दयानत पर आधारित हों बल्कि क़ौमी ज़िम्मेदारी को अदा करने के अहल भी हों और जब हुकूमत क़ायम हो जाएगी तो राष्ट्राध्यक्ष की यह ज़िम्मेदारी है कि कामिल अदल और इंसाफ के साथ बिना भेद भाव धर्म ज़ात और रंग और नस्ल में अंतर किए बग़ैर रियाया के हुक़ूक़ की अदायगी की कोशिश करें।

लोगों के हुक़ूक़ में से मुक़द्दम तौर पर बुनियादी ज़रूरियात की फ़राहमी का इंतिज़ाम करना है और कम से कम बुनियादी आवश्यकता ये हैं कि कोई फ़र्द भूखा न रहे और पीने का साफ़ पानी मुहय्या करने की कोशिश की जाए और तन ढाँकने के लिए लिबास और रहने के लिए हुकूमत के वसायल के अनुसार मकान मुहय्या किया जाए। और इस ग़रज़ के लिए इस्लाम ने ज़कात और जिज़या का निज़ाम जारी किया है।

इसके बाद हुकूमत का फ़र्ज़ है कि लोगों के अक़ीदा और मसलक के अनुसार उन्हें इबादत करने की आज़ादी दी जाए और मसाजिद, गिरजे और मदिरों आदि का सम्मान और सुरक्षा का इंतिज़ाम किया जाए और ऐसा समाज बनाने की कोशिश की जाए जिसमें लोग अपने आपको और दूसरों को भी हुस्न-ए-सुलूक और अख़लाक़ और इन्साफ़ की नसीहत करते रहने के आदी हो जाएं और अपने आपको और दूसरों को समस्त नापसंदीदा उमूर् से चाहे संसारिक हों या धार्मिक, अख़लाक़ी हूँ या मआशी या इक़तेसादी रोकने की कोशिश करते रहें।

इस मुख़्तसर तमहीद के बाद अब सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक रियासत के सरबराह होने के लिहाज़ से क्या उदाहरण था उस का जायज़ लेने के लिए मदीना मुनव्वरः की रियासत पर एक तायराना नज़र डालते हैं।

नुबुव्वत के दावा के बाद पवित्र मक्का में अत्यधिक कठिनाईयों वाला भरपूर (13) वर्ष गुज़ारने और फिर अल्लाह तआला के हुक्म से यसरब की तरफ़ हिज्रत करने का वाक़िया पेश आया। और मदीना पहुंचने के बाद जो सबसे पहली फ़िक्र आपको हुई वह बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी के लिए मस्जिद के निर्माण के विषय में थी। इसलिए पहले तो "कुबा" स्थान पर जहां आपका कुछ दिन क़ियाम रहा पहली मस्जिद वहां तामीर की और फिर मदीना में वुरूद-ए-मसऊद के साथ दो यतीम लड़कों से ज़मीन ख़रीद कर मस्जिद नब्वी की बुनियाद रखी और अत्यन्त सादा लेकिन वसीअ और अरीज़ मस्जिद खजूर की टहनियों की छत वाली तामीर करवाई। इस तरह اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ के इरशाद बारी तआला की तामील में नमाज़ बाजमाअत के क़ियाम का इंतिज़ाम फ़रमाया और फिर रियासत मदीना के व्यवस्था को सँभालने की तरफ़ तवज्जा फ़रमाई।

याद रखना चाहिए कि मदीना की रियासत भी कोई फूलों की सेज नहीं थी और न हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां के अवाम की अक्सरियत के वोटों से जीत कर मदीना की रियासत के सरबराह बने थे बल्कि चंद गिनती के मुरीदान बावफ़ा थे जो इस्लाम के पैग़ाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ फाज़िला से प्रभावित हो कर यसरब तशरीफ़ लाने की दरख़ास्त कर रहे थे और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की इच्छा इस बस्ती को मदीन्तुर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बनाने में कारफ़रमा थी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेसर-ओ-सामानी की हालत में छुपते छुपाते अपने एक साथी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के हमराह वहां वरूद फ़र्मा हुए थे। लेकिन अल्लाह तआला ने यसरब के चंद अंसार के दिलों में ऐसी मुहब्बत और ऐसी जानसारी के जज़बात पैदा कर दिए कि प्रत्येक कोई इच्छा रखता था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे घर को बरकत बख़्शें। फिर कुछ ही अरसे में मक्का से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहल-ए-बैत और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो हिज्रत करके मदीना आ पहुंचे। सबसे पहले इन मुहाजेरीन का जो अपना माल वा असबाब छोड़कर ख़ाली हाथ पहुंच रहे थे उनकी आबादकारी का मसला था जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक परदेसी की हैसियत में वहां वरूद फ़र्मा हुए थे और कोई हुकूमत थी न कोई ख़ज़ाना या बैतुल माल साथ था। इन न मसायद हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह पुरहिकमत कारवाई फ़रमाई कि मक्का के एक एक मुहाजिर का मदीना के एक एक अंसार के साथ भाईचारे का रिश्ता क़ायम फ़रमाया। यह भाईचारा ऐसा मिसाली रिश्ता साबित हुआ कि कुछ अंसार ने अपने मुहाजिर भाई को कह दिया कि यह मेरा माल और सम्पत्ति है इसमें आधा तुम्हारा हिस्सा है और इख़लास और प्रेम में यहां तक पेशकश कर दी कि मेरी दो पत्नियाँ हैं एक को मैं तलाक़ देता हूँ, इद्दत गुज़रने के बाद तुम इस से शादी कर लेना लेकिन इस मुहाजिर भाई ने कहा तुम्हारा माल और सम्पत्ति और परिवार तुम्हारे लिए मुबारक हो। मुझे केवल बाज़ार का रस्ता बता दो और कुछ रक़म क़र्ज़ दे दो। इसलिए फिर जल्द ही न केवल वे अपने पैरों पर खड़े हो गए बल्कि औरों के भी सहारा बनने के काबिल बन गए। यह तो थे मदीना के मुस्लमान सहाबा जो अंसार कहलाते थे और मक्का के मुस्लमान सहाबा जो मुहाजिर कहलाते थे उनके मध्य एकता और प्रेम की मिसाली और पुरहकमत कार्रवाई का संक्षिप्त वर्णन।

अब आगे देखते हैं इस रियासत में और कौन कौन सी कौमें और क़बायल आबाद थीं उनको साथ मिलाने और एकता पैदा करने और एक निज़ाम के अधीन करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या उपाए इख़्तेयार किया मदीना में इस वक़्त यहूद के तीन क़बायल बनू क़ेनक़ा। बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा मुक़ीम थे। दो क़बायल बुत परस्तों के ओस और ख़ज़रज मौजूद थे।

इन पांचों क़बायल में नज़म व नसक़ नाम की कोई चीज़ नहीं थी। खासतौर पर यहूद के तीन क़बायल आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार रंग में अलग-अलग क़िलों में रिहाइश रखते थे।

दूसरी तरफ़ क़ुरैश-मक्का आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अक्सर आप के साथियों के मदीना हिज्रत कर जाने और मदीना में मुस्लमानों के ताक़त पकड़ जाने की वजह से पेचोताब खा रहे थे और अपनी ताक़त इकट्ठा करने में लगे हुए थे कि जब भी अवसर मिले मदीना पर हमला-आवर हो कर मुस्लमानों को वहां से भी बेदख़ल करने में कामयाब हो जाएं।

अतः अंदरून और बैरून मदीना के यह हालात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए चाहे वे अंसार हों या मुहाजिर सुख चैन वाले नहीं थे यहाँ तक कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी आराम की नींद नहीं सो सकते थे जबकि कम से कम अंदरून रियासत मुस्लमानों और अन्य ग़ैर मुस्लिम क़बायल विशेषता यहूद के क़बायल के साथ सुलह और अमन के माहौल में रहने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूर-अँदेश निगाह ने एक तहरीरी मुआहिदा करना ज़रूरी समझा जिसकी शरायत कुछ इस तरह थीं कि :

(1) मुस्लमान और यहूदी आपस में हमदर्दी और इख़लास के साथ रहेंगे और एक दूसरे के ख़िलाफ़ ज़्यादती या ज़ुलम से काम नहीं लेंगे।

(2) प्रत्येक क़ौम को मज़हबी आज़ादी हासिल होगी।

(3) समस्त शहरियों की जान और माल महफ़ूज़ होंगे

(4) हर किस्म के इख़तेलाफ़ और झगड़ों के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रुजू करेंगे और प्रत्येक का फ़ैसला उस क़ौम की अपनी शरीयत के अनुसार किया जाएगा

(5) अगर यहूदियों या मुस्लमानों के ख़िलाफ़ कोई क़ौम जंग करेगी तो यहूद और मुसलमान एक दूसरे की हिमायत और इमदाद के लिए खड़े होंगे

(6) अगर मदीना पर कोई हमला होगा तो सब मिल कर उस का मुक़ाबला करेंगे

(7) क़ुरैश-ए-मक्का और उन के सहायक को यहूद की तरफ़ से किसी किस्म की सहायता या पनाह नहीं दी जाएगी

(8) कोई फ़रीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इजाज़त के बग़ैर जंग के लिए नहीं निकलेगा

(9) इस मुआहिदा के अनुसार कोई ज़ालिम या फ़सादी सज़ा से या इंतिक़ाम से महफ़ूज़ नहीं होगा।

जबकि बाद के वाक़ियात ज़ाहिर करते हैं कि वर्णित यहूदी क़बायल कुछ मुआहिदात की ख़िलाफ़वरज़ी के मुर्तकिब होते रहे और क़बीला ओस और ख़ज़रज के कुछ मुशरेकीन ने मुस्लमानों के साथ रहने में आफ़ियत समझ कर बज़ाहिर इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन उनके दिलों में ईमान ने झांक कर भी नहीं देखा था बल्कि यह प्रत्येक नाज़ुक अवसर पर अपनी मुनाफ़क़त का रंग दिखाते रहे जबकि इस मुआहिदा की दृष्टि से मुस्लमानों और यहूदियों के बाहमी ताल्लुक़ात मज़बूत हो गए और मदीना में एक किस्म की मुनज़्ज़म हुकूमत की बुनियाद क़ायम हो गई जिसके सरबराह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़रार पाए।

अतः ऐसे न मुसायद हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमका अत्यन्त पुरहिकमत तरीक़ पर रियासत-ए-मदीना का नज़्म व नसक़ सँभालना और फिर अपने आला अख़लाक़ और रवादारी और मुसावात और कामिल अदल और इंसाफ के ज़रीये मदीना मुनव्वरा को एक मिसाली रियासत देना आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐसा काबिल-ए-तक़लीद नमूना है जो हर उस सरबराह के लिए भी जो अपने ही मुल्क में अपने ही अवाम की अक्सरियत के इत्तिफ़ाक़ राय से मुंतख़ब या नामज़द हो गया हो एक मार्गदर्शक की हैसियत रखता है।

अब विनीत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी सीरत-ए-तय्यबा के हवाले से यह वर्णन करना चाहता है कि क़त-ए-नज़र आपके रुहानी मर्तबा और स्थान के, वे कौन से ख़ास उमूर हैं जिनकी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक मक़बूल और कामयाब मुल्क के लीडर नज़र आते हैं और कुछ बाग़ियों और मुनाफ़िक़ों को छोड़ कर इस रियासत के अवाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अपनी जानें निछावर करने में फ़ख़र महसूस करते हैं।

सबसे पहली ख़ुसूसीयत जो उभर कर सामने आती है वह मज़हबी आज़ादी और रवादारी है। विशेषता एक ऐसी रियासत जिसमें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और मसलकों से ताल्लुक़ और अक़ीदत रखने वालों की हो, वहां प्रत्येक को अपने अक़ीदा और मसलक के इज़हार और पुर अमन तब्लीग़ और इस पर अमल पैरा होने की आज़ादी हो और किसी को कष्ट देने की किसी को इजाज़त नहीं हो। इसलिए जैसा कि वर्णन हो चुका है मदीना में जहां ख़ुदा ए वाहिद लाशरीक और हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और क़ुरआन शरीयत पर अमल करने वाले मुस्लमान थे वहां मूसवी शरीयत तौरात पर अमल करने वाले यहूदी और कुछ हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले ईसाई और बुत परस्त मुशरक अक़्वाम भी थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ जो मुआहिदात फ़रमाए थे इसके अनुसार अमलदरआमद करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रत्येक को मज़हबी आज़ादी दे रखी थी और एक मुस्लिमा सरबराह होने की हैसियत से जिस मज़हब से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों के झगड़ों आपके सामने पेश होते उनकी अपनी शरीयत और अक़ीदा के अनुसार उनके फ़ैसले फ़रमाते थे।

क़ुरआन-ए-करीम ने तो यहां तक फ़रमाया है कि जो लोग अल्लाह के सिवा और हस्तीयों और चीज़ों की पूजा करते हैं तुम उन को भी बुरा मत कहो अन्यथा वे भी दुश्मनी की राह से नादानी में अल्लाह को गाली देंगे। (सूरः अल् ईनाम आयत : 109)

मुशरेकीन-ए-मक्का ने ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर मुस्लमान शुहदा की नाशों की बे हुरमती की थी और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का कलेजा तक चबाया गया था। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी इस का बदला लेने का नहीं सोचा बल्कि हमेशा उन के साथ हुस्न-ए-सुलूक ही किया।

हज़रत हसन बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक ग़ज़वा के अवसर पर मक़्तूलीन में कुछ बच्चों के देह भी पाए गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब पूछताछ की तो एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! वे मुशरिकों के बच्चे ही तो थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, आज तुम में से जो बेहतरीन लोग हैं वे भी कल मुशरिकों के बच्चे ही तो थे। याद रखो कोई भी बचा जब पैदा होता है तो नेक फ़ित्रत पर पैदा होता है। इसके बाद उसके माँ बाप उसे यहूदी या ईसाई बना देते हैं। (मस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 6 पृष्ठ 24 बेरूत)

दूसरी अहम ख़ुसूसीयत एक मुल्क के लीडर की हैसियत से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमाल अदल और इंसाफ का वह तरीक़ है जो संसार में शन्ति का गवाह है। आज जिस क़दर भी दुनिया में बेचैनी और बदअमनी नज़र आती है इस का बड़ा सबब अदल और इंसाफ का फ़ुक़दान है। इस्लाम तो केवल अपनों से नहीं बल्कि ग़ैरों और दुश्मनों के साथ भी अदल और इंसाफ का सुलूक करने की तालीम देता है और इस बारे में हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तीयबा बेमिसाल नमूनों से मुज़य्यन है। वक़्त की रियायत से केवल दो वाक़ियात पेश करूँगा।

जिन अक़्वाम के अख़लाक़ ख़राब होने लगते हैं इन में एक तरफा इंसाफ और बे इंसाफ़ी राह पाने लग जाती है। और यह रिवाज आम हो जाता है कि बड़े लोग तो क़ानून के ख़िलाफ़ अमल करके भी बच जाते हैं और केवल गरीब और बेसहारा लोग ही सज़ा पाते हैं लेकिन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ﷺ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِين और रऊफ़ और रहीम होने के बावजूद अहकाम-ए-शरीयत के नफ़ाज़ में बेहद ग़ैरत रखते और अदल और इंसाफ को कभी भी हाथ से नहीं जाने देते थे। इसलिए बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह रिवायत दर्ज है कि :

"क़बीला बनी मख़्ज़ूम की फ़ातिमा नामी एक औरत ने चोरी की इस पर लोगों ने चाहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इस औरत के मुआमले में नरमी की सिफ़ारिश की जाए इसलिए उसामा बिन ज़ैद जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बहुत लाडले और प्यारे थे उनको तैयार किया और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में नरमी की दरख़ास्त कर दी। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अमर को बहुत बुरा मनाया और ग़ुस्सा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा मुबारक लाल हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"बनी इसराईल की आदत थी कि जब उनमें कोई शरीफ़ चोरी करता तो उसे छोड़ देते परन्तु जब कोई ग़रीब चोरी करता तो उसके हाथ काट देते थे। परन्तु मेरा यह हाल है कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट देता।"

اَللّٰھم صلِّ علٰی محمّدٍ وآل محمّد وبارك وسلّم

दूसरा वाक़िया यूं है कि जंग बदर में मुशरेकीन मक्का के क़ैदियों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। क़ैदियों की निगरानी जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द हुई तो उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो समेत सब क़ैदियों की मुशकें अच्छी तरह कस दीं जो मस्जिद नब्वी के अहाते में ही थे। जिससे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु

अन्हो कराहने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने चचा के कराहने की आवाज़ सुनी तो बेचैन और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नींद उड़ गई। अंसार को किसी तरह इस का इलम हो गया तो उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की मुशकें ढीली कर दीं जिसकी वजह से उनका कराहना बंद हो गया इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़त फ़रमाया कि अब्बास के कराहने की आवाज़ क्यों नहीं आरही? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तकलीफ़ के ख़्याल से उनकी रस्सियाँ ढीली कर दी हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह तो इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात है। या तो बाक़ी क़ैदियों की रस्सियाँ भी ढीली कर दो या फिर अब्बास की रस्सियाँ भी कस दो। इस पर सहाबा ने समस्त क़ैदियों की रस्सियाँ ढीली कर दीं।

फिर एक ख़ुसूसीयत यह सामने आती है कि हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने उच्च आचरण से ये अहम नुकता भी समझाया कि एक कामयाब क़ायद एक कामयाब सरबराह के लिए ज़रूरी है कि वे प्रत्येक नाज़ुक मरहला पर क़ौम की रहनुमाई के लिए हर समय तैयार रहे और जिस हद तक सम्भव हो अवसर पर पहुंच कर रहनुमाई करे और क़ौम की हौसला-अफ़ज़ाई करे इस सिलसिले में केवल एक वाक़िया पेश करता हूँ।

ग़ज़वा ख़ंदक़ के अवसर पर हिफ़ाज़ती और जंगी नुक़्ता नज़र से मदीना के इर्दगिर्द ख़ंदक़ खोदी जा रही थी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की हालत यह थी कि भूख की तकलीफ़ को कम करने की उद्देश्य से पेट पर पत्थर बाँधे हुए थे। खुदाई के दौरान एक चट्टान टूट नहीं रही थी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सूरत-ए-हाल पेश करके रहनुमाई चाही। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौरन अवसर पर जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी भूख की शिद्दत को कम करने के लिए अपने पेट पर दो पत्थर बाँधे हुए थे इस हालत में भी आपने कुदाल अपने हाथ में लेकर उस चट्टान को तीन मार लगाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया। और ख़ुदा की क़ुदरत कि इस कमज़ोरी और बेसर-ओ-सामानी के आलम में अल्लाह तआला ने प्रत्येक मार पर इर्दगिर्द की महान सल्तनतों पर मुस्लमानों के ग़लबा का नज़ारा दिखाया और प्रत्येक मार पर अल्लाहु-अकबर का नारा बुलंद करके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ुशख़बरी सुनाई कि शाम और ईरान और सना और यमन के महलों की चाबियाँ मुझे अता की गई हैं।

इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी ज़िंदगी में इस्लाम जज़ीर-ए-अरब में ग़ालिब आ चुका था और आपके विसाल के (9) साल के अंदर अंदर सारे अरब पर मुस्लमानों की बादशाहत क़ायम हो चुकी थी।

एक और अहम ख़ुसूसीयत यह उभर कर सामने आती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रियासत मदीना के सरबराह बनने से पहले और बाद की ज़िंदगी में कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता। मक्का ज़िंदगी की कसमपुर्सी और बेसर-ओ-सामानी के ज़माना में जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रहन सहन था, मदीना के बादशाह बन जाने के बाद भी इस में कोई तबदीली नज़र नहींआती। जबकि एक तरफ़ ईरानी हुकूमत के सरबराहान की शानोशौकत और रोब दबदबा समस्त एशिया पर क़ायम था और दूसरी तरफ़ रूमी हुकूमत अपने पश्चिमी प्रभाव और विलासिता का नमूना पेश कर रही थी और उन प्रत्येक दो प्रभावी हुकूमतों के मध्य ख़ुद अरब के क़बायल भी ग़ुलामों की ख़ादिमाना जी हुज़ूरी में अपनी बिसात से बढ़कर अपनी रईसाना शान को ज़ाहिर करने की कोशिश करते रहते थे।

ऐसे माहौल में हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इंतिहाई सादा और बेतकल्लुफ़ ज़िंदगी में कोई बदलाव नज़र नहीं आता बल्कि अपने साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो और मदीना की प्रजा की ख़ुशहाली और उन की हालत को बेहतर से बेहतर बनाने की फ़िक्र में अपनी ज़ात और अपने परिजनों पर मज़ीद तंगियाँ वारिद फ़रमाते रहे। घर के काम काज के लिए कोई नौकर नहीं रखा और ख़ुद ही सब काम कर लेते थे इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सवाल किया गया कि करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे आपने उत्तर दिया كَانَ فِيْ مِهْنَةِ اَهْلِهٖ فَاِذَا حَضَرَتِ الصَّلٰوةُ خَرَجَ اِلَى الصَّلٰوةِ अर्थात घर में अपने अहल के कामों में हाथ बटाते और जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते। (बुख़ारी, किताब अस्सलात)

कैसा बेमिसाल नमूना है क्या कोई इन्सान ऐसा पेश किया जा सकता है जिसने बादशाह हो कर यह नमूना दिखाया हो कि अपने घर के काम काज के लिए एक नौकर भी न रखा हो जबकि मुल्क-ए-अरब का बादशाह हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाखों रुपया और मवेशियों के रेवड़ के रेवड़ जरूरतमंदों में तक़सीम फ़रमाते रहे। एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सत्तर हज़ार दिरहम आए एक और रिवायत में (90) हज़ार दिरहम का वर्णन मिलता है। ये दिरहम आपने चटाई पर रखवाए और बांटने के लिए खड़े हुए और उन को तक़सीम करके ही दम लिया।(الوفاءباحوال المصطفیٰ ابن الجوزی,पृष्ठ 447 बेरूत)

एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति आया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बकरियों से भरी एक वादी उसे अता फ़र्मा दी। उस नए मुस्लिम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वादी के मध्य की ज़मीन का भी मुतालिबा किया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़मीन की चरागाहें और बकरियों के रेवड़ समेत सब कुछ उसे भेंट कर दिया। वह व्यक्ति अपनी क़ौम में वापस लौटा तो कहने लगा हे मेरी क़ौम तुम सब मुस्लमान हो जाओ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो इतना देते हैं कि भूख प्यास और गरीबी से कभी नहीं डरते।

(مجمع الزوائد هیثمی, भाग 9 पृष्ठ 13 बेरूत)

परन्तु अपनी ज़ात और अपने अहल-ए-बैत को क़ौमी खज़ाने से लाभ प्राप्त करने से हमेशा रोके रखा। यहाँ तक कि एक मर्तबा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नवासे हज़रत इमाम हुसैन छोटी उमर के थे खजूर की ढेर में से एक दो खजूरें उठा कर मुहं में डाल कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ौरन अपनी उंगली उन के मुख में डाल कर वे खजूरें निकाल दीं और फ़रमाया नहीं बेटे ये सदक़ा की खजूरें हैं और सदक़ा हमारे लिए जायज़ नहीं।

और घर की हालत यह थी कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्होंने अपने भांजे हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया "हे मेरे भांजे हम लोग तो देखा करते थे चाँद के बाद चाँद यहाँ तक कि तीन तीन चाँद देख लेते अर्थात् दो दो माह गुज़र जाते परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर में आग नहीं जलती थी। हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने कहा हे ख़ाला फिर आप लोग क्या खाते थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उत्तर दिया कि इस अर्थात् खजूर और पानी से गुज़ारा किया करते थे। हाँ इतनी बात थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्दगिर्द अंसार हमसाया थे और उनके पास दूध वाली बकरियां वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनका दूध बतौर भेंट भिजवा दिया करते थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें पिला दिया करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चहेती बेटी सय्यदतुन निसा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह हाल था कि घर में चक्की पीसते आपके हाथों में छाले पड़ जाते थे जब पता लगा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ ग़ुलाम आए हैं तो उन्होंने ख़ाहिश की कि एक ग़ुलाम उन्हें भी दे दिया जाए ताकि घर के काम काज में कुछ सहूलत हो जाएगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात के वक़्त अपनी बेटी और दामाद के पास पहुंचे और उनके मध्य बिस्तर पर ही बैठ कर अत्यन्त प्यार से समझाया कि मैं तुम्हें कोई ऐसी बात न बता दूं जो इस चीज़ से जिसका तुमने सवाल किया है बेहतर है और वह यह है कि जब तुम अपने बिस्तरों पर लेट जाओ तो 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा अलहमदु लिल्लाह और 34 मर्तबा अल्लाहु-अकबर का विर्द करो यह तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर होगा।

और यह बात काबिल-ए-ज़िक्र है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास केवल क़ौमी ख़ज़ाना का रुपया ही नहीं रहता था कि जिसमें से अपनी ज़ात और परिवार वालों पर ख़र्च करना गुनाह समझते थे बल्कि ख़ुद आपकी ज़ात के लिए भी आपके पास बहुत माल आता था और साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो अपने इख़लास और इशक़ के सबब बहुत से भेंट पेश करके दरख़ास्त और ख़ाहिश करते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे अपनी ज़ात और परिजनों के लिए इस्तिमाल करें अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ख़्याल से कि आपके बाद आपके परिजन किस तरह

गुज़ारा करेंगे माक़ूल रक़म और जायदाद जमा कर जाते तो भी कोई एतराज़ वाली बात न थी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल के वक़्त आपके घर की जो हालत थी उसका नक़्शा अम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा की इस रिवायत से वाज़िह हो जाता है वह वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात के वक़्त कुछ नहीं छोड़ा न कोई दिरहम न दीनार न ग़ुलाम न लौंडी और न कुछ और चीज़ सिवाए अपनी सफ़ैद ख़च्चर और अपने हथियारों के और एक ज़मीन के जिसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदक़ा मेंदे चुके थे।

हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सात दीनार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास रखवाए थे। आख़िरी बीमारी में फ़रमाया हे आयशा! वे सोना जो तुम्हारे पास था किया हुआ? अर्ज़ किया मेरे पास है। फ़रमाया सदक़ा फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बेहोशी हो गई और हज़रत आयशा रज़िय-ल्लाहु अन्हा आपके साथ व्यस्त हो गईं। जब होश आई तो पूछा क्या वे सोना सदक़ा कर दिया? अर्ज़ किया अभी नहीं किया। आपने वे दीनार मंगवा कर अपने हाथ पर रखकर गिने और फ़रमाया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपने रब पर किया तवक्कुल हुआ अगर ख़ुदा से मुलाक़ात और दुनिया से रुख़स्त होते वक़्त ये दीनार उसके पास हूँ। फिर वे दीनार सदक़ा कर दिए और इसी रोज़ आपकी वफ़ात हो गई। (الزوائدھیثمی,भाग 3 पृष्ठ 124 बेरूत)

اللّٰھم صلِّ علی محمّد وال محمّد وبارك وسلّم

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं :

"ख़ुदाए तआला ने बेशुमार ख़ज़ायन के दरवाज़े आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर खोल दीए अतः आँजनाब ने इन सबको ख़ुदा की राह में ख़र्च किया और किसी प्रकार की तनपरवरी में एक रुपया भी ख़र्च नहीं हुआ। न कोई इमारत बनाई न कोई बारगाह तैयार हुई बल्कि एक छोटे से कच्चे कोठे में जिसको ग़रीब लोगों के कोठों पर कुछ भी तर्जीह न थी अपनी सारी उमर बसर की। बुराई करने वालों से नेकी करके दिखलाई और वे जो कष्ट देने थे उनको उन की मुसीबत के वक़्त अपने माल से ख़ुशी पहुंचाई। सोने के लिए अक्सर ज़मीन पर बिस्तर और रहने के लिए एक छोटा सा झोंपड़ा और खाने के लिए नॉन जौ या भूखे रहा करते। दुनिया की दौलतें अत्यधिक उन को दी गईं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पाक हाथों को दुनिया से थोड़ा भी आलूदा नहीं किया और हमेशा गरीबी को ताकत पर और मिस्कीनी को अमीरी पर इख़्तियार रखा और उस दिन से जो ज़हूर फ़रमायाता उस दिन तक जो अपने रफीक़-ए-आला से जा मिले अपने ख़ुदा के सिवाए किसी को कुछ चीज़ नहीं समझा।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 276 से 292 हाशिया नंबर 11)

अतः किसी भी रियासत के सरबराह और हुक्काम के लिए आपकी ज़ाती और परिवारिक ज़िंदगी की यह बसीरत अफ़रोज़ जीवनी मार्गदर्शक है इसके बग़ैर वे लोग और प्रजा के हुक़ूक़ की सही रंग में न निगेहदाशत कर सकते हैं और न बजा आवरी कर सकते हैं।

आज के हुकमरानों का और तो और मुस्लमान हुकमरानों का क़ौमी ख़ज़ानों के ज़ाती और व्यक्तिगत अग़राज़ के लिए व्यर्थ में असीमित इस्तिमाल का जो हाल पढ़ने, सुनने और देखने को मिलता है वे वर्णन करने योग्य नहीं है अल्लाह तआला ही उनको समझ आता करे और हमारे आक़ा हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के हज़ारवें हिस्सा पर ही अमल करने की तौफ़ीक़ मिल जाए तो रियाया के अहवाल दुरुस्त हो सकते हैं।

श्रोता गणों! हमारे प्यारे इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस्लाम की इस अमन बख़्श तालीम और मुहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पाक नमूनों के हवाले से आज दुनिया के तरक़्क़ी याफ़ताह बड़े बड़े देशों के पर्लेमेंट्स में खड़े हो कर अदल और इंसाफ क़ायम करने और वैश्विक बेचैनी और बदअमनी और इंतहापसंदी को रोकने और तीसरी जंग-ए-अज़ीम के बादल जो सिर पर मंडला रहे हैं उन से बचने के लिए आलमी सरबराहों को सचेत फ़र्मा रहे हैं।

आख़िर पर उनमें से केवल दो इक़्तेबास पेश करके अपनी तक़रीर को ख़त्म करूँगा 27 जून 2012 ई. को कैपिटल हिल वाशिंगटन डी सी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कांग्रेस विसेंट के अहम अराकीन, व्हाइट हाऊस के स्टाफ़ और ग़ैर सरकारी तन्ज़ीमों के रहनुमाओं और मुख़्तलिफ़ देशों के सफ़ीरों की मौजूदगी में ख़िताब फ़रमाया इस में आपने फ़रमाया :

"जंग अज़ीम प्रथम के अंत के बाद कुछ देशों के रहनुमाओं की यह ख़ाहिश थी कि भविष्य में अच्छे और पुरअमन बैनुल अक़वामी ताल्लुक़ात क़ायम हूँ। इसलिए आलमी अमन के क़ियाम की एक कोशिश के तौर पर लीग आफ़ नेशनज़ क़ायम की गई। इस का बुनियादी उद्देश्य दुनिया में अमन क़ायम करना और भविष्य की जंगों को रोकना था। बदक़िस्मती से इस लीग के उसूल और उसकी क़रारदादों में कुछ नक़ायस और ख़ामियाँ थीं। इसलिए वे समस्त अक़्वाम के हुक़ूक़ का सही रंग में इन्साफ पर आधारित तहफ़्फ़ुज़ न कर सके। इस अदम-ए-मुसावात का नतीजा यह निकला कि देरपा अमन क़ायम नहीं हो सका। लीग की कोशिशें नाकाम हो गईं और इस के बराह-ए-रस्त नतीजा के तौर पर जंग-ए-अज़ीम दोयम बरपा हुई। इसके बाद जो बेमिसल तबाही और बर्बादी हुई हम सब इस से आगाह हैं जिस में क़रीबन सात करोड़ पच्चास लाख लोग अपनी जानों से हाथ धो बैठे जिनमें एक बड़ी संख्या मासूम शहरीयों की थी। यह जंग दुनिया की आँखें खोलने के लिए काफ़ी होनी चाहिए थी। इसके नतीजा में ऐसी पालिसीयां बननी चाहिऐं थीं जिनके ज़रीया इन्साफ़ की बुनियाद पर समस्त फ़रीक़ैन को उनके जायज़ हुक़ूक़ मिलते और इस तरह यह तंज़ीम आलमी अमन के क़ियाम का एक माध्यम साबित होती। इस वक़्त की हुकूमतों ने बिलाशुबा एक हद तक क़ियाम-ए-अमन की कोशिशें कीं और इस तरह अक़्वाम-ए-मुत्तहदा की तशकील अमल में आई। जबकि जल्द ही यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो गई कि अक़्वाम-ए-मुत्तहिदा का आला और बहुत अहम बुनियादी उद्देश्य पूरा नहीं सका।"

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ 74 से 75)

इसी तरह 11जून 2013 ई. को पार्लीमैंट हाऊस लंदन में वर्णन फ़र्मूदा ख़िताब में फ़रमाया :

"वक़्त की अहम आवश्यकता है कि आलमी अमन और सौहार्द के क़ियाम की कोशिश में सब लोग एक दूसरे का और समस्त मज़ाहिब का एहतिराम क़ायम करें अन्यथा ख़तरनाक परिणाम निकल सकते हैं।

दुनिया एक ग्लोबल विलेज् बन गई है। इसलिए बाहमी एहतेराम के फ़ुक़दान और अमन को बढ़ावा देने के लिए बाहमी इत्तिहाद पैदा न होने की सूरत में सिर्फ मुक़ामी आबादी या शहर या किसी एक मुल्क को नुक़्सान नहीं पहुँचेगा बल्कि वास्तव में यह समस्त दुनिया की तबाही पर आधारित होगा। हम सभी पिछली दो वैश्विक जंगों की होलनाक तबाहियों से बख़ूबी आगाह हैं। कुछ देशों की पालिसीयों की वजह से एक और आलमी जंग के आसार दुनिया के उफ़क़ पर प्रकट हो रहे हैं। अगर आलमी जंग छिड़ गई तो पश्चिमी दुनिया भी इस के देर तक रहने वाले तबाहकुन नतायज से प्रभावित होगी। आएं स्वयं को इस तबाही से बचा लें। आएं अपनी आइन्दा आने वाली नसलों को जंग के मोहलिक और तबाहकुन नतायज से महफ़ूज़ कर लें क्योंकि यह भयावह जंग ऐटमी जंग ही होगी और दुनिया जिस तरफ़ जा रही है इस में यक़ीनी तौर पर एक ऐसी जंग छिड़ने का ख़तरा है। इन भयावह परिणामों से बचने के लिए इन्साफ़, दियानतदारी और ईमानदारी को अपनाना होगा और वे वर्ग जो नफ़रतों को हवा दे कर अमन आलम को तबाह करने के तैयार हैं उनके ख़िलाफ़ एकसाथ हो कर उन्हें रोकना होगा।

मेरी ख़ाहिश और दिल से दुआ है कि ख़ुदा तआला बड़ी ताक़तों को इस सिलसिला में अपनी ज़िम्मेदारियाँ और कर्तव्य इंतिहाई मुंसिफ़ाना और दुरुस्त तरीक़ पर निभाने की तौफ़ीक़ अता करे आमीन।"

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ 129)

وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ ربّ العالمین

★ ★ ★

माली क़ुर्बानी का महत्त्व
(जीवनी साहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में)

(रफ़ीक़ अहमद बेग, नाज़िर बैतुल-माल आमद, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

भाषण जल्सा सालाना क़ादियान 2021 ई.

आदरणीय अध्यक्ष साहिब और प्रिय श्रोताओं अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू! विनीत की भाषण का विषय है "माली क़ुर्बानी का महत्त्व सीरत सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में"

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (सूरः अल् बकरः आयत : 262)

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (सूरः अल् बकरः आयत : 266)

(अनुवाद) इन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं ऐसे बीज की तरह है जो सात बालें उगाता हो प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे इस से भी बहुत बढ़ा कर देता है और अल्लाह वुसअत अता करने वाला और दाइमी इलम रखने वाला है।

और उन लोगों की मिसाल जो अपने अम्वाल अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए और अपने नफ़ूस में से कुछ को मज़बूती देने के लिए ख़र्च करते हैं ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंची जगह पर वाक़्य हो और उसे तेज़ बारिश पहुंचे तो वे बढ़ चढ़ कर अपना फल लाए और अगर उसे तेज़ बारिश न पहुंचे तो शबनम ही बहुत हो और अल्लाह इस पर जो तुम करते हो गहिरी नज़र रखने वाला है।

इन प्रत्येक दो आयात करीमा में अल्लाह तआला ने बड़े स्पष्ट रूप में फ़रमाया है कि अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाला कभी माल ख़र्च करने के नतीजा में ज़ाए नहीं होता और न कभी नुक़्सान उठाता है बल्कि उसके माल में ग़ैरमामूली बरकत दी जाती है। जिस तरह एक दाना ज़मीन में बोने के नतीजा में उसकी सात बालियां निकलें और प्रत्येक बाली में से सौ दाने हों तो सात बालियों में सात सौ दाने निकलते हैं बल्कि अल्लाह ने अगर चाहा तो इस से ज़्यादा निकल सकते हैं ओर मौजूदा साईंसी दौर में यह साबित हो चुका है कि एक दाने से कई सौ दाने निकाले जा सकते हैं।

मानों अल्लाह तआला मोमिनों को यह यक़ीन दिलाता है कि अगर तुम अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए किसी भी नेक काम में माल ख़र्च करोगे तो तुम्हारे अम्वाल कम नहीं होंगे और न कभी बाग़ ज़ाए होंगे और न व्यापर ज़ाए होगे और न नुक़्सान उठाओगे बल्कि प्रत्येक काम में ग़ैरमामूली बरकतें हासिल होंगी।

ख़ुदा से वही लोग करते हैं प्यार
जो सब कुछ ही करते हैं उस पे निसार
इसी फ़िक्र में रहते हैं रोज़ो शब
कि राज़ी वह दिलदार होता है कब
उसे दे चुके माल व जां बार-बार
अभी ख़ौफ़ दिल में कि हैं न-बकार

आदरणीय श्रोताओं! प्रथम युग के मोमेनीन ने माली क़ुर्बानी का महत्त्व को समझते हुए इन बरकात से फ़ायदा उठाया जिन बरकात का मुख़्तसेरन इन दो आयात में वर्णन हुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम ज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी बेमिसाल क़ुर्बानियों और त्याग और अत्यधिक प्रेम के माध्यम से फ़ना फ़ील्लाह और फ़ना फ़ील रसूल का स्थान हासिल करके रहती दुनिया के लिए एक बेमिसाल उदाहरण क़ायम कर दिया और अपने अमल से साबित कर दिया कि वास्तव में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दौर दुनिया की तारीख़ का कीमती युग था क्योंकि ये वही सहाबा किराम थे जिन्हों ने अल्लाह की आवाज़ अर्थात् يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ हे ईमान वालो तुम अल्लाह के दीन के मददगार बन जाओ सुनते ही यह कहते हुए कि हम अल्लाह के दीन के मददगार हैं आपके क़दमों में अपनी ज़िंदगियां क़ुर्बान कर दी थीं।

जब माली क़ुर्बानी का मुतालिबा होता था तो सहाबा भागते हुए अपने घरों से जो भी उपलब्ध होता ला कर आपके सामने पेश कर देते। नेकी के कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की दौड़ लगी रहती थी। एक अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी घर से माल लेकर आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़त किया कि हे उमर तुम क्या लेकर आए हो तो आप ने उत्तर दिया। हे रसूलुल्लाह मैं अपने माल का आधा भाग ले आया हूँ। इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी पूछा गया तो आपने उत्तर दिया कि हे रसूलुल्लाह मैं अपना समस्त माल ले आया हूँ और घर में अल्लाह और अल्लाह के रसूल का वर्णन छोड़ आया हूँ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद के पास जायदाद बहुत थोड़ी थी। और अत्यन्त तंगी के साथ बाल बच्चों का पेट पालते थे लेकिन एक वक़्त ऐसा आया कि इस्लाम के लिए माल की आवश्यकता थी जिसे पूरा करने के लिए चंदा की तहरीक की गई। हज़रत अब्दुल्लाह के पास जबकि माल की कमी थी लेकिन दिल में ईमानी जोश मौजूद था इस से मजबूर हो कर आपके पास जो कुछ भी था आपने सब का सब ख़ुदा तआला की राह में दे दिया। उनके बाप ने आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शिकायत करते हुए वर्णन किया तो आपने उनको बुला कर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारा सदक़ा क़बूल कर लिया है लेकिन अब तुम्हारे बाप की जायदाद के तौर पर तुमको वापस करता है। तुम उस को क़बूल कर लो।

हज़रत तल्हा ज़ियल्लाहु अन्हो ने सतरह अठारह साल की उमर में इस्लाम क़बूल किया था। जंग-ए-बदर में ख़ूब जांनिसारी के साथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए डटे रहे। लेकिन माली क़ुर्बानी के लिहाज़ से भी आप किसी से पीछे न थे। अह्द कर रखा था कि ग़ज़वात के मसारिफ़ के लिए अपना माल पेश किया करेंगे। इसलिए इस अह्द को इस्तक़लाल और इस्तेक़ामत के साथ निभाया। ग़ज़वा तबूक के अवसर पर जब मुस्लमान आम तौर पर तंगी में मुबतला थे और सामान जंग की फ़राहमी के लिए सख़्त दिक़्क़त दरपेश थी, आपने एक बड़ी रक़म पेश की। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आप को फ़य्याज़ की उपाधि दी।

जब क़ुरआन-ए-करीम की आयत-ए-करीमा مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ कुछ आदमी ऐसे हैं जिन्होंने ख़ुदा से जो कुछ अह्द किया उस को सच्चा कर दिखाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तल्हा ज़ियल्लाहु अन्हो तुम भी उन लोगों में से हो। और जब आयत لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ का नुज़ूल हुआ तो उस वक़्त भी काबुल तक़लीद नमूना पेश करते हुए बीरहा का बाग़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने जवानी के वक़्त इस्लाम क़बूल किया। आप बहुत बड़े ताजिर और बहुत बड़े मालदार थे लेकिन दौलत से प्यार बिल्कुल नहीं था बल्कि उसे राह-ए-ख़ुदा में ख़र्च करने में ही ख़ुशी महसूस करते थे। एक दफ़ा उनका तिजारती क़ाफ़िला मदीना आया तो इस में सात सौ ऊंटों पर गेहूँ, आटा और अन्य खाने पीने की वस्तुएं थीं। चूँकि यह एक ग़ैरमामूली बात थी। समस्त मदीना में चर्चा होने लगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे अब्दुर्रहमान जन्नत में रेंगते हुए दाख़िल होंगे। हज़रत अब्दुर्रहमान तक भी यह बात पहुंची। तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि आप गवाह रहें मैंने यह पूरा क़ाफ़िला मा अस्बाब-ओ-सामान यहाँ तक कि कुजावे तक राह-ए-ख़ुदा में वक़्फ़ कर दिए।

वफ़ात के वक़्त भी आपने पच्चास हज़ार दीनार और एक हज़ार घोड़े राह-ए-ख़ुदा में वक़्फ़ करने की वसीयत की। इसके अतिरिक्त उस वक़्त तक बदरी सहाबियों में से जो जो ज़िंदा थे उनमें से प्रत्येक के लिए चार चार-सौ दीनार की वसीयत की। वर्णन किया जाता है कि इस वक़्त तक एक सौ बदरी सहाबी ज़िंदा थे। और सबने इस वसीयत से बख़ुशी फ़ायदा उठाया यहाँ तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु

ने भी अपना हिस्सा लिया।

हज़रत उस्मान ने 34 साल की उमर में इस्लाम क़बूल किया। आप बहुत बड़े दौलतमंद थे। मक्का से हिज्रत करके जब मुस्लमान मदीना में आए तो पानी की सख़्त तकलीफ़ थी। केवल एक कुँआं (बीर रोमा) ऐसा था जिसका पानी उम्दा और मीठा था। परन्तु वह एक यहूदी की मिल्कियत था जो पानी पैसों में बेचा करता था। उधर सहाबा की माली हालत आम तौर पर ऐसी नहीं थी कि मूल लेकर पानी पी सकें। इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह कुँआं उसके यहूदी मालिक से बीस हज़ार दिरहम में ख़रीद कर वक़्फ़ कर दिया।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ग़ज़वा तबूक की तैयारी का हुक्म दिया तो माली तंगी हद से ज़्यादा थी। और सामान जंग का मुहय्या करना सख़्त मुश्किल हो रहा था। आपने सहाबा किराम को माली सहायता की तहरीक फ़रमाई। तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस हज़ार मुजाहेदीन को अपने ख़र्च से आरास्ता किया और उनके लिए मामूली से मामूली चीज़ भी आपके रुपया से ख़रीदी गई। इसके इलावा एक हज़ार ऊंट, सत्तर घोड़े और सामान रसद के लिए एक हज़ार दीनार नक़द पेश किए।

हज़रात ! आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा के साथ साथ सहाबियात ने भी माली क़ुर्बानी करने में कोई कसर उठा नहीं रखी उन्होंने अपने जिगर गोशों को जहां इस्लाम की सिर बुलंदी के लिए पेश किया वहीं अपनी महबूब तरीन वस्तु अर्थात माल ज़ेवरात को राह-ए-ख़ुदा में बिला सोचे खर्च किया। उम्मुल मोमेनीन हज़रत सोदाह रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लंबी हाथों वाली मुझ से जन्नत में सबसे पहले मिलेगी अर्थात् अल्लाह की राह में सबसे ज़्यादा ख़र्च करने वाली। इस से हमें मालूम होता है कि ख़ुदा की राह में ख़र्च करना ख़ुदा और उसके रसूल की क़ुरबत और मय्यत का माध्यम बन जाती है ।

आदरणीय श्रोताओं! यह क़ुर्बानी की भावना जब तक जांनिसार सहाबा और आपके अनुयाई में क़ायम रहा तब तक मुस्लमानों में प्रगतियों का दौर जारी रहा और अल्लाह तआला की सहायता उन्हें हासिल होती रही। आपके आने के तीन सौ साल बाद एक प्रगति का युग शुरू हो गया जिसकी ज़ुल्मतें एक हज़ार साल के अरसा में अपनी इंतिहा को पहुंच गईं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़रमान के अनुसार इस्लाम का केवल नाम बाक़ी रह गया और क़ुर्बानी की रूह ख़त्म हो गई और हक़ीक़ी ईमान दुनिया से उठ कर सुरय्या सितारे तक जा पहुंचा तब ख़ुदा तआला की रहमत ने जोश मारा और क़ुरआन-ए-करीम की सूरत मुहम्मद में वर्णन की गई इस वाज़िह भविष्यवाणी के अनुसार وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْا اَمْثَالَكُمْ ی अर्थात् हे मुसलमानो अगर तुम इस्लाम की ज़िंदगी के लिए क़ुर्बानी से फिर गए तो ख़ुदा तआला तुम्हारे बदले एक दूसरी क़ौम को ले आएगा। फिर वे तुम्हारी तरह क़ुर्बानी से मुँह फेरने वाले नहीं होंगे। इस वाज़ेह भविष्यवाणी के अनुसार अल्लाह तआला ने चौधवीं सदी के सिर पर इस मसीह मुहम्मदी व महदी अलैहिस्सलाम को दुनिया में भेजा जिसके ज़रीया इस्लाम का आलमगीर ग़लबा मुक़द्दर था। आप ऐसे वक़्त में आए जबकि दुनिया के चारों तरफ़ अन्धकार और गुमराही का दौर दौरा था और झूठी ताकतें इस्लाम को कमज़ोर करने की प्रत्येक सम्भव कोशिश में लगी हुई थीं और लाखों मुस्लमान ईसाइयत और अन्य धर्मों के षड्यंत्र में फंस रहे थे और इस्लाम जो सारी दुनिया को मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नूर से मुनव्वर करने के लिए आया था इस नूर को मिटाने की कोशिश में थे ऐसे नाज़ुक दौर में क़ादियान की गुमनाम बस्ती से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ सादिक़ और आप पर सबसे ज़्यादा दुरूद-ओ-सलाम भेजने वाले सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का ज़हूर हुआ। आपको अल्लाह तआला ने यह ख़ुशख़बरी दी कि मैं तेरे नाम को इज़्ज़त से दुनिया में फैलाऊँगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे तथा काम की तकमील के लिए अल्लाह तआला ने यह भी बशारत दी कि मैं तुझे जां निसारों और वफ़ा शआरों की एक मुक़द्दस जमाअत भी अता करूँगा फिर अल्लाह तआला ने यह भी बिशारत दी कि तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम अपनी तरफ़ से इलहाम करेंगे।

मुबारक वे जो अब ईमान लाया
सहाबा से मिला जब मुझको पाया

सिद्दीक़ी रूह रखने वाले हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु जो सबसे पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करके जमाअत अहमदिया में दाख़िल हुए बाद में अपनी बेमिसाल इख़लास और क़ुर्बानी के नतीजे में ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो हुए। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर फ़रमाते हैं :

"मैं आपकी राह में क़ुर्बान हूँ मेरा जो कुछ है मेरा नहीं आपका है हज़रत पीर-ओ-मुर्शिद मैं कमाल रास्ती से अर्ज़ करता हूँ कि मेरा सारा माल-ओ-दौलत अगर दीनी इशाअत में ख़र्च हो जाए तो मैं मुराद को पहुंच गया।"

(फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 36)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आपकी ख़िदमात का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि :

"मैं उनकी कुछ दीनी ख़िदमतों को जो अपने पवित्र धन के ख़र्च से इस्लाम की बुलंदी के लिए वह कर रहे हैं हमेशा हसरत की नज़र से देखता हूँ कि काश वह ख़िदम्तें मुझ से भी अदा हो सकतीं .... उन्हें मेरी राह में माल क्या बल्कि जान और इज़्ज़त तक दरेग़ नहीं।"

(फ़तह इस्लाम,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 35)

हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब की तरह क़ुर्बानी और ख़िदमत की भावना रखने वाले बेशुमार बुज़ुर्गान थे सबकी यही तमन्ना थी कि काश उनके सारे माल और दौलत इलाही दीन की इशाअत में खर्च हो जाएं। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुद फ़रमाते हैं :

"मैं हलफ़न कह सकता हूँ कि कम से कम एक लाख आदमी मेरी जमाअत में ऐसे हैं कि सच्चे दिल से मेरे पर ईमान लाए हैं और आमाल-ए-सालेहा बजा लाते हैं मैं देखता हूँ कि मेरी जमाअत ने जिस क़दर नेकी और सलाहियत में तरक़्क़ी की है यह भी एक चमत्कार है। हज़ारो आदमी दिल से फ़िदा हैं अगर आज उनको कहा जाए कि अपने समस्त अम्वाल से दस्त बर्दार हो जाओ तो वे दस्त-बरदार हो जाने के लिए तैयार हैं।"

(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 150 रिवायत नंबर 157)

इसलिए तारीख़ अहमदियत में ऐसी बेशुमार क़ुर्बानी की मिसालें मौजूद हैं जिन्हों ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए प्रत्येक किस्म की दीनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपना तन-मन धन हुज़ूर अलैहिस्सलाम के क़दमों में निछावर कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत है कि एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लुधियाना में एक ज़रूरी विज्ञापन के छपवाने के लिए 60/- रुपय की आवश्यकता पेश आई। उन्ही दिनों आप के बड़े सहाबी हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लुधियाना तशरीफ़ लाए हुए थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने आपको बुलाया और फ़रमाया कि इस वक़्त यह अहम आवश्यकता दरपेश है क्या आपकी जमाअत इस क़दर रुपया का इंतिज़ाम कर सकेगी। आपने अर्ज़ किया हज़रत इन शा अल्लाह कर सकेगी। मैं जा कर रुपय लाता हूँ इसलिए आप फ़ौरन कपूरथला गए और जमाअत के किसी फ़र्द से वर्णन करने किए बग़ैर अपनी बीवी का एक ज़ेवर बैच कर के साठ रुपय हासिल किए और हज़रत साहिब की ख़िदमत में ला कर पेश कर दिए ।

(अस्हाब-ए-अहमद, भाग 4, पृष्ठ 97 मफ़हूमन)

यह रिवायत लंबी है चूँकि मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब अकेले यह ख़िदमत बजा लाए जमाअत कपूरथला के लोगों को शामिल होने की तहरीक नहीं की इस लिए इस वाक़िया का इलम होने पर मुंशी अरोड़े ख़ां साहिब जो कि इसी जमाअत के मैंबर थे छः माह तक मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब से नाराज़ रहे। कि आपने हमें माली क़ुर्बानी से वंचित रखा। यह वह फ़िदाई थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अता हुए।

हज़रत अम्माँ-जान सय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में आता है कि आपने मीनारतुल मसीह के निर्माण के लिए एक हज़ार रुपय का वादा लिखवाया और अपना दिल्ली का एक मकान बेच कर यह रक़म अदा कर दी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मीनार्तुल मसीह के निर्माण की तहरीक फ़रमाई हज़रत मियां शादी ख़ान साहब सयालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु ने चारपाइयों के इलावा अपने घर का सारा सामान तीन सौ रुपय में बैच कर पूरी रक़म हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत अक़्दस में पेश कर दी। जिस पर हज़रत-ए-अक़दस ने ख़ुशनुदी का इज़हार करते हुए फ़रमाया कि "आपने तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का नमूना दिखाया।" यह सुनते ही आप वापस घर गए और चारपाइयाँ भी फ़रोख़त करके सारी रक़म चंदा में दे दी।

(तारीख़-ए-अहमदियत, भाग 2, पृष्ठ 147)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मियां शादी ख़ान लकड़ी बैचेन वाले, स्यालकोट से हैं। अभी वह एक काम में डेढ़ सौ रुपया चंदा दे चुके हैं और अब इस काम के लिए दौ सौ रुपया चंदा भेज दिया है और यह वह व्यक्ति है कि अगर उसके घर का समस्त समान देखा जाए तो शायद समस्त जायदाद पच्चास रुपया से ज़्यादा न हो। उन्होंने अपने पत्र में लिखा है कि "चूँकि सूखे के दिन हैं और दुनयावी तिजारत में साफ़ तबाही नज़र आती है तो बेहतर है कि हम दीनी तिजारत कर लें इसलिए जो कुछ अपने पास था सब भेज दिया"और वास्तव में वह काम किया जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया था।" (मजमूआ इश्तेहारात, भाग 3, पृष्ठ 79 मुद्रित क़ादियान 2019 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में फ़रमाते हैं कि उनकी माली क़ुर्बानियां इस हद तक बढ़ी हुई थीं कि हज़रत साहिब ने उनको तहरीरी सनद दी कि आपने सिलसिला के लिए इस क़दर माली क़ुर्बानी की है कि आइन्दा आपको क़ुर्बानी की आवश्यकता नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वह ज़माना मुझे याद है जबकि आप पर मुक़द्दमा गुरदासपुर में हो रहा था और इस में रुपया की आवश्यकता थी। हज़रत साहिब ने दोस्तों में तहरीक भेजी कि चूँकि अख़राजात बढ़ रहे हैं, लंगर ख़ाना दो जगह पर हो गया है। एक क़ादियान में और एक यहां गुरदासपुर में इस के इलावा और मुक़द्दमा पर ख़र्च हो रहा है इसलिए दोस्त इमदाद की तरफ़ तवज्जा करें। जब हज़रत साहिब की तहरीक डाक्टर साहिब को पहुंची तो इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि इसी दिन उनको तनख़्वाह 450 रुपय मिली थी वह सारी की सारी तनख़्वाह उसी वक़्त हज़रत साहिब की ख़िदमत में भेज दी। एक दोस्त ने सवाल किया कि आप कुछ घर की ज़रूरियात के लिए रख लेते तो उन्होंने कहा कि ख़ुदा का मसीह लिखता है कि दीन के लिए आवश्यकता है तो फिर और किस के लिए रख सकता हूँ?"

(अनवारुल उलूम, भाग 9 पृष्ठ 403)

इसी तरह हज़रत साहिबज़ादा पीर मंज़ूर अहमद साहिब के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बदुल हक़ साहिब ऐडवोकेट तहरीर फ़रमाते हैं कि "हज़रत साहिबज़ादा पीर मंज़ूर अहमद साहिब क़ायदा यस्सर्नल क़ुरआन के मूजिद थे इस क़ायदा को बहुत मक़बूलियत हासिल हुई। सैंकड़ों रुपय प्रति महीना उस ज़माना में आपकी आमद हुई थी लेकिन आपका दीन के लिए क़ुर्बानी का यह हाल था कि सिर्फ 30 रुपय माहवार अपने अख़राजात के लिए रखते और बाक़ी सब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में इशाअत क़ुरआन-ए-करीम और इशाअत दीन के लिए भेज देते। 1940 ई. के बाद जब गिरानी शुरू हो गई तो 40/- रुपय माहवार रखना शुरू कर दिए और एक साल में दस हज़ार रुपय ख़िदमत दीन के लिए दिया।"

(माहनामा अंसारुल्लाह रब्वाह अप्रैल 1969 ई.)

सामेईन किराम अत्यधिक नाज़ुक और मुश्किल हालात में, दिल्ली भावनाओं को क़ुर्बान करते हुए, राह-ए-ख़ुदा मैं क़ुर्बानी पेश करना कोई मामूली बात नहीं। इसके बेशुमार नमूने तारीख़ अहमदियत में जगह जगह जगमगाते नज़र आते हैं। हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पेशावरी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में एक वाक़िया यूं वर्णन किया है कि

"वज़ीराबाद के शेख़ ख़ानदान का एक नौजवान फ़ौत हो गया। इसके पिता ने कफ़न के लिए 200 रुपय रखे हुए थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लंगर ख़ाना के अख़राजात के लिए तहरीक फ़रमाई। उनको भी पत्र गया तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को रक़म बुझवाने के बाद लिखा कि मेरा नौजवान लड़का ताऊन से फ़ौत हुआ है मैंने उस की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन के वास्ते 200 रुपय तजवीज़ किए थे जो इरसाल ख़िदमत करता हूँ और लड़के को उस के लिबास में दफ़न करता हूँ।" (रिसाला ज़हूर अहमद मौऊद, पृष्ठ 70 से 71 मुद्रित 30 जनवरी 1955 ई.)

हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं : मुझे वह नज़ारा नहीं भूलता और नहीं भूल सकता कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर अभी चंद माह ही गुज़रे थे कि एक दिन बाहर से मुझे किसी ने आवाज़ देकर बुलवाया और ख़ादिमा या किसी बच्चे ने बताया कि दरवाज़े पर एक आदमी खड़ा है और वह आपको बुला रहा है। मैं बाहर निकला तो हज़रत मुंशी अरोड़े ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए थे। वह बड़े तपाक से आगे बढ़े, मुझसे हाथ मिलाया और इस के बाद उन्होंने अपनी जेब से दौ या तीन पौंड निकाले और मुझे कहा कि यह अम्माँ-जान को दे दें और यह कहते ही उन पर ऐसी रिक़्क़त तारी हुई कि वह चीख़ें मार कर रोने लग गए और उनके रोने की हालत इस किस्म की थी कि यूं मालूम होता था जैसे बकरे को ज़िबह किया जा रहा है। मैं कुछ हैरान सा हो गया कि यह रो क्यों रहे हैं। परन्तु मैं ख़ामोश खड़ा रहा और इंतेज़ार करता रहा कि वह ख़ामोश हूँ तो उनसे रोने की वजह दरयाफ़त करूँ ... जब उनको ज़रा सब्र आया तो मैंने उनसे पूछा कि आप रोय क्यों हैं। वह कहने लगे में ग़रीब आदमी था। परन्तु जब भी मुझे छुट्टी मिलती फिर क़ादियान आने के लिए चल पड़ता था सफ़र का बहुत सा हिस्सा में पैदल ही तै करता था ताकि सिलसिला की ख़िदमत के लिए कुछ पैसे बच जाएं परन्तु फिर भी रुपया डेढ़ रुपया ख़र्च हो जाता। यहां आकर जब मैं अमीरों को देखता कि वे सिलसिला की ख़िदमत के लिए बड़ा रुपया ख़र्च कर रहे हैं तो मेरे दिल में ख़्याल आता कि काश मेरे पास भी रुपया हो और मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में बजाय चांदी का तोहफ़ा लाने के सोने का तोहफ़ा पेश करूँ। आख़िर मेरी तनख़्वाह कुछ ज़्यादा हो गई । (उस वक़्त उनकी तनख़्वाह शायद बीस पच्चीस रुपया तक पहुंच गई थी) और मैंने प्रत्येक महीने कुछ रक़म जमा करनी शुरू कर दी और मैंने अपने दिल में यह नीयत की कि जब यह रक़म उस मिक़दार तक पहुंच जाएगी जो मैं चाहता हूँ तो मैं उसे पौंड की सूरत में तबदील कर के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश करूगां ... और पौंड मेरे पास जमा हो गए तो ... यहां तक वह पहुंचे थे कि फिर उन पर रिक़्क़त की हालत तारी हो गई और वह रोने लग गए। आख़िर रोते-रोते उन्होंने इस फ़िक़रे को इस तरह पूरा किया कि जब पौंड मेरे पास जमा हो गए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो गई।

यह इख़लास का कैसा शानदार नमूना है कि एक व्यक्ति चंदे भी देता है। क़ुर्बानियां भी करता है। महीना में एक दफ़ा नहीं दो दफ़ा नहीं बल्कि तीन तीन दफ़ा जुमा पढ़ने के लिए क़ादियान पहुंच जाता है। सिलसिला के अख़बार और किताबें भी ख़रीदता है। एक मामूली सी वेतन होते हुए जबकि आज इस तनख़्वाह से बहुत ज़्यादा वेतन वसूल करने वाले इस क़ुर्बानी का दसवाँ बल्कि बीसवां हिस्सा भी क़ुर्बानी नहीं करते। उसके दिल में यह ख़्याल आता है कि अमीर लोग जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सोना पेश करते हैं तो मैं उनसे पीछे क्यों रहूं। इसलिए वह एक अत्यन्त ही थोड़े वेतन में से माहवार कुछ रक़म जमा करता और एक अरसा दराज़ तक जमा करता रहता है। नहीं मालूम इस दौरान में उस ने अपने घर में क्या-क्या तंगियाँ सहन की होंगी। क्या-क्या तकलीफ़ें थीं जो उसने ख़ुशी से झेली होंगी। केवल इस लिए कि वह हज़रत मसीह मौऊद आ की ख़िदमत में अशर्फ़ियां पेश कर सके। परन्तु जब उसकी इच्छा के पूरा होने का वक़्त आता है तो अल्लाह तआला की हिक्मत उस को इस रंग में ख़ुशी हासिल करने से वंचित कर देती है जिस रंग में वह उसे देखना चाहता था।

(अस्हाब-ए-अहमद, भाग 4 पृष्ठ 74 से 76)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ऐसा ही हमारे दिल्ली मुहिब मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही जो इस सिलसिला की सहायता के लिए उम्दा उम्दा संकलनों में सरगर्म हैं और साहिबज़ादा पीर-जी सिराजुल हक़ साहिब ने तो हज़ारों मुरीदों से सम्बन्ध तौड़ करके उस जगह की दरवेशाना ज़िंदगी क़बूल की और मियां अब्दुल्लाह साहिब सनोरी और मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमीरज़ियल्लाहु अन्हु और मुबारक अली साहिब सयालकोटी और क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ी कोटि और मुंशी चौदहरी नबी-बख़्श साहिब बटाला ज़िला गुरदासपूरा, और मुंशी जलालुद्दीन साहिब बिलानी इत्यादि लोगों अपनी अपनी ताक़त के अनुसार ख़िदमत में लगे हुए हैं। मैं अपनी जमाअत के मुहब्बत और इख़लास पर आश्चर्य करता हूँ कि उनमें से अत्यन्त ही कम वेतन वाले जैसे मियां जमालुद्दीन और ख़ैरुद्दीन और इमामुद्दीन कश्मीरी मेरे गांव से क़रीब रहने वाले हैं। वे तीनों ग़रीब भाई भी जो शायद तीन आना या चार आना रोज़ मज़दूरी करते हैं सरगर्मी से माहवार चंदा में शरीक हैं। उनके दोस्त मियां अब्दुल अज़ीज़ पटवारी के इख़लास से भी मुझे ताज्जुब है कि बावजूद क़िल्लत मआश के एक दिन सौ रुपया दे गया कि मैं चाहता हूँ कि ख़ुदा की राह में ख़र्च हो जाए। वह सौ रुपया शायद इस ग़रीब ने कई बरसों में जमा किया होगा। परन्तु लिल्लाहि जोश ने ख़ुदा की रज़ा का जोश दिलाया।" (ज़मीमा अंजाम-ए-आथम, रुहानी खज़ाएन, भाग 11 पृष्ठ 313 से 314 हाशिया)

दीन की राह में माली क़ुर्बानी की एक अज़ीम और शानदार मिसाल हज़रत मसीह पाक अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब की है। लंदन मिशन में सन साठ की दहाई में यह तजवीज़ चिली कि जमाअत अहमदिया बर्तानिया के मर्कज़ में मौजूद दो इमारतों को जो काफ़ी पुरानी हो चुकी थीं गिरा कर

एक बड़ा कम्पलैक्स बनाया जाए जिसमें एक बड़ा हाल, दफ़्तिर, दो बड़े रिहायशी मकान और एक छोटा रिहायशी फ़्लैट हो। इस तामीराती मन्सूबा के लिए जमाअत के पास उस वक़्त मतलूबा एक लाख पाऊंड की रक़म मौजूद नहीं थी। बहुत सोच विचार और कोशिश के बाद जब कोई सूरत न बन सकी तो हज़रत चौधरी साहिब से दरख़ास्त की गई कि क्या आप यह रक़म मुहय्या फ़र्मा सकते हैं जो इसके बाद आपको क़िस्त वार वापस कर दी जाएगी। आपने इस पर रजामंदी का इज़हार फ़रमाया। क़ुरआन तालीम के अनुसार इस ग़रज़ से एक मुआहिदा तजवीज़ किया गया कि हज़रत चौधरी साहिब जमाअत को एक लाख पाऊंड अदा करेंगे और जमाअत एक वक़्त मुक़र्ररा के अंदर उसकी वापसी की ज़िम्मेदार होगी। एक शाम मुआहिदा की मुजव्वज़ा तहरीर चौधरी साहिब को दी गई। उन्होंने फ़रमाया कि मैं बग़ौर मुताला करने के बाद दस्तख़त कर के कल दे दूँगा।

अगली सुबह चौधरी साहिब ने फ़रमाया कि मैंने इस बारे में सोचा और दयानतदारी से इस पर ग़ौर किया तो मेरे नफ़्स ने मुझ से कहा कि ज़फ़र ख़ान! आज तुम जो कुछ हो यह अहमदियत की बदौलत हो। तुम ने जो कुछ पाया है सारे का सारा इसी जमाअत का फ़ैज़ान है। क्या अब तुम इसी मोहसिन जमाअत को एक रक़म क़र्ज़ के तौर पर देना चाहते हो? मेरे नफ़्स ने मुझे बहुत मलामत की और मैं अपने इरादा पर बहुत शर्मसार हुआ और बहुत इस्तग़फ़ार किया। उसी लम्हा मैंने यह फ़ैसला कर लिया कि मतलूबा रक़म बतौर क़र्ज़ नहीं बल्कि एक आजिज़ाना भेंट के तौर पर जमाअत की ख़िदमत में पेश करूँगा। यह फ़रमाते हुए आपने मुआहिदा की तहरीर फाड़ दी और एक लाख पाऊंड का चैक उस वक़्त जमाअत के हवाला कर दिया। और साथ ही यह दरख़ास्त भी की कि मेरी इस अदायगी का हज़रत ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्लाह के इलावा किसी और व्यक्ति से मेरी ज़िंदगी में कदापि वर्णन न किया जाए। क़ुर्बानी, आजिज़ी और इख़लास का क्या शानदार उदाहरण है!

हज़रत मसीह पाक अलैहिस्सलाम के सहाबा में माली क़ुर्बानीयों का जज़बा ऐसा हो चुका था कि उसके नए से नए अंदाज़ इख़तेयार फ़रमाते। एक छोटी सी मिसाल पेश करता हूँ जिसमें बेपनाह जज़बा क़ुर्बानी झलकता नज़र आता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी साई दीवान शाह साहिब अपने बार-बार क़ादियान आने की वजह यूं वर्णन हैं:

"मैं चूँकि ग़रीब हूँ। चंदा तो दे नहीं सकता। क़ादियान जाता हूँ ताकि मेहमान ख़ाना की चार पाई बुन आऊँ और मेरे सिर से चंदा उतर जाये।"

(अस्हाब-ए-अहमद, भाग 13- पृष्ठ 9)

हज़रत बाबू फ़क़ीर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु अमृतसर में थे कि हुज़ूर की तरफ़ से चंदा लेने वाले पहुंच गए नक़द रक़म तो नहीं थी आपके पास उस वक़्त कनस्तर में आध सेर के क़रीब आटा था। आपने वही पेश कर दिया और सारी रात आप और आपके अहल-ओ-अयाल ने फ़ाक़ा से गुज़ार दी।

माली क़ुर्बानी के मैदान में जो मार्ग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने रक़म किए उनकी नज़ीर मज़ाहिब की तारीख़ में नहीं मिलती। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इक़तेदा में सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने जानी और माली क़ुर्बानियां पेश कीं जिन्हें अल्लाह तआला ने न केवल क़बूल फ़रमाया बल्कि क़ुरआन-ए-मजीद में इमतेयाज़ी अलक़ाब से नवाज़ा कि رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ अल्लाह तआला उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी थे। क्या शान है उन पाक वजूदों की जिनके बारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (اَصْحَابِي كَالنُّجُوْمِ بِأَيِّهِم اقتديتُم اهتديتُم) अर्थात् मेरे सहाबा की मिसाल सितारों की मानिंद है तुम उनमें से जिस किसी की पैरवी करोगे हिदायत पाओगे।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में मोमिनीन को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है कि اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (सूरत अल् तौबा : 112) "निसंदेह अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके अम्वाल ख़रीद लिए हैं ताकि कि उसके बदला में उन्हें जन्नत मिले।"

जिस इन्सान को सादिक़ अल् वाऊद ख़ुदा तआला की तरफ़ से जीते-जी जन्नत की बशारत मिल जाए वे यक़ीनन अपनी मंज़िल को पा गया। इसी आयत के आख़िरी हिस्सा में अल्लाह-तआला ने माली क़ुर्बानियां करने वाले मुजाहेदीन को कितने क़तई शब्द में बशारत दी है कि अपने ख़ून पसीना से कमाया हुआ रिज़्क़-ए-हलाल को मेरी रज़ा की ख़ातिर क़ुर्बान करने वालो! मैं तुम्हें कहता हूँ : اسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (सूरः अल्तौबा : 112) कि तुम अपने इस सौदे पर ख़ुश हो जाओ जूतम ने अपने साथ किया है और यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

हमारे ख़ुदावंद रहमान और रहीम का हम पर किस क़दर एहसान है कि उसने हमें पैदा किया, उसने ज़िंदगी दी, उसने माल कमाने की ताक़त और तौफ़ीक़ अता की और जब उसके फ़ज़ल और उसकी इनायत से कमाई हुई दौलत का एक हिस्सा उसी की ख़ातिर क़ुर्बान किया जाता है तो वे दयालु ख़ुदा इतना ख़ुश होता है कि जन्नत की बशारत अता फ़र्माता है। कोई संदेह नहीं कि एक बंदा मोमिन के लिए इस से बढ़कर और कौन सी नेअमत है जो फ़ौज़-ए-अज़ीम कहला सकती है? हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

यह ज़र व माल तो दुनिया में ही रह जाएंगे
हश्र के रोज़ जो काम आए वह ज़र पैदा कर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात में से दो मुख़्तसर रूह-परवर इक़तेबासात पेश हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"यह ज़ाहिर है कि तुम दो चीज़ों से मुहब्बत नहीं कर सकते और तुम्हारे लिए सम्भव नहीं कि माल से भी मुहब्बत करो और ख़ुदा से भी, केवल एक से मुहब्बत कर सकते हो। अतः ख़ुश-क़िस्मत वह व्यक्ति है कि ख़ुदा से मुहब्बत करे और अगर कोई तुम में से ख़ुदा से मुहब्बत करके उस की राह में माल ख़र्च करेगा तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि उस के माल में भी दूसरों की निसबत ज़्यादा बरकत दी जाएगी क्योंकि माल ख़ुद बख़ुद नहीं आता बल्कि ख़ुदा के इरादा से आता है।" (इश्तेहारात, भाग 3 पृष्ठ 497 मुद्रित रब्वाह 1989 ई.)

तथा फ़रमाया : "हर एक शख़्स जो स्वयं को बैअत वालों में दाख़िल समझता है उस के लिए अब वक़्त है कि अपने माल से भी इस सिलसिला की ख़िदमत करे ... प्रत्येक बैअत कनुंदा को जिनती अधिक सम्भव हो सहायता देनी चाहिएता ख़ुदा तआला भी उन्हें सहायता दे। अगर बिला नागा हर महीने उनकी सहायता पहुँचती रहेगी तो थोड़ी सहायता हो तो इस सहायता से बेहतर है जो मुद्दत तक फ़रामोशी इख़तियार कर के फिर किसी वक़्त अपने ही ख़्याल से की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति का सिदक़ उसकी ख़िदमत से पहचाना जाता है। अज़ीज़ो यह दीन के लिए और दीन की अग़राज़ के लिए ख़िदमत का वक़्त है। इस वक़्त को ग़नीमत समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा।"

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 83)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "यह ज़माना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना है इस में एक जिहाद माली क़ुर्बानियों का जिहाद भी है। क्योंकि उस के बग़ैर न इस्लाम के दिफ़ा में लिटरेचर शाय हो सकता है, न क़ुरआन-ए-करीम के विभिन्न भाषाओँ में अनुवाद हो सकते हैं, न ये अनुवाद दुनिया के कोने कोने में पहुंच सकते हैं। न मिशन खोले जा सकते हैं, न विज्ञापन प्रकाशित हो सकते हैं, मुबल्लेगीन तैयार हो सकते हैं और न मुरब्बियान, मुबल्लेगीन जमाअतों में भिजवाए जा सकते हैं। न ही मसाजिद तामीर हो सकती हैं। न ही स्कूलों, कॉलिजों के ज़रीया से ग़रीब लोगों तक तालीम की सहूलतें पहुंचाई जा सकती हैं। न ही हस्पतालों के ज़रीया से दुखी इन्सानियत की ख़िदमत की जा सकती है। अतः जब तक दुनिया के समस्त किनारों तक और प्रत्येक किनारे के व्यक्ति तक इस्लाम का पैग़ाम नहीं पहुंच जाता और जब तक ग़रीब की ज़रूरतों को मुकम्मल तौर पर पूरा नहीं किया जाता उस वक़्त तक यह माली जिहाद जारी रहना है और अपनी अपनी गुंजाइश और कुशाइश के लिहाज़ से प्रत्येक अहमदी का इस में शामिल होना फ़र्ज़ है। (ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 31मार्च 2006 ई.)

पास हो माल तो दो इससे ज़कात और सदक़ा
फ़िक्र मिस्कीन रहे तुम को ग़म-ए-अय्याम न हो

आदरणीय श्रोताओं! अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है : وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (अल्त ग़ाबुन : 17) और अपने भले के लिए ख़र्च करो, और जो व्यक्ति अपने दिल को लालच से महफ़ूज़ रखा गया अतः वही सफ़लता भी पाने वाले हैं।

हज़रात! इस आयत-ए-करीमा में हमें दावत दी गई है कि हम अपनी भलाई और ख़ैरख़ाही के लिए ख़र्च करें। ख़ुदा की ज़ात तो ग़नी है उसको माल और धन की कोई हाजत नहीं। अल्लाह तआला हमें इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के मैदान में बढ़ चढ़ कर ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इस के नतीजा में हमें माली क़ुर्बानी के फ़्यूज़ और बरकात से नवाज़े। आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین ★ ★ ★

सीरत सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुमा

प्रथम दौर में से हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और अंतिम दौर में से कमरुल अम्बिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु

(मुहम्मद शरीफ़ कौसर, अध्यापक जामिआ अहमदिया क़ादियान)

प्रिय श्रोताओं ! विनीत को इस वक़्त "सीरत सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु प्रथम दौर में से हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और अंतिम दौर में से कमरुल अम्बिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब" की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत करनी हैं।

जीवनी हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

नुबुव्वत के स्थान का यह मोती रात्री का चराग़, सुलह का शहज़ादा, फ़ित्ना फ़साद का अंत करने वाला, दोनों लोकों के सरदार की भविष्यवाणी को पूरा करने वाला, नवासा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली और हज़रत फ़ातम अल् ज़ोहरा का पुत्र सन् हिज्री के तीसरे वर्ष रमज़ानुल मुबारक के महीना में मदीना में पैदा हुए और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके कानों में अज़ान दी।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अबी तालिब वर्णन करते हैं जब हज़रत हसन पैदा हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मेरे बेटे को मुझे दिखाओ तुमने उसका नाम क्या रखा। मैंने अर्ज़ की कि मैंने उसका नाम हर्ब रखा है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह हर्ब नहीं है इस का नम हस्न है ।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारफ़तिल सहाबा अजीज़ुद्दीन बिल असीर अबी हसन अली बिन मुहम्मद अल् जुर्ज़ी, भाग प्रथम, वर्णन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अली, पृष्ठ 557-556 दारुल फ़िकर मुद्रित बेरूत लुबनान प्रकाशन 2003 ई.)

बचपन और तालीम-ओ-तर्बीयत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ وَاَحِبَّ مَنْ یُّحِبُّهٗ हे अल्लाह! मैं उस से मुहब्बत करता हूँ तू भी उस से मुहब्बत कर और जो उस से मुहब्बत करता है उस से भी मुहब्बत कर।

(सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ायल अल् सहाबा, बाब मिन फ़ज़ायल अल्हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस 4431 भाग 13 पृष्ठ 51अनुवाद अज़ नूर फाऊंडेशन)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शफ़क़त-ओ-मुहब्बत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे हाल में देखा कि आप हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी गर्दन पर बिठा कर ले जा रहे थे। वह कहते हैं कि एक आदमी ने यह देखा तो कहा कि हे लड़के तुम्हारी सवारी क्या ही ख़ूब है इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया और सवार भी कितना अच्छा है।

(अल् मुस्तद्रिक लिल्हाकिम मारफ़तिस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु, बाब मिन फ़ज़ायल अल्हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस 4859 दारुल हरमैन मुद्रित तवाज़ीग 1997 ई.)

हज़रत बरीरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमसे ख़िताब फ़र्मा रहे थे कि हज़रत हसन और हुसैन अलैहिस्सलाम गिरते पड़ते आए और इन दोनों ने सुर्ख़ करते पहन रखे थे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मंच पर से उतरे और इन दोनों को उठाया और अपने सामने बिठा लिया और फ़रमाया कि अल्लाह ने सच्च ही फ़रमाया है : اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ (अल् तगाबुन : 15) कि तुम्हारे अम्वाल और औलादें आज़माईश का ज़रीया हैं। मैंने इन दोनों बच्चों को देखा कि ये चल रहे हैं और गिर पड़ते हैं तो मुझसे सब्र नहीं हो सका और मैंने अपनी बात काटी और इन दोनों को उठा लिया।

(जामे अल् तिमज़ी किताब मनाकिब बाब حلمهٖ ودفعه ﷺ الحسن والحسین بین یدیه हदीस नंबर 3774 दारुल सलाम नशर तौज़ीग, अल् रियाज़)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हसन रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई व्यक्ति समान नहीं था।

(बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब अल्हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस 3752)

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिंबर पर सुना और हसन रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहलू में थे। कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों की तरफ़ देखते कभी हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मेरा यह बेटा सरदार होगा।

आशा है कि अल्लाह इस की वजह से मुस्लमानों के दो गिरोहों में सुलह करवा देगा। (सही अल् बुखारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाब उन्नबी(स.अ .व.), बाब मनाक़िब हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस नंबर 3746)

एक सहाबी कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक दफ़ा नमाज़ पढ़ा रहे थे कि जब आप सजदा में गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत देर कर दी और सजदा बहुत लंबा हो गया ये देखकर मेरे दिल में वहम उठना शुरू हो गया कि ख़ुदा-न-ख़ासता कोई हादिसा न हो गया हो। इसलिए मैंने सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि हज़रत हसन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गर्दन पर इस तरह बैठे हैं जिस तरह कोई घोड़े पर सवार होता है। यह देखकर मैं फिर जल्दी से सजदा में चला गया। जब नमाज़ हो चुकी तो बाक़ी सहाबा ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह क्या सजदा में हुज़ूर पर कोई वह्यी नाज़िल हुई है कि इस क़दर देर हुज़ूर ने कर दी या ख़ुदा-न-ख़्वास्ता कोई तकलीफ़ हो गई थी। हमें तो सख़्त घबराहट होने लग गई थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया न कोई वह्यी नाज़िल हुई है और न ख़ुदा के फ़ज़ल से कोई तकलीफ़ हुई है। यह हमारा बेटा हमारी गर्दन पर सवारी करने बैठ गया था और हमने कहा कि चलो थोड़ी देर के लिए यह भी सवारी करले अगर उसे हटाया तो उसे तकलीफ़ होगी।

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 18 पृष्ठ 633)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में बचपन में आपने उनकी मोहब्बतों और शफ़क़तों से हिस्सा पाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने ज़माना में ऐसा ही शफ़क़त आमेज़ तर्ज़-ए-अमल रखा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में पूरे जवान हो चुके थे और जब बागियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का मुहासिरा किया तो आपने और आपके साथियों ने इस भय और उपद्रव की हालत में अत्यन्त शुजाअत-ओ-बहादुरी के साथ हमला आवरों का बचाव किया और बागियों को अंदर घुसने से रोके रखा। इस मुदाफ़ेत में ख़ुद भी बहुत ज़ख़मी हुए। सारा बदन ख़ून से रंगीन हो गया।

(सैर सहाबा अज़ मुईनुद्दीन अहमद नद्वी, भाग 4 पृष्ठ 15-14 नाशिर दायरा इस्लामियात अनारकली लाहौर) (तारीख़ अल् खुल्फ़ा लिल सियूती, पृष्ठ 124 दारुल क़ुतुब अरबी बेरूत लुबनान 1999 ई.)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद 40 हिज्री में हस्न बिन अली से ख़िलाफ़त की बैअत हुई और चंद माह बाद मुस्लमानों के ख़ून की हिफ़ाज़त के लिए, फ़ित्ना फ़साद का अंत करने के लिए ख़िलाफ़त से दसतबरदारी का ऐलान कर दिया और मुआवीया से गुज़ारा ले लिया।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी दानिस्त में बहुत अच्छा काम किया कि ख़िलाफ़त से अलग हो गए पहले ही हज़ारों ख़ून हो चुके थे। उन्होंने पसंद नहीं किया और ख़ून हों। इसलिए मुआविया से गुज़ारा ले लिया चूँकि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के इस कार्य से शीया पर चोट होती है इसलिए इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु पर पूरे राज़ी नहीं हुए। हम तो दोनों के प्रशंसक हैं। असली बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की अलग अलग शक्तियां मालूम होती हैं। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने पसंद नहीं किया कि मुस्लमानों में ख़ाना-जंगी बढ़े और ख़ून हों। उन्होंने अम्न पसंदी को मद्द-ए-नज़र रखा और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्ह ने पसंद नहीं किया कि फ़ासिक़ फ़ाजिर के हाथ पर बैअत करूँ क्योंकि इस से दीन में ख़राबी होती है।

दोनों की नीयत नेक थी। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ।

(मल्-फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 279-278)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं : इस में किस ईमानदार को कलाम है कि हज़रत इमाम हुसैन और इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुदा के बर्गुज़ीदा और साहब-ए-कमाल और साहब-ए-इफ़्फ़त और अस्मत और اَئِمَّۃُ الْھُدٰی थे । (तिरयाकुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 364 हाशिया)

इबादत

इबादत इलाही आपका महबूब तरीन मशग़ला था और वक़्त का बड़ा हिस्सा आप इस में व्यतीत फ़रमाते थे।

अमीर मुआवीया ने एक व्यक्ति से आपके हालात दरयाफ़्त किए। उसने बताया कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक नमाज़ के स्थान पर बैठे रहते फिर टेक लगाकर बैठ जाते हैं। आने जाने वालों से मिलते हैं। दिन चढ़े चाशत पढ़ कर उम्माहातुल मोमेनीन के पास सलाम करने को जाते हैं फिर घर हो कर मस्जिद चले आते हैं।

मक्का के क़ियाम में मामूल था कि अस्र की नमाज़ ख़ाना काबा में बाजमाअत अदा करते थे नमाज़ के बाद तवाफ़ में व्यस्त हो जाते। अबू सईद रावी कहते हैं कि हसन और हुसैन ने इमाम के साथ काबा में नमाज़ पढ़ी फिर हज्र-ए-असवद को बोसा देकर तवाफ़ के सात फेरे किए और दो रकात नमाज़ पढ़ी। लोगों को जब मालूम हुआ कि दोनों ख़ानवादा नबी के चशम-ओ-चिराग़ हैं तो प्रेमी चारों तरफ़ से पर्वानावार टूट पड़े और भीड़ की वजह से रस्ता रुक गया। हज़रत हुसैन इस हुजूम में घिर गए। हज़रत हसन ने एक अरकानी की सहायता से उन्हें हुजूम से छुड़ाया। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक तख़्ती पर सूरत कहफ़ लिखवाई थी रोज़ाना सोते वक़्त तिलावत फ़रमाते।

हर तरह की सवारियां रखते हुए पापियादा हज करते। इमाम नौवी लिखते हैं कि इमाम हसन ने अंसख्य हज पैदल किए। फ़रमाते थे कि मुझे ख़ुदा से हिजाब मालूम होता है कि उस से मिलूं और उस के घर पैदल न गया हूँ। (सीरत अल् सहाबा, भाग 4, पृष्ठ 38 मुसन्निफ़ मुईनुद्दीन)

माली क़ुर्बानी

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन मर्तबा अपना आधा माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया और आधा माल अल्लाह की राह में देने के विषय में भी इतनी शिद्दत इख़तियार की कि दो जूतों में से एक जूता भी ख़ैरात कर दिया और दूसरी मर्तबा पूरा माल ख़ुदा की राह में दे दिया। (ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा عزالدین بالاثیر ابی الحسن علی بن محمد الجرزی جلد اول تذکرہ حسن بن علیؓ पृष्ठ 560 दारुल फ़िकर للطباعة والنشر والتوزيع بيروت لبنان बेरूत लुबनान मुद्रित 2003 ई.)

आपकी उदारता

एक मर्तबा एक शामी व्यक्ति मदीना आया यह व्यक्ति हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में अनुचित शब्दों का प्रयोग कर रहा था उसे किसी दूर दराज़ सफ़र पर जाना था परन्तु उसके पास न ज़ाद-ए-राह था और न ही सवारी थी। इसलिए उसने मदीना वालों में से मुख़्तलिफ़ लोगों के पास अपनी हालत का शिकवा किया परन्तु कहीं कामयाबी नहीं हुई। तब एक व्यक्ति ने उसे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में बताया। वह हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी मुश्किल वर्णन की। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसी वक़्त उसके लिए सवारी का इंतिज़ाम किया और ज़ाद-ए-राह के तौर पर कुछ रक़म भी दी। लोगों ने एतराज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐसे व्यक्ति के साथ क्यों सुलूक किया जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो से और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद से द्वेष रखता है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर में फ़रमाया क्या मैं अपनी आबरू न बचाऊँ।

(तारीख़ मदीना दमिशक़ अज़ इब्ने असाकिर भाग 13 पृष्ठ 247 दारुल फ़िकर बैरूत लुबनान 1995 ई.)

एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो का मदीना के किसी खजूर के बाग़ की तरफ़ से गुज़र हुआ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि एक हब्शी गुलाम के हाथ में रोटी है। वह एक लुक़्मा ख़ुद खाता है और दूसरा कुत्ते को देता है। इस तरह उसने आधा कुत्ते को खिला दिया। आपने फ़रमाया तो कुत्ते को धुतकार क्यों नहीं देता। गुलाम ने उत्तर दिया अगर मैं इस को धुतकारु तो मेरी आँखों को इस की आँखों से शर्म महसूस होती है फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस गुलाम से पूछा तू कौन है? उसने कहा कि आबान बिन उस्मान का ग़ुलाम हूँ। आपने दरयाफ़्त फ़रमाया कि बाग़ किस का है उसने कहा अबान का। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जब तक मैं वापस नहीं आ जाता तू ने कहीं नहीं जाना। कुछ देर बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने वापस आकर ग़ुलाम को बताया मैंने तुम्हें ख़रीद लिया है अतः वह सम्मान में खड़ा हो गया और अर्ज़ की हे आक़ा! अल्लाह रसूल और आक़ा की इताअत के लिए हाज़िर हूँ। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैंने बाग़ भी ख़रीद लिया है। तुम ख़ुदा की राह में आज़ाद हो और बाग़ में अपनी तरफ़ से तुझे भेंट करता हूँ। ग़ुलाम ने कहा हे मेरे आक़ा जिस ज़ात के लिए तू ने मुझे आज़ाद किया उसी की राह में मैं यह बाग़ भेंट करता हूँ।

(तारीख़ मदीना दमिशक़ अज़ इब्ने असाकिर, भाग 13 पृष्ठ 246 दारुल फ़िकर बैरून लुबनान 1995 ई.)

ख़िदमत-ए-ख़लक़

एक मर्तबा एक आदमी हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्ह के पास गया और अपनी आवश्यकता के लिए उनसे सहायता मांगी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो एतेकाफ़ में थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अगर मैं मोतकिफ़ न होता तो ज़रूर तेरे साथ निकलता और तेरी आवश्यकता पूरी करता। यहां से उत्तर पाकर वह हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो भी मोतकिफ़ थे परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एतेकाफ़ से निकल कर उसकी हाजत पूरी कर दी। कुछ लोगों ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्ह के कथन का वर्णन किया (यानी हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्ह ने तो इस व्यक्ति से एतेकाफ़ का बहाना किया था) आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया, ख़ुदा की राह में किसी भाई की हाजत पूरी कर देना मेरे नज़दीक एक महीना के एतेकाफ़ से बेहतर है।

एक दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो तवाफ़ कर रहे थे, उसी हालत में एक व्यक्ति ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी आवश्यकता के लिए साथ ले जाना चाहा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो तवाफ़ छोड़ कर इसके साथ चले गए और जब उसकी आवश्यकता पूरी करके वापस आए तो किसी हसद करने वाले ने एतराज़ किया कि अबू मुहम्मद! तू ने तवाफ़ छोड़ दिया और अमुक आदमी के साथ चला गया? हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया। मैं इसके साथ क्यों नहीं जाता जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि जो व्यक्ति अपने मुस्लमान भाई की आवश्यकता पूरी करने के लिए जाता है और उसकी आवश्यकता पूरी हो जाती है तो जाने वाले को एक हज और एक उमरा का सवाब मिलता है और अगर नहीं पूरी होती तो भी एक उमरा का, अतः मैंने एक हज और एक उमरा का सवाब हासिल किया और फिर वापस आकर तवाफ़ भी पूरा किया। (तारीख़ मदीना दमिशक़ अज़ इब्ने असाकिर, भाग 13 पृष्ठ 247 दारुल फ़िकर बेरूत लुबनान 1995 ई.)

हिलम और बुर्दबारी (धैर्य और सहनशीलता)

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक व्यक्ति शाम से मदीना में आया और वर्णन किया कि एक नाज़ुक इंदाम सवार अरबी राह-रो पर सवार हुए चला जाता था मैंने अपनी उम्र-भर में कोई ऐसा ख़ूबसूरत सवार नहीं देखा था उसकी निराली चाल मेरे दिल को अपनी तरफ़ मायल ही नहीं करती थी बल्कि उस की घोड़ी की टापें मेरी रूह को घायल करती चली जाती थीं। जब मैंने लोगों से पूछा यह व्यक्ति कौन है, कहा हसन रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु। मुझे इन दोनों का नाम सुनते ही ग़ुस्सा भर आया और हसद के शोले ने पांव से सिर तक जलाकर राख कर दिया कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु का पुत्र ऐसा हो गया। मैं वहां से लपका और राह में उनके घोड़े की बाग पकड़ कर कहा हे सवार तू अली रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटा है। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हाँ। अतः मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत ही बुरी बुरी बातें सुनाई। मगर वाह-रे तहम्मुल जब तक मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा कहता रहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो चुपके खड़े सुनते यहाँ तक कि मैं ख़ुद ही शर्मिंदा हुआ। इसलिए जब मैं बात पूरी कर चुका तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हंसकर फ़रमाया शायद तू यात्री है और शाम से चला ही आता है। मैंने कहा जी हाँ। फ़रमाया मेरे साथ घर चलो ताकि तेरी मेहमान-नवाज़ी में व्यस्त हूँ। तुझको कुछ माल दूं और तेरी हाजत पूरी करूँ। मैं यह सुनकर अत्यन्त ही शर्मिंदा हुआ। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अहसान और स्वभाव से बेहद मुतअज्जिब हुआ। इस कलाम ने मेरे दिल को ऐसा बेचैन कर दिया कि रोक न सका और बे-इख़्तियार आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत कर ली। फिर मैं उस वक़्त से प्रत्येक चीज़ से ज़ायद आपसे मुहब्बत करने लगा ।(सआदत लिलकोनैन फ़ी फ़ज़ायल हुसैन, लेखक मुफ़्ती मुहम्मद किरामुद्दीन पृष्ठ 84 कादरी रिज़वी कुतुब ख़ाना लाहौर 2010 ई.)

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का अफ़ू व दरगुज़र (क्षमादान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं : "कहते हैं कि इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक नौकर चाय की प्याली लाया। जब क़रीब आया तो ग़फ़लत से वह प्याली आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सिर पर गिर पड़ी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तकलीफ़ महसूस करके ज़रा तेज़ नज़र से ग़ुलाम की तरफ़ देखा। ग़ुलाम ने आहिस्ता से पढ़ा। الْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ (आले इमरान : 135) यह सुन कर इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया كَظَمْتُ ग़ुलाम ने फिर कहा وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ (आले इमरान : 135) कज़म में इन्सान ग़ुस्सा दबा लेता है और इज़हार नहीं करता है, परन्तु अंदर से पूरी रजामंदी नहीं होती, इस लिए अफ़ु की शर्त लगादी है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं ने अफ़ू किया। फिर पढ़ा وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ महबूब इलाही वही होते हैं जो कज़म और अफ़व के बाद नेकी भी करते हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जा तुम्हें आज़ाद भी किया। रास्तबाज़ों के नमूने ऐसे हैं कि चाय की प्याली गिरा कर आज़ाद हुआ। अब बताओ कि यह नमूना उसूल की उम्दगी ही से पैदा हुआ।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 115 मुद्रित रब्वाह)

सीरत हस्न और हुसैन के आईना में जमाअती प्रगतियां

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं : " हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अल्लाह तआला ने नयमित बताया कि जमाअत अहमदिया को भी वैसी ही क़ुर्बानियां करनी पड़ेंगी जैसे पहले अम्बिया की जमाअतों को करनी पढ़ीं। इसलिए एक दफ़ा आपने स्वप्न में देखा कि मैं निज़ामुद्दीन के घर में दाख़िल हुआ हूँ। निज़ामुद्दीन के माने हैं "दीन का निज़ाम" और इस स्वप्न का मतलब यह है कि आख़िर अहमदिया जमाअत एक दिन निज़ामुद्दीन बन जाएगी और दुनिया के और समस्त निज़ामों पर ग़ालिब आजाएगी। मगर यह ग़लबा किस तरह होगा। इसके विषय में स्वप्न में आप फ़रमाते हैं हम इस घर में कुछ हसनी तरीक़ पर दाख़िल होंगे और कुछ हुसैनी तरीक़ पर दाख़िल होंगे। (तज़करह, ऐडीशन पृष्ठ 789-788) ये सब लोग जानते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कामयाबी हासिल की वह सुलह से की और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्ह ने जो कामयाबी हासिल की वे शहादत से हासिल की। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि निज़ामुद्दीन के मुक़ाम पर जमाअत पहुँचेगी तो सही परन्तु कुछ सुलह मुहब्बत और प्यार से और कुछ शहादतों और क़ुर्बानियों के ज़रीया। अगर हम में से कोई व्यक्ति यह समझता है कि बग़ैर सुलह और मुहब्बत और प्यार के यह सिलसिला तरक़्क़ी करेगा तो वह भी ग़लती करता है। और अगर कोई व्यक्ति यह समझता है कि बग़ैर क़ुर्बानियों और शहादतों के यह सिलसिला तरक़्क़ी करेगा तो वह भी ग़लती करता है। हमें कभी सुलह और आश्ती की तरफ़ जाना पड़ेगा और कभी हुसैनी तरीक़ इख़्तियार करना पड़ेगा जिसके माने ये हैं कि हमने दुश्मन के सामने मर जाना है परन्तु उस की बात नहीं माननी। ये दोनों तरीक़ हमारे लिए मुक़द्दर हैं। ना ख़ाली मसीहीयत वाला सुलूक हमारे लिए मुक़द्दर है न ख़ाली महदूयित वाला सुलूक हमारे लिए मुक़द्दर है। एक मध्य का रास्ता है जिस पर हमें चलना पड़ेगा। एक ग़लबा होगा सुलह और मुहब्बत और प्यार के साथ और एक ग़लबा होगा क़ुर्बानियों के साथ। इसके बाद जमाअत निज़ामुद्दीन के घर में दाख़िल होगी और उसे कामयाबी हासिल होगी।" (तफ़सीर कबीर, भाग 7 पृष्ठ 583)

★ ★ ★

सीरत हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब को इलहाम-ए-इलाही में कमरुल अम्बिया क़रार दिया गया। 20 अप्रैल 1893 ई. आपकी जन्म की तारीख़ है और 2 सितंबर 1963 ई. देहांत का दिन है। इस क़रीबन पोन सदी में आपने अम्बिया अलैहिस्सलाम की अज़मत के क़ियाम और उनके नूरों की पैरवी और इशाअत के ज़रीया और मुसीबत ज़दा इन्सानों के लिए ठंडी चांदनी की कैफ़ीयत पैदा करके वाक़ई अपना कमरुल अम्बिया होना साबित कर दिया।

कमरुल अम्बिया के यह माने हैं कि वह नबियों से नूर हासिल करने वाला होगा। उनकी अज़मत और सिफ़ात को फैलाने वाला होगा और उनकी रोशनी में ज़िंदगी बसर करने वाला होगा इसलिए ऐसा ही हुआ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु में तक़्वा बहुत से पहलूओं से नुमायां थी विनम्रता, दिखावे से पूर्णता इजतेनाब। ख़ुद-पसंदी से कोसों दूर, खाने पीने, लिबास और रिहाइश में एक दिलकश सादगी इख़्तियार करना। दुनयावी ज़िंदगी को केवल आख़िरत की सवारी के तौर पर इस्तिमाल करना और उसे दीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ करना, तकालीफ़ को ख़ुशी से बर्दाश्त करना, सब्रो इस्तक़लाल का आला नमूना दिखाना। हमदर्दी ख़लायक़ से मामूर होना, याद-ए-इलाही को ग़िज़ा बनाना और मुहब्बत इलाही से सरशार रहना। यह सब तक़्वा अल्लाह के करिश्मे थे जो आप में ज़ाहिर होते थे।

हज़रत मियां साहिब की पवित्र जीवनी के अध्यन से यह सच्चाई अच्छी तरह आशकार हो जाती है कि हज़रत मियां साहिब ने अपनी ज़िंदगी का एक-एक लम्हा और समस्त ख़ुदादाद इस्तिदादें ख़िदमत-ए-दीन के लिए वक़्फ़ कर रखी थीं। आपने अपनी समस्त ख़ुदादाद इस्तिदादों को ख़िदमत दीन में लगा दिया था। आपकी दीनी ख़िदमात अपने अंदर बहुत विविधता रखती हैं। इलमी तौर पर बीसियों कुतुब और रिसाले जो बेशक़ीमत रुहानी और अदबी जवाहर पारों पर आधारित हैं आपके क़लम की लेखनी हैं। जमाअत की तालीम-ओ-तर्बीयत के लिए अख़बार में छोटे छोटे मज़ामीन का सिलसिला भी बाक़ायदा जारी रहता। नवा जवान वर्ग और जमाअत को इन्फेरादी और मजमूई दोनों तरीक़ से ख़िदमत दीन और विशेषता क़लमी ख़िदमत पर उभारते रहते और अपनी क़ीमती हिदायात से नवाज़ते रहते। हर व्यक्ति के हालात में ज़ाती दिलचस्पी लेकर ऐसी शफ़क़त और मुहब्बत का मुज़ाहरा फ़रमाते कि वह ग़ुलाम बे-दाम हो जाता। उद्देश्य आपने अपनी समस्त इस्तेदादों और अपने समस्त औक़ात को दीन और मुल्क-ओ-मिल्लत की प्रत्येक किस्म की ख़िदमात और मख़्लूक़-ए-ख़ुदा की हमदर्दी में लगा दिया।

जिस रंग में आप खासतौर पर नौजवानों के लिए ख़िदमत दीन और वक़्फ़-ए-ज़िंदगी की एक जीती-जागती तस्वीर थे बावजूद जस्मानी तकालीफ़ और बीमारी के वालेहाना रंग में आप ख़िदमत में व्यस्त रहते वे आने वाली और मौजूदा नसलों के लिए एक काबिल तक़लीद मिसाल है। तर्बीयत के विषय में हज़रत मियां साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ज़्यादा-तर जमाली अंदाज़ तर्बीयत के मज़हर थे। कमरुल अम्बिया के भाषणों में भी इस तरफ़ इशारा है।

मुहब्बत-ए-इलाही का एक अंदाज़ (बिसमिल्लाह लिखने एहतिमाम - प्रत्येक काम अल्लाह के नाम से शुरू करना)

श्रीमान मुख़तार अहमद हाश्मी साहिब कारकुन नज़ारत ख़िदमत दरवेशान तहरीर फ़रमाते हैं : एक मर्तबा में हज़रत मियां साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर दफ़्तर की डाक लेकर हाज़िर हुआ। आपने काम के इख़्ततताम पर फ़रमाया कि मेरे क़लम का निब ख़राब हो गया है आप मुझे बाज़ार से कोई अच्छा सा क़लम ख़रीद कर ला दें। इसलिए मैं बाज़ार से दो तीन नमूने लेकर हाज़िर हुआ। आपने एक काग़ज़ पर बारी-बारी प्रत्येक क़लम से कुछ लिखा और अंततः एक क़लम पसंद फ़र्मा लिया। आपने मुझे इस क़लम की लिखाई भी दिखाई। जब मैंने काग़ज़ देखा तो इस पर कई मर्तबा बिसमिल्लाह लिखा हुआ था। आपने फ़रमाया कि मैंने जब कभी नया क़लम ख़रीदा है तो इस से पहले "बिसमिल्लाह" ही लिखा है। जब क़लम का पत्र और रवानी देखने के लिए कुछ लिखना ही है तो बजाय कुछ और लिखने या यूंही लकीरें डालने की बजाय क्या यह बेहतर नहीं कि उसे अल्लाह के नाम से शुरू किया जाए। इसी तरह क़ाफ़िला क़ादियान के सिलसिला में जो पत्र सरकारी दफ़ातिर को अंग्रेज़ी में भिजवाए जाते उनके बारे में आपने दफ़्तर को मुस्तक़िल हिदायत दे रखी थी कि उसकी इब्तिदा में बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम लिखा जाए और जहां सम्बोधन किया जाए वहां अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू लिखा जाए। इसलिए दफ़्तर की तरफ़ से उसकी पूरी पाबंदी की जाती रही।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ :

एक मर्तबा हज़रत मियां साहिब ने मुझे एक मुसव्वदा लिखने को दिया इस में एक वाक्य यह भी था कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मैंने जल्दी में सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लिखने की बजाय केवल सल्लम लिख दिया। दस्तख़त करते वक़्त फ़रमाया कि "सल्लम" लिखना न पसंद है जब इतनी तवील-ओ-अरीज़ इबारतें लिखी जा सकती हैं तो केवल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम के साथ ही कमी का ख़्याल आजाता है फिर अपने क़लम से सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लिख दिया। इसके बाद मैंने फिर कभी सल्लम नहीं लिखा। इस अवसर पर आपने मज़ीद फ़रमाया कि मुझे अंग्रेज़ी में मुहम्मद का शोर्ट mohd भी सख़्त नापसंद है और मुझे mohd लिखा हुआ देखकर हमेशा अफ़सोस और दुःख पहुंचा है न मालूम किस ने यह अनुचित ईजाद की और तख़फ़ीफ़ का सारा ज़ोर केवल मुहम्मद के नाम पर ही खर्च कर डाला है ।

एक दफ़ा हज़रत मियां साहिब ने बैरून-ए-पाकिस्तान के मुबल्लेगीन को दफ़्तर के मुद्रित पेड की बजाय सफ़ैद काग़ज़ पर पत्र लिखवाए मैंने उनकी इब्तिदा में बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम वस्स्लातों

वस्सलाम अला अबदेहिल मसीह मौऊद लिख दिया। दस्तख़त करते हुए फ़रमाया आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सलात और सलाम दो चीज़ें लिखी हैं और हज़रत रसूले करीम के साथ केवल अस्सलात। यह तरीक़ दरुस्त नहीं। वह आक़ा है और यह ग़ुलाम इस मुक़ाम पर वाला अब्देहिल मसीह मौऊद काफ़ी है। जबकि अगर कहीं अलग लिखना होतो वस्सलातों वस्लामों लिखने में हर्ज नहीं ।

हज़रत अमीरुल मौमेनीं से प्रेम

मुख़तार हाश्मी साहिब वर्णन हैं : जब आपने अपना ज़ाती मकान "अल् बुशरा" तामीर किया और आप सदर अंजुमन अहमदिया का घर छोड़ कर वहां तशरीफ़ ले जाने लगे तो उस वक़्त फ़रमाया "मेरा दिल चाहता है कि मैं इसी मकान में रहूं यहां हम हज़रत साहिब के करीब में बैठे हैं वहां दूर हो जाएंगे यह एक छोटा सा फ़िक़रा है परन्तु इस से अंदाज़ा किया जा सकता है कि हज़रत मियां साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन से यह थोड़ी सी घर की दूरी भी कितना कठिन मालूम होती थी।

जीवनी की कुछ घटनाएँ

एक मशहूर बात थी कि कमरुल अम्बिया हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब का दरवाज़ा गरीबों और मिस्कीनों के लिए हर वक़त खुला रहता था। बहुत से ग़रीब विद्यार्थी किताबों और फ़ीस के लिए अपनी दरख़ास्तें आपकी ख़िदमत में पेश करने के लिए आपके पास पहुंच जाते थे और आप प्रत्येक तालिब-इल्म की जहाँ तक सम्भव हो सके सहायता करते थे।

पाकिस्तान में क़ादियान के दरवेशों के परिजनों के लिए आपका वजूद बाप समान था। अगर किसी दरवेश के बच्चों में से कोई आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपनी किसी मुश्किल को पेश करता तो आपका दिल उस की मुसीबत को देखकर पिघल जाता था और आप उसकी मुश्किल का हल भी तलाश करते थे और उस के लिए दुआ भी करते थे जिससे उस ग़रीब की हिम्मत बंध जाती थी।

हज़रत कमरुल अम्बिया और वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी

मुहतरम मौलाना मुहम्मद मुनव्वर साहिब मुबल्लिग़ अफ़्रीक़ा तहरीर करते हैं कि नवंबर 1952 ई. में जब विनीत छुट्टी पर पाकिस्तान गया तो संयोग से मस्जिद मुबारक रब्वाह के क़रीब ही हज़रत मियां साहिब से मुलाक़ात हो गई और मुसाफ़ा का शरफ़ हासिल हुआ तथा अर्ज़ किया कि मैं पूरबी अफ़्रीक़ा में चार साल फ़रीज़ा तब्लीग़ अदा करने के बाद वापस आया हूँ। यह सुनते ही हज़रत मियां साहिब ने मुझे गले लगाया और ख़ैरीयत दरयाफ़त फ़रमाई। इस गले लगाने का जो आनंद मुझे उस वक़्त आया वर्णन से बाहर है शायद हज़रत मियां साहिब मुझे ज़ाती तौर पर नहीं जानते थे। न ही मेरे पूर्वजों की कोई बड़ी दीनी ख़िदमात थीं जिनकी वजह से वह से मुझे पहचान सकते और न ही हज़रत मियां साहिब की यह आदत थी कि यूंही सड़कों पर लोगों से गले मिलते फिरें। मुझे भी उनके रोब की वजह से गले लगाने में पहल करने का साहस नहीं हुआ लेकिन केवल यह सुनने पर कि मैंने कुछ साल अफ़्रीक़ा में इशाअत दीन का काम किया है। आपने हौसला-अफ़ज़ाई फ़रमाते हुए इस रंग में अल्लाह की मुहब्बत का इज़हार किया कि अब यह मुहब्बत मेरे लिए जीवन की संपत्ति बन गई है। दीन के प्रचार के लिए प्रयास करने वाले समस्त ख़ुद्दाम से हमारे प्यारे मियां साहिब को ख़ास मुहब्बत थी और उन के लिए वह हमेशा दुआएं किया करते थे।

फिर आदरणीय मौलाना मुहम्मद मुनव्वर साहिब तहरीर करते हैं अगस्त 1960 ई. में जब विनीत आठ साल के बाद फिर रब्वाह वापस गया तो हज़रत-ए-अक़दस ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का हाथ चूमने के बाद हज़रत मियां साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भी मुलाकात के लिए हाज़िर हुआ। उनके ख़ादिम श्रीमान मुहम्मद शरीफ़ साहिब आफ़ देरोवाल ने अंदर इत्तिला दी और पैग़ाम लाए कि हज़रत की तबीयत न-साज़ है इस लिए आज नहीं मिल सकेंगे। मैं वापस लौट गया। अभी चार ही क़दम उठाए होंगे कि दूसरा ख़ादिम भागा-भागा आया और कहा कि हज़रत मियां साहिब याद फ़रमाते हैं। मेरी ख़ुशी की इंतिहा न रही। अंदर गया तो क्या देखता हूँ कि हज़रत मियां साहिब पलंग पर लेटे हुए हैं रंग ज़र्द था। चेहरा थकान और बेचैनी स्पष्ट। अपने पास ही बिस्तर पर बैठने का इशारा किया फिर फ़रमाया "रात उम्मे मुज़फ़्फ़र को चोट आ जाने की वजह से बे-ख़्वाबी रही है उनकी बेचैनी की वजह से मैं भी नहीं सो सका।अब कमज़ोरी भी है और घबराहट भी। ये शब्द सुनकर मुझे सख़्त शर्मिंदगी हुई कि हज़रत मियां साहिब के लिए तकलीफ़ का बायस बना लेकिन इस हादिसा का विनीत को पुर्णतः ज्ञान नहीं था बाद में "अल्-फ़ज़ल" से मालूम हुआ कि ग़ुस्ल-ख़ाने में पांव फिसल जाने की वजह से हड्डी टूट गई है। अल्लाह अल्लाह मेरी दिल-शिकनी का आपको इसकदर एहसास था कि अपनी तकलीफ़ को भूल गए हालाँकि अगर उस वक़्त मुलाक़ात नहीं होती तो मुझे आपके घर पर दस बार जाने में भी कोई दिक़्क़त और कठिनाई नहीं थी फिर जब विनीत ने नज़राना पेश किया तो यह कह कर लौटा दिया कि आप दीन के ख़ादिम में हैं इसे अपने पास रखें।

उर्दू के महान कवि, गद्य लेखक

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलम-ए-कलाम से फ़ैज़ पाने वाली जमाअत ने ऐसे साहब-ए-तर्ज़ अहले क़लम पैदा किए जिन्हों ने इस मैदान में पुर्णतः ख़िदमात सरअंजाम दीं इन चोटी के चंद नामों में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु का वजूद मुबारक भी है जिन्होंने अपने पीछे उर्दू नस्र में एक वसीअ ज़िंदा जावेद लिटरेचर का सरमाया छोड़ा आपके कलम से "जीवनी ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" ऐसी तारीख़ी शाहकार और अन्य असंख्य काबिल-ए-क़दर कुतुब का इज़ाफ़ा उर्दू भाषा में हुआ। हज़रत मियां साहिब को अल्लाह तआला ने एक अलग असूल वर्णन अता फ़रमाया। निसंदेह आपकी कविता को एक ऐसे चमन से उपमा दी जा सकती है जिसमें अलग अलग रंगों के फूल खिले हों सरल और उच्चकोटि का वर्णन करने का अंदाज़ जिस पर फ़साहत-ओ-बलाग़त क़ुर्बान, लफ़्ज़ों की ख़ूबसूरत तराश, पसंदीदा तराकीब, इसतेआरात और तशबीहात का बा सलीक़ा इस्तिमाल आपकी नस्र के गौरव का स्थान क़रार दिए जा सकते हैं।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक के देहांत का समय है। जमाअत पर मानों एक पहाड़ टूट पड़ा। इस नाज़ुक अवसर पर लोगों जमाअत के की भावनाओं का अनुवाद इन शब्द में फ़रमाते हैं :

"इस ख़बर ने जमाअत को गोया ग़म से दीवाना कर दिया और दुनिया उनकी नज़र में अंधेर हो गई और गौहर दिल-ए-ग़म से फटा जाता था और प्रत्येक आँख अपने महबूब की जुदाई में अशकबार थी और हर सीना सोरिश हिज्र से जल रहा था।"

एहसासात की दुनिया का ताल्लुक़ तीन ही चीज़ों से है दिल, आँख और सीना। आपने तीनों की कैफ़ीयत किस उम्दा परन्तु संक्षिप्त रूप में वर्णन फ़र्मा दी है। फिर फ़रमाते हैं :

"लोगों में से अक्सर ऐसे थे जो बच्चों की तरह बिल्क बिल्क कर रोते थे और कुछ तो इस बात को समझने के लिए तैयार नहीं थे कि उनका प्यारा इमाम उनका महबूब आक़ा, उनकी आँखों का नूर, उनके दिल का सरूर, उनकी ज़िंदगी का सहारा। उनकी हस्ती का चमकता हुआ सितारा उनसे वाक़ई जुदा हो गया है।"

"प्यारा इमाम" "महबूब आक़ा" "रंगों का नूर" "दिल का सरूर" "ज़िंदगी का सहारा" "हस्ती का चमकता हुआ सितारा" ये सब शब्द आप की इस गहरी मुहब्बत के इज़हार के लिए जो अपने इमाम से जमाअत को थी और है किस दर्द से लाते हैं और उनके अवसर के अनुसर प्रयोग से किस क़दर रवानी और ज़ोर, कलाम में पैदा हो गया है।

फिर उसी नज़्ज़ारे के दूसरे पहलू को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात की ख़बर मुख़ालिफ़ों तक पहुंची तो ... उन लोगों ने हमारे सामने खड़े हो कर ख़ुशी के गीत गाए और ख़ुशी के नाच नाचे और शादमानी के नारे लगाए और फ़र्ज़ी जनाज़े बना बनाकर नुमाइशी मातम के जलूस निकाले।"

इन शब्दों से इस नज़्ज़ारे की बिल्कुल सही तस्वीर पढ़ने वाले के ज़हन में नक़्श हो जाती है और यही एक अच्छे अदीब का कमाल है।

फिर जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं : "हमारी ग़म-ज़दा आँखों ने इन नज़ारों को देखा और हमारे घायल दिल सीनों के अंदर ख़ून हो हो कर रह गए परन्तु हमने उनके इस ज़ुलम पर सब्र से काम लिया ... हम अपनी आने वाली नसलों को

शेष पृष्ठ 10 पर

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आंहज़रत[स.अ.व.] का सच्चे हृदय से अनुसरण करना तथा आप[स.] से प्रेम रखना अन्ततः मनुष्य को ख़ुदा का प्रिय बना देता है

"अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से सम्बद्ध किया है कि ऐसा व्यक्ति आंहज़रत[स.अ.व.] का अनुसरण करे। अतः मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आंहज़रत[स.अ.व.] का सच्चे हृदय से अनुसरण करना तथा आप[स.] से प्रेम रखना अन्ततः मनुष्य को ख़ुदा का प्रिय बना देता है, इस प्रकार से स्वयं उसके हृदय में ख़ुदा के प्रेम की एक जलन पैदा कर देता है। तब ऐसा व्यक्ति प्रत्येक वस्तु से उचाट होकर ख़ुदा की ओर झुक जाता है तथा उसका प्रेम एवं रुचि केवल ख़ुदा तआला से शेष रह जाती है। तब ख़ुदा के प्रेम की एक विशेष झलक उस पर पड़ती है तथा उसको प्रेम और अनुराग का एक पूर्ण रंग देकर दृढ़ भावना के साथ अपनी ओर खींच लेती है तब कामभावनाओं पर वह विजयी हो जाता है और उसके समर्थन एवं सहायता में प्रत्येक पहलू से ख़ुदा तआला के विलक्षण कार्य निशानों के रूप में प्रकट होते हैं।"

(रुहानी ख़ज़ायन , भाग 22 हकीकतुल वह्यी, पृष्ठ 66)

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम विनम्रता और प्रताप दोने के संग्रह थे

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम विनम्रता और प्रताप दोने के संग्रह थे। मक्का का जीवन जमाली रूप में था और मदीना का जीवन जलाली रूप में था और फिर यह दोनों विशेषताएं उम्मत के लिए इस प्रकार बांटी गई कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को जलाली रूप में जीवन प्रदान हुआ और जमाली रूप के जीवन के लिए मसीह मौऊद को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का द्योतक ठहराया।

(रुहानी ख़ज़ायन , भाग 17 अरबईन न 4, पृष्ठ 13)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इसलिए इसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 03का शेष

रखने वाला है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह तआला इस आयत की तशरीह में फ़रमाते हैं :

इस उपमा में ज़ैतून के तेल का वर्णन है। ज़ैतून के तेल को जलाया जाए तो इस से रोशनी तो पैदा होती है लेकिन धुआं नहीं उठता। لَا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ का अर्थ है कि अल्लाह का नूर न पूरब के लिए ख़ास है और न पश्चिम के लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इस तमसील के मिस्दाक़ के तौर पर पूरब और पश्चिम दोनों के इकलोते रसूल हैं और यही नूर है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो को भी अता हुआ। अर्थात् रसूलुल्लाह ने इस नूर को केवल अपने तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे आम फ़रमाया। इसलिए अगली आयत में इसी का वर्णन है कि वह नूर साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के घरों में भी चमकता है। सितारों की मिसाल इस लिए दी कि उनका नूर दूर दूर से दिखाई देता है। इसी तरह रसूलुल्लाह का और सहाबा का नूर भी दूर दूर से दिखाई देगा। मिश्कात उस सुरक्षित स्थान को कहते हैं जिस में चिराग़ रखा जाता है। उस लैम्प की रोशनी शीशे से निकल कर केवल इस मिशकात को रोशन नहीं करती जिसमें वह नूर है बल्कि बाहर भी रोशन होती है। लैम्प के गर्द जो शीशा होता है इस के दो उद्देश्य हैं। प्रथम यह कि शीशा हो तो फिर लैम्प में से धुआं नहीं निकलता। दूसरे उस की रोशनी ज़्यादा चमक के साथ बाहर निकलती और फैलती है।

(तर्जुमतुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह तआला)

★ ★ ★

पृष्ठ 03का शेष

ओ-तन्क़ीस। छोटी से छोटी नेअमत को भी बड़ा ज़ाहिर फ़रमाते। शुक्रगुज़ारी का रंग नुमायां था। किसी चीज़ की निन्दा नहीं करते। न इतनी तारीफ़ जैसे वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बेहद पसंद हो। मज़े-दार या बदमज़ा होने के लिहाज़ से खाने पीने की चीज़ों की तारीफ़ या निंदा में ज़मीन-ओ-आसमान के कुलाबे मिलाना आपकी आदत नहीं थी। हमेशा मध्य वर्गीय व्यवहार था। किसी संसारिक विषय की वजह से न गुस्से होते न बुरा मनाते। लेकिन अगर हक़ की बे-हुरमती होती या हक़ ग़सब कर लिया जाता तो फिर आपके गुस्से के सामने कोई नहीं ठहर सकता था। जब तक उस का निवारण नहीं हो जाता आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को चैन नहीं आता था। अपनी ज़ात के लिए कभी गुस्से नहीं होते और न इस के लिए बदला लेते। जब इशारा करते तो पूरे हाथ से करते केवल ऊँगली नहीं हिलाते। जब आप ताज्जुब का इज़हार करते तो हाथ को उलटा देते। जब किसी बात पर खासतौर पर-ज़ोर देना होता तो एक हाथ को दूसरे हाथ से इस तरह मिलाते कि दाएं हाथ की हथेली पर बाएं हाथ के अंगूठे को मारते। जब किसी नापसंदीदा बात को देखते तो मुँह फेर लेते। और जब ख़ुश होते तो आँख किसी क़दर बंद कर लेते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़्यादा से ज़्यादा हंसी खुले तबस्सुम की हद तक होती अर्थात् ज़ोर का क़हक़हा नहीं लगाते। हंसी के वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दांत मुबारक ऐसे नज़र आते थे जैसे बादल से गिरने वाले सफ़ैद सफ़ैद ओले होते हैं।

(शुमायल तिरमिज़ी, बाब कैफ़ा काना कलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बहवाला हदीकतुस सालेहीन, हदीस नंबर् : 23)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 07-14 July 2022 Issue No.27-28

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 02 का शेष

वालों में एक अज़ीमुश्शान रसूल की आमद की दुआ की थी।

त्रितीय यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आना इसी दुआ का नतीजा था।

अब अगर हम इन तीन बातों को मद्द-ए-नज़र रख कर दुरूद के शब्द पर ग़ौर करें तो बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है और दुरूद में مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ یا كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَكَ के शब्द न केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में किसी किस्म की कमी के मज़हर साबित नहीं होते बल्कि वास्तव में इस बात का सबूत मुहय्या करते हैं कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बुलंद शान और आप की उम्मत की ग़ैरमामूली प्रगित की तरफ़ इशारा करने के लिए दुरूद में दाख़िल किए गए हैं। बात यह है कि ये शब्द कि كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इसी तरह की बरकतें नाज़िल फ़र्मा जिस तरह तू ने इबराहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल कीं इस उद्देश्य के लिए रखे गए हैं कि ताकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस विशेषता की तरफ़ इशारा किया जाए जो उन के निर्माण काबा के वक़्त की दुआ और इस के नतीजा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आने से ताल्लुक़ रखती है। और उद्देश्य यह है कि ई ख़ुदा जिस तरह तू ने इबराहीम की दुआ से इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नसल में एक अज़ीमुश्शान नबी पैदा किया इसी तरह अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में भी ग़ैरमामूली रुहानी कमालात का सिलसिला जारी रख। इस तरह दुरूद में एक अत्यन्त ही लतीफ़ और मुक़द्दस दौर अर्थात् पाइस सर्कल (pious circle) क़ायम कर दिया गया है और ख़ुदा के दामन-ए-रहमत को इस दुआ से हरकत में लाया गया है कि हे ख़ुदा तू मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इसी तरह की ख़ास बरकात नाज़िल फ़र्मा जिस तरह तू ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने के माध्यम इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अपनी ख़ास बरकात नाज़िल फ़रमाइ। मानो كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ जो मिसाल दी गई है वह वास्तव में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के व्यक्तित्व की विशेषताओं से ताल्लुक़ रखती है न कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम केवल इस मिसाल को वाज़िह करने और इस की सच्चाई की तरफ़ इशारा करने के लिए लाया गया है। अतः दुरूद के सही माने यह हुए कि हे ख़ुदा तू मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी वह ख़ास बरकतें नाज़िल फ़र्मा जो तूने मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसे आलीशान नबी की बिअसत के ज़रीया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल कीं। मानों चक्कर लगा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कमालात-ए-रुहानी के ख़ुद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ ही लौट आए और كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ के शब्द में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बरतरी और फ़ौक़ियत का कोई सवाल नहीं रहा क्योंकि जैसा कि मैंने ऊपर तशरीह की है, वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बरकतों की दुआ स्वयं आपकी अपनी ही मिसाल देकर मांगी गई है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम केवल इस मिसाल की तशरीह के लिए लाया गया है। अब देखो कि यह कैसा मुबारक चक्कर है जो दुरूद में क़ायम किया गया है मानो दुरूद की दुआ का सारांश यह बनता है कि ख़ुदाया! मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसल बरकात आपकी ज़ात तक ही महिदूद हो कर न रह जाएं बल्कि उनका सिलसिला क़ियामत तक वसीअ होता चला जाए और आपके रुहानी नेअमतें दुनिया में ज़ाहिर हो-हो कर हमेशा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नूर और रोशनी फैलाते रहे।

अब केवल यह सवाल बाक़ी रह जाता है कि यह दुरूद की दुआ पूरी हुई या नहीं और अगर पूरी हुई तो किस रंग में पूरी हुई। अतः इस का सीधा साधा उत्तर यह है कि न केवल यह कि यह दुआ अपनी मुकम्मल शान में पूरी हुई बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी ख़ुदा की तरफ़ से इस बात का इलम दिया गया था कि हमारी सिखाई हुई दुरूद की दुआ इस इस रंग में पूरी होगी। इसलिए इस दुआ की आम तजल्ली तो यह है कि उम्मत-ए- मुहम्मदिया को बाकमाल औलिया और अदीमुल्मिसाल उल्मा का ग़ैरमामूली विरसा अता किया गया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद फ़रमाते हैं कि :

عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ كَاَنْبِیَاءِ بَنِیْ اِسْرَآئِیْلَ

"अर्थात मेरी उम्मत के रुहानी उल्मा (जिनमें प्रत्येक सदी के मुजद्दिद भी शामिल हैं अपनी शान और रुहानी कमालात में बनी इसराईल के नबियों की तरह होंगे अतः यह जो उम्मत-ए-मोहम्मदिया में हज़ारों बाकमाल औलिया और हज़ारों ख़ुदा रसीदा उल्मा गुज़रे हैं जो अपने-अपने ज़माना में ज़ाहिरी इलम के साथ-साथ ख़ुदाई कलाम से भी मुशर्रफ़ होते रहे हैं और जिनसे इस्लाम के नाम का चप्पा-चप्पा रंगा हुआ नज़र आता है, यह सब उसी दुरूद वाली मुबारक दुआ का करिश्मा हैं।

परन्तु इस आम रुहानी विरसा के इलावा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आपके एक ज़लि्-ए-कामिल और बरुज़े अतम का भी वादा था। जिसके आने का ख़ुद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरी आमद का क़रार दिया गया था। जैसा कि सूरत जुमा के शब्द وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ (अर्थात् आख़िरी ज़माना में ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक प्रतिरूप के द्वारा पुनः अवतरित करेगा में बताया गया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने يُدْفَنُ مَعِيَ فِيْ قَبْرِيْ...(अर्थात् आने वाला मुस्लेह अपनी वफ़ात के बाद अपने रुहानी मुक़ाम के लिहाज़ से मेरे साथ ही रखा जाएगा) के शब्द में इस की तरफ़ इशारा किया है। अतः यह वादा भी हज़रत मसीह मौऊद महदी माहूद अलैहिस्सलाम के वजूद में पूरा हो गया। गोया जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के परिणाम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पैदा हुए इसी तरह كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ की दुआ की तकमील के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुबारा दुनिया में तशरीफ़ ले आए। और अभी न मालूम क़ियामत तक आपके किन-किन और रुहानी अज़्लाल ने आसमानी हिदायत पर अवतरित कर के दुरूद वाली दुआ को पूरा करना है। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ۔।

सारांश यह कि दुरूद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल वर्णन करने से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के किसी ज़ाती कमाल की तरफ़ इशारा करना उद्देश्य नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दुआ की तरफ़ इशारा करना उद्देश्य है जिसके आने में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद स्वयं प्रकट में आया और उद्देश्य यह है कि जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बाबरकत वजूद पैदा हुआ इसी तरह अब हे ख़ुदा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रुहानी अज़्लाल का सिलसिला भी क़ियामत तक जारी रहे और इस ज़रीया से एक ऐसा मुक़द्दस युग क़ायम हो जाएगी जो तेरे आख़री नूर के ज़रीया दुनिया में हमेशा उजाला रखे। इस नुक्ता के हल होने के बाद मेरी रूह كما صليت على ابراهيم के शब्द पर रुकने और झटका खाने की बजाय एक ख़ास किस्म के रुहानी सरूर और एक ख़ास किस्म के रुहानी आनंद की हालत में तस्बीह करती हुई आगे निकल जाती है। और उन चमकते हुए आसमानी सितारों और इस दरख़शां ज़िल्ली सूरज और चाँद का नज़ारा करने में जिन से आज इस्लाम की फ़िज़ा मुज़य्यन है, एक ऐसा लुतफ़ महसूस करती है जो इस से पहले कभी मयस्सर नहीं आया था।

اللهم صل على محمد كما صليت على ابراهيم وبارك وسلم۔
اللهم صل على محمد كما صليت على ابراهيم وبارك وسلم۔
اللهم صل على محمدٍ كما صليت على ابراهيم وبارك وسلم۔
واٰخر دعوٰنا ان الحمد لله رب العلمين۔

(मज़ामीन बशीर भाग 2, पृष्ठ 298 मुद्रित 2011ई.)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad